1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI. No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष-4, अंक-1, अगस्त-सितम्बर 2020 ₹ 25/-

# कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

"वाकणकर जी ने भीमबैठका की खोज की, मैने वहाँ ऐसी चट्टान को खोजा जो वाकणकर जी की मुखाकृति के सदृश्य है"

– डॉ. नारायण व्यास

पुरातत्वविद् डॉ. नारायण व्यास केन्द्रित विशेषांक

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

''इस पॉलिसी में निवेश पोर्टफोलियो में निवेश का जोखिम पॉलिसीधारक द्वारा वहन किया जायेगा''

सबसे पहले लाइफ इंश्योरेंस

ऑनलाइन भी उपलब्ध

# एक सीप - दो फायदे
# बचत भी : सुरक्षा भी

एलआईसी की

# सीप

योजना सं.: 852 UIN 512L334V01

## यूनिट लिंक्ड, असहभागी, व्यक्तिगत जीवन बीमा योजना

### चुनने की आजादी:

**बचत धनराशि:**
आपकी बचत रु. 4000/– प्रति माह या रु. 40000/– प्रति वर्ष से शुरू हो कर जीवन के बड़े लक्ष्यों के लिए उससे अधिक हो सकती है।

**4 फंड विकल्प:**
आप बांड, सुरक्षित, संतुलित एवं वृद्धि में से कोई भी विकल्प चुन सकते हैं।

**नि:शुल्क फंड परिवर्तन:**
आप अपना धन वर्ष में चार बार नि:शुल्क एक फंड से दूसरे फंड में परिवर्तित कर सकते हैं।

**आवश्यकता पर निकासी :**
5 वर्ष उपरांत आप आंशिक निकासी कर सकते हैं।*

### पॉलिसी के लाभ:

- जोखिम सुरक्षा उपलब्ध
- गारंटीकृत लाभ: यूनिट फंड वैल्यू के साथ गारंटीकृत लाभ*
- पॉलिसी परिपक्वता: यूनिट फंड वैल्यू

### पात्रता :

**प्रवेश की आयु:**
न्यूनतम आयु: 90 दिन
अधिकतम आयु: 65 वर्ष

**परिपक्वता आयु:**
न्यूनतम आयु: 18 वर्ष
अधिकतम आयु: 85 वर्ष

**पॉलिसी अवधि:** 10 – 25 वर्ष

एसएमएस करें अपने शहर का नाम 56767474 पर

कॉल सेंटर सेवा (022) 6827 6827

डाउनलोड करें एलआईसी मोबाइल एप "MyLIC"

विज़िट करें www.licindia.in पर; हमें फॉलो करें LIC India Forever

*शर्तें लागू : अधिक विवरण के लिए अपने अभिकर्ता/एलआईसी की नजदीकी शाखा से संपर्क करें

भ्रामक/धोखाधड़ी वाले फोन कॉल्स से सावधान
आईआरडीएआई बीमा पॉलिसी विक्रय, बोनस की घोषणा अथवा प्रीमियम निवेश संबंधी गतिविधियों से संबंध नहीं रखता है। ऐसे फोन कॉल्स के प्राप्त होने पर आपसे निवेदन किया जाता है कि तुरन्त पुलिस से शिकायत दर्ज करवायें।

करार के प्रथम पाँच वर्ष में यूनिट से संबद्ध बीमा पॉलिसियां समाप्त नहीं की जा सकती। पाँचवे वर्ष के अंत तक यूनिट से संबद्ध बीमा पॉलिसियों को पॉलिसीधारक न समर्पण कर सकता है और न ही उनमें निवेश किये गए धन को आंशिक या पूर्ण रूप से निकाल सकता है।

नियम व शर्तों की विस्तृत जानकारी के लिए
बिक्री समापन से पूर्व बिक्री-पुस्तिका ध्यानपूर्वक पढ़ लें।

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

हर पल आपके साथ

LIC/AR/19-20/40/HIN

''मध्य क्षेत्र, भोपाल''

1998 से निरंतर प्रकाशित
RNI NO. MPHIN/2017/73838

कला समय पत्रिका अब वेबसाइट पर उपलब्ध
www.kalasamaymagazine.com

ISSN 2581-446X
(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)
( वर्ष : 20+04 ) पूर्णांक-106
वर्ष-4, अंक-1, अगस्त-सितम्बर 2020

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरू सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत

# कला समय

## कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

**संरक्षक**
नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
डॉ. महेन्द्र भानावत
पं. विजय शंकर मिश्र
श्यामसुंदर दुबे
पं. सुरेश तातेड़
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

**परामर्श**
लक्ष्मीनारायण पयोधि
ललित शर्मा
राग तेलंग
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल
डॉ. कुंजन आचार्य
डॉ. देवेन्द्र शर्मा

**सांस्कृतिक प्रतिनिधि**
चेतना श्रीवास
डॉ. वर्षा नालमे
उमेश कुमार पाठक
बंशीधर 'बंधु'
पं. देवेन्द्र वर्मा

**वेबसाइट प्रबंधन**
मयंक अग्रवाल

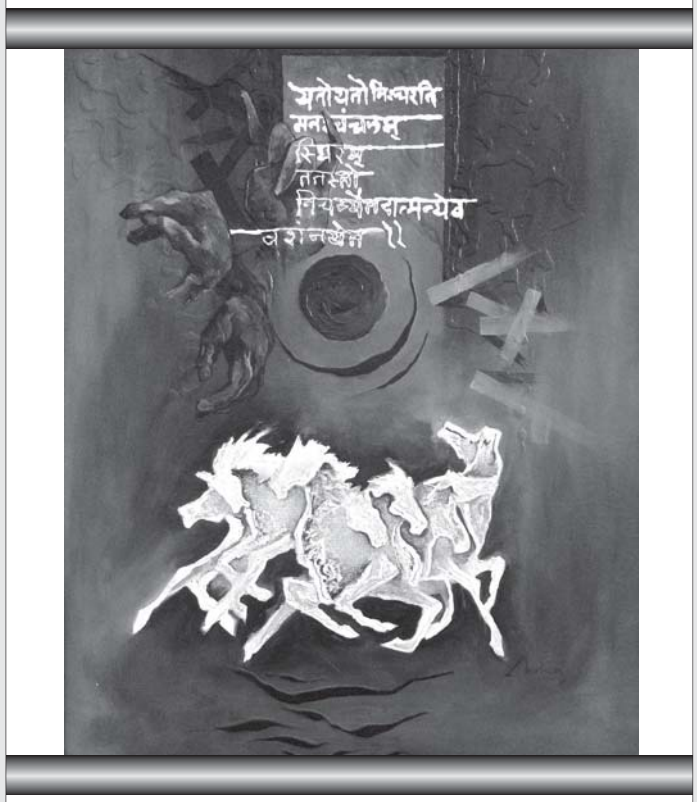

रेखांकन : चेतन औदिच्य

**संपादक**
भँवरलाल श्रीवास
bhanwarlalshrivas@gmail.com
94256 78058

**सह संपादक**
डॉ. मधु भट्ट तैलंग

**उप संपादक**
राहुल श्रीवास

**संपादक मंडल**
रामेश्वर शर्मा 'रामूभैया'
**साहित्य**
हरीश श्रीवास
**कला**
डॉ. मुक्ति पाराशर
**संस्कृति**
नरिन्दर कौर
**प्रबंध**

**कानूनी सलाहकार**
जयंत कुमार मेढ़े (एडवोकेट)

**सदस्यता सहयोग राशि:**

| | | |
|---|---|---|
| वार्षिक | : 150 /- | (व्यक्तिगत) |
| | : 175 /- | (संस्थागत) |
| द्वैवार्षिक | : 300 /- | (व्यक्तिगत) |
| | : 350 /- | (संस्थागत) |
| चार वर्ष | : 500 /- | (व्यक्तिगत) |
| | : 600 /- | (संस्थागत) |
| आजीवन | : 5,000/- | (व्यक्तिगत) |
| (केवल 15 वर्षों के लिए) | : 6,000/- | (संस्थागत) |

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा कला समय के नाम से उक्त पते पर भेजें)

**कार्यालय सम्पर्क :**
**संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग**
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016
फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

**ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :**
**'कला समय' का बैंक खाता विवरण**
ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स की शाखा **( IFSC : ORBC0100932 )** में **KALA SAMAY** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हों। पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे।
सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक/अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस काम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) - 462016 से प्रकाशित। संपादक- भँवरलाल श्रीवास

कला, पुरातत्व, इतिहास के साक्षी विद्वान...

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

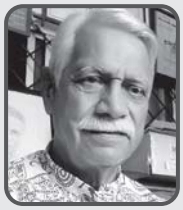
डॉ. नारायण व्यास

डॉ.अखिलेश गुमास्ता

कैलाशचन्द्र पाण्डेय

डॉ. मुकेश कुमार मिश्र

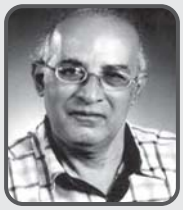
रमेश दवे

भास्कर लक्षकार

सुभाष अत्रे

पं. विजयशंकर मिश्र

राजेन्द्र नागदेव

## विशेष सहयोग

शशिकांत लिमये
भोपाल, ( म.प्र. )

## इस अंक के चित्रकार

चेतन औदिच्य
उदयपुर, ( राज. )

## इस बार


- संपादकीय / 5
  **पुरातत्व में जितना बड़ा कद! उतना ही सहज व्यक्तित्व!! डॉ नारायण व्यास**
- आलेख / 6
  **गढ़वाल क़लम के अप्रतिम चितेरे-मोलाराम / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय**
- लोक में अद्वैत / 9
  **अद्वैत मंदिर का विशाल कैलाश मंदिर / डॉ.अखिलेश गुमास्ता**
- साक्षात्कार / 11
  **पुरातत्ववेत्ता डॉ. नारायण व्यास से भँवरलाल श्रीवास की बातचीत**
- जीवन वृत्त / 14
  **डॉ. नारायण व्यास का जीवन-वृत्त**
- साक्षात्कार / 16
  **डॉ नारायण व्यास से इतिहासकार ललित शर्मा की बातचीत**
- आलेख
  **वीणा का पुरातत्व / डॉ. नारायण व्यास/ 19**
  **रानी की वाव प्रतिमाएं जो अतीत से जोड़ती हैं / डॉ. नारायण व्यास/ 21**
  **पुरातत्व क्या है ?/ कैलाशचन्द्र पाण्डेय/ 23**
  **संगीत में घराना: कुछ सुलगते सवाल / पं. विजयशंकर मिश्र/ 30**
  **भोपाल क्षेत्र के महत्वपूर्ण शैल चित्रकला केन्द्र / डॉ. नारायण व्यास / 34**
- मध्यांतर / 38
  **सीरियाई कवि, राजनयिक निज़ार कब्बानी की कविताएँ, अनुवाद : मणि मोहन**
  **दिनेश प्रभात के गीत/ 39** **संदीप राशिनकर की कविताएँ / 40**
  **रशीद अंजुम की ग़ज़लें/ 41** **भास्कर लक्षकार की कविताएँ / 42**
  **भीमबेटका / राजेन्द्र नागदेव / 43** **डॉ. नारायण व्यास की कविताएँ / 44**
- गीत विमर्श / 45
  **जंगबहादुर 'बन्धु' के गीतों पर विमर्श / मनोज जैन**
- आलेख / 47
  **'रसो वै सहः' की मौलिक अभिव्यक्ति / गौरीकान्त शर्मा**
- संस्मरण / 49
  **पुरातत्व की प्राचीर - डॉ. नारायण व्यास / नेहा प्रधान**
- कीर्तिशेष/ 51
  **वे हिन्दुस्तानी तहज़ीब की सुरीली पुकार थे ..../ विनय उपाध्याय**
- संस्मरण / 49
  **डॉ. मुकेश कुमार मिश्र / 53 । प्रेमशंकर शुक्ल / 54 । शशिकांत लिमये / 54 । श्रीमती कला मोहन / 55 । डॉ. मुक्ति पाराशर / 56 । ओमप्रकाश शर्मा कुम्भी / 56। कैलाश चन्द्र धनश्याम पाण्डेय / 57 । श्रीमती साधना व्यास / 58 । ओ.पी. कुशवाह / 59 । पं. वैद्य सुखदेव व्यास / 59 । सुभाष अत्रे / 60 । सुनील कुमार भट्ट 'माचिसमेन' / 60 । रमेश कुमार पंचौली / 61 । सुधीर कुमार पण्ड्या / 62 । राजेन्द्र नागदेव / 63 । निखिल भावे / 64 । रमेश दवे / 66**
- आयोजन / 65
  **कैलिफोर्निया, न्यू यार्क और श्रीलंका तक गूंजा भारतीय संगीत / डॉ. नम्रता देब**
- पुस्तक सीक्षा / 67
  **'रानी की वाव' ( लेखक- डा. नारायण व्यास ) / राजेन्द्र नागदेव**
- समवेत / 68
  वर्षा ऋतु और संगीत- एक स्पंदन / प्राचीन नगरपालिका भवन में कला संग्रहालय, वाचनालय का शुभारंभ / सुमन चौरे, रश्मि रामानी, बंशीलाल परमार और अशोक मनवानी को सप्तपर्णी सम्मान / प्रियंका देवपुरा को पी.एच.डी. उपाधि / कथाकार युगेश शर्मा का कोरोना कथा संग्रह प्रकाशित होगा / पुनर्नवा पुरस्कार 2020 / काका हाथरसी जयंती 18 सितंबर पर विशेष
- समय की धरोहर/ 70
- कला समय उत्तराधिकार / 71
- छाया-छबियाँ / 72
  **डॉ. नारायण व्यास का व्यक्तित्व और कृतित्व**
- पत्रिका के बहाने / 74



**शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स,** भोपाल, 9981984888 | **आवरण चित्र** - डॉ. नारायण व्यास | **अंतिम आवरण चित्र** - डॉ. नारायण व्यास | **छायाचित्र** - मनीष सराठे, सुनील सेन, गुगल से साभार | **रेखांकन** - चेतन औदिच्य | **सहयोग** - धन सिंह, लता श्रीवास | **आवरण सज्जा** - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

# पुरातत्व में जितना बड़ा कद! उतना ही सहज व्यक्तित्व!! डॉ नारायण व्यास

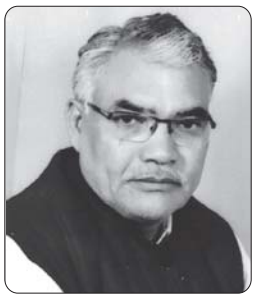

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत सत्य है। जो आज है वह कल नहीं रहेगा। समाज का स्वभाव, व्यवहार, विचार, वेशभूषा, परिवेश आदि सभी कुछ काल से नियंत्रित है। काशी में आकर देश भर के राजा–महाराजा विशाल भवन बनवाते थे, किन्तु उसके दरवाजे पर एक पत्थर पर लिखा रहता था – **'इदमपि न तिष्ठेत्'** अर्थात यह भवन भी नहीं रहेगा। एक दिन यह नष्ट हो जायेगा, काल इसको समाप्त कर देगा। समाज भी प्रतिक्षण बदलता है एक जीवन्त इकाई की तरह निरन्तर गतिमान रहता है। वह सोचता है, विचार करता है, इस कारण परिवर्तनशील है काल के चक्र की तरह। चक्र का जो भाग कल ऊपर था वह आज नीचे हो सकता है तथा जो आज नीचे है वह कल ऊपर हो जायेगा किन्तु 'भारतीय संस्कृति अगर कुछ भी है तो वह तत्वत: आत्मोपलब्धि, आत्मबल और आत्म परिष्कर की संस्कृति है।' भारतीय पुरातत्व शास्त्र के इतिहास में बीसवीं सदी अति महत्वपूर्ण है इसी सदी के पूर्वार्द्ध में मोहन जोदड़ों और हड़प्पा संस्कृति का अन्वेषण हुआ। सदी के मध्य में भीमबैठका जैसी विश्व धरोहर एवं उत्तरार्द्ध में सरस्वती नदी के मार्ग की खोज हुई। इन खोजों ने विश्व इतिहास की धारणाओं को परिवर्तित कर दिया है। भारत की इस प्रागेतिहासिक गरिमा और समृद्धि पूर्ण गौरव की झलक दुनिया को अचंभित करने वाली थी भारतीय पुरातत्व के गौरवपूर्ण इतिहास के खोजकर्ता पद्मश्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर पुरातत्व पुरुष का स्मरण स्वाभाविक ही याद आता है वे देश के प्रथम पुरातत्ववेता गुरू थे। उनके परम शिष्य डॉ. नारायण व्यास (डी.लिट्) भारतीय पुरातत्वविद, इतिहासकार, साहित्यकार, कलाविद्, समाजसेवी डॉ. व्यास एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पुरातत्ववेत्ता है जो पिछले लगभग 50 वर्षों से पुरातत्व के क्षेत्र में अपना योगदान देते हुए महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। इन्होंने उज्जैन में रहकर डॉ. वाकणकर के मार्गदर्शन में एम.ए. किया एवं पुरातत्व में स्नात्कोत्तर डिप्लोमा करने के पश्चात भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में रहकर मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, दमन–दीव, छत्तीसगढ़ इत्यादि क्षेत्रों में पुरातत्वीय कार्य किया। (जुलाई 1972 से जनवरी 2009) तक इन्होंने अपने कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण पुरातत्व स्थल एवं स्मारकों की खोज की है। साथ ही गाँव–गाँव में सर्वेक्षण करने के पश्चात कई उत्खनन भी किये हैं। जिसमें भीमबैठका, साँची, सतधारा, विदिशा इत्यादि स्थलों पर कार्य किया। इन्होंने रानी की वाव (बाउड़ी) गुजरात के विषय को लेकर (पी.एच.डी.) की है एवं रायसेन, भोपाल एवं भीमबैठका के शैल चित्रों पर (डी.लिट्) की है। 2009 में सेवानिवृत्ति के पश्चात भी पुरात्व के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। सेवा निवृत्ति के पश्चात भारत सरकार ने इन्हें 2010–11 में म.प्र. के पुरातत्व के पुरातत्वीय समन्वयक नियुक्त किया गया सांस्कृतिक आदान–प्रदान के अंतर्गत 2005 में भारत सरकार बर्मा स्मारकों के अध्ययन हेतु भेजा शैल चित्रकला की संस्था सेंटर डी स्टडीज कन्टेसटेन्ट कन्सन टाईना के साथ मिलकर शोधकार्य भी कर रहे हैं। इतिहास संकलन समिति मध्य भारत के अंतर्गत डॉ. व्यास ने कई महत्वपूर्ण खोज की है जिनमें रायसेन जिले की महान दीवार एवं अवशेषों की खोज की है। इन्होंने अपने निवास पर एक शोध केन्द्र भी खोल रखा है जिसमें कई शोधार्थी एवं देश विदेश के विद्वान भी इनके यहां इनके कहने पर आते हैं। इन्होंने कई लोगों के साथ पुरातत्वीय कार्य किया जिसके पद्मश्री डॉ. वाकणकर, रार्बट ब्रूक्स (क्एसए), इरविन न्यूमियार (आस्ट्रेलिया) प्रोफेसर मूरो (स्पेन) मिस्टर पेरेफ्रेरर (स्पेन) प्रो. अनोती (इटली) प्रो. आर.वी. जोशी, प्रो.बी.बी. लाल, श्री के. देव, प्रो. सोनावने, डा. बी.एम. मल्लाह, डॉ. जी.एल. बादम, श्री एस.बी. ओटा, श्री के.के. मोहम्मद, प्रो. भगवत शरण उपाध्याय इत्यादि के साथ कार्य किया। इसके साथ ही कई प्रदर्शनियां लगाई तथा कई सम्मानों से नवाजा गया इसमें प्रमुख प्राचीन ईंटों के संग्रह के लिये लिमका बुक ऑफ रिकार्ड तथा गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड द्वारा प्राचीन ईंट पर मानव के छाप पर विश्व रिकार्ड में नाम दर्ज है। संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पुरातत्व के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय कार्य के लिये वर्ष 2012 में सम्मान प्राप्त डॉ. व्यास राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में एडवाईजरी कमेटी के सदस्य है, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण नई दिल्ली वेल्यूएशन कमेटी सदस्य है, राष्ट्रीय अभिलेख समिति, राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली के सदस्य है, आजीवन सदस्य रॉक आर्ट सोसायटी ऑफ इण्डिया आगरा, इतिहास संकलन समिति के सदस्य इत्यादि कई संस्थाओं से जुड़े हुए डॉ. व्यास की भीमबैठका –भोजपुर पर पुस्तक, मन की पतवार काव्य संग्रह, रानी की वाव पुस्तकों के साथ ही मध्यप्रदेश की आदिमानव की शैलचित्र कला पर पुरातत्व के स्नोतकोत्तर कक्षा के लिए 120 पृष्ठों की पाण्डुलिपि प्रदाय की गई आप आकाशवाणी, दूरदर्शन पर समय–समय पर प्रसारण तथा कई कार्यशालाएं लेक्चर तथा शोधग्रंथ, अभिनंदन/स्मृतिग्रंथ के साथ पत्र–पत्रिकाओं में शोध पत्रों का प्रकाशन हुआ है हम विस्तार से डॉ. नारायण व्यास का जीवन–वृत्त सृजनात्मक कार्य एवं उपलब्धियों की जानकारी प्रथक से भी दे रहे हैं जिससे इस महान पुरातत्व शख्सियत को करीब से जानने का लाभ मिल सके। कला समय पत्रिका अपना सौभाग्य मानती है कि डॉ. व्यास पर पहला उनके समस्त पुरातत्व अवदान को लेकर यह बहुप्रतिष्ठित विशेषांक हेतु हमें कई इतिहासकारों पुरातवेत्ताओं ने अपना रचनात्मक योगदान दिया है, हम उनके हृदय से आभारी हैं। जिसमें सर्वश्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय, ललित शर्मा, राजेन्द्र नागदेव, देवेन्द्र प्रसाद तिवारी, सुनील कुमार भट्ट, डॉ, मणिमोहन, डॉ. मुक्ति पाराशर, शशिकांत लिमये, प्रेमशंकर शुक्ल, सुधीर कुमार पण्ड्या, नेहा प्रधान, ओमप्रकाश शर्मा, रमेश कुमार पंचौली, ओ.पी कुशवाहा,डॉ. मुकेश कुमार मिश्र, चेतन औदिच्य, गौरीकांत शर्मा, पं. विजयशंकर मिश्र, मनोज जैन, इत्यादि। नया स्तंभ ''लोक में अद्वैत'' आदिशंकराचार्य के अद्वैत वेदांत को लोक जनजाति धारा में पिरोते हुए इस अंक से नया स्तंभ की शुरूआत की है, जिसमें निर्गुण धारा के समकालीन संत परम्पराओं, विद्वानो के चिंतन, विचार से आपकों इस श्रृंखला में साक्षात्कार कराएंगे। स्तंभ की शुरूआत डॉ. अखिलेश गुमास्ता के द्वारा एलोरा के अद्वैत कैलाश मंदिर पर सुदंर आलेख सुधी पाठकों के लिए इस बार प्रस्तुत है। आपकी प्रतिक्रियाओं की हमें प्रतिक्षा रहेगी।

**पानी भूल गया है**
**आग से अपना रिश्ता**
**आग को याद नहीं**
**हवा का स्पर्श**
**गंध से टूट गयी है**
**पृथ्वी की लय**
**पृथ्वी से बंद है**
**आकाश की बातचीत**
**– केदारनाथ सिंह**

**– भँवरलाल श्रीवास**

आलेख

# गढ़वाल क़लम के अप्रतिम चितेरे-मोलाराम

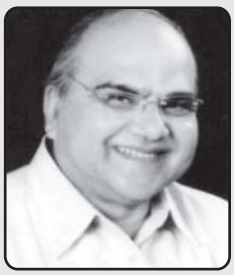

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

भारतीय चित्रांकन परम्परा की अस्मिता की पहचान है राधा और माधव की मनोहारी लीलाओं की मोहक अंकन, ये अंकन राजस्थान और पहाड़ की विभिन्न शैलियों की देन है। गीत गोविन्द से लेकर बिहारी सतसई तक जो ग्रन्थ रचे गए तथा भागवत से लेकर कविप्रिया और रसमंजरी तक जो इस लीला की अविराम धारा बहती आई, उसे मध्यकालीन चितेरों ने अपनी तूलिका की परिधि में समेटा। पहाड़ी चित्रकला की विभिन्न शैलियों में से एक महान शैली गढ़वाल किया थी। इस शैली के संबंध में प्रख्यात् कलाविद् डॉ. डब्ल्यू.जी. आर्चर ने आरंभिक रूप से तथा बैरिस्टर मुकुन्दीलाल जो मोलाराम के शिष्य थे ने गहन शोध किया है। यह शैली अपनी गीतात्मक कोमलता के कारण यदि एक ओर गुलेर शैली के प्रयोगों से प्रभावित लगती है तो दूसरी ओर इसकी आकृतियों तथा प्राकृतिक सुषमा का अंकन कांगड़ा क़लम से प्रभावित है। इन प्रभावों के होते हुए भी इस शैली का उदात्त सौन्दर्य बरबस आकृष्ट करता है। यह सौन्दर्य केवल गढ़वाल क़लम की अपनी मौलिक देन है।

गढ़वाल क़लम के चढ़ाव और उतार ऐसे लगते हैं जैसे बारिश में गढ़वाल की राजधानी श्रीनगर की घाटी में घूम कर दौड़ती हुई अलकनन्दा नर और नारायण नाम के दो पर्वतों से टकराकर बह रही हो। गढ़वाल क़लम का चित्रकार बद्रीनाथ के शिखर समूहों में समाए सौन्दर्य से अभिभूत है और उसने इस देवभूमि के स्वर्गीय सौन्दर्य को रंगों और रेखाओं में बांधने का सफल प्रयास किया है। सुकुमार भावुकता, छोटे घुमावदार पेड़, मन्दार के फूल, चक्र की तरह जल-धाराएँ तथा सुघढ़ नारी देहयष्टि ये सब गढ़वाली क़लम की अप्रतिम विशेषताएं हैं।

गढ़वाल शैली की इन तमाम विशेषताओं को चित्रों के माध्यम से रच देने वाले महान् कलाकार मोलाराम हैं। मुग़ल शैली में जो स्थान बिशनदास का, देवगढ़ में चोखा का, मेवाड़ में साहिबदीन का और कांगड़ा में मानक का है, वही स्थान गढ़वाल शैली में मोलाराम का है। बल्कि मोलाराम इन व्यक्तित्वों से कहीं अधिक ऊँचाई पर इसलिए दिखाई देते हैं, क्योंकि वे महान् कवि भी हैं। यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि मोलाराम ने अपने आपको कवि कहना ज़्यादा पसन्द किया। केवल एक मस्तानी नामक एक चित्र पर उन्होंने स्वयं को मुसव्विर के रूप में अंकित किया लेकिन उनकी चित्रकला का जादू यह है कि एक समय जब श्रीनगर पर हमला हुआ, तब वहां के राजा जयकृत शाह ने मोलाराम से अनुरोध किया कि वह नाहा के राजा जगतप्रकाश से राज्य के लिए मदद की मांग करें, मोलाराम स्वयं तो नाहा नहीं गए किन्तु उन्होंने एक चित्र बनाया, उस पर एक कविता लिखी तथा उसे राजा जगतप्रकाश के पास पहुंचा दिया, परिणाम यह हुआ कि चित्र पहुंचते ही गढ़वाल के राजा को तत्काल सहायता मिल गई।

मोलाराम की वंश परम्परा पर नज़र डाले तो ज्ञात होता है कि शाहजहां के दरबार के महान् चित्रकार बिशनदास उसके पूर्वज थे। उनके पुत्र श्यामदास शहज़ादे दाराशिकोह के साथ रहते थे। उत्तराधिकार की लड़ाई में जब दाराशिकोह को औरंगजेब ने परास्त किया तो उसके पुत्र सुलेमान शिकोह को गढ़वाल में शरण लेनी पड़ी। सन् 1658 ई. में वह गढ़वाल की राजधानी श्रीनगर पहुंचा और महाराजा पृथ्वीपत शाह (1640-1660 ई.) के दरबार में शरणार्थी बनकर रहने लगा। इसी समय चित्रकार श्यामदास अपने पुत्र हरदास को साथ लेकर श्रीनगर आया। बाद में शहज़ादा सुलेमान शिकोह षड्यंत्रपूर्वक औरंगज़ेब के यहां दिल्ली पहुंचा दिया गया, लेकिन श्यामदास और हरदास गढ़वाल में ही रहकर कला-साधना करने लगे। श्यामदास की पांचवी पीढ़ी में सन् 1743 में मोलाराम का जन्म हुआ। उनका पैतृक व्यवसाय स्वर्णकारी का था।

मोलाराम ने गढ़वाल के राजा प्रदीपशाह, ललितशाह, जयकृतशाह और प्रद्युम्न शाह के राज्यकाल में रहकर निरन्तर सृजन किया तथा उनकी प्रसिद्धि सिरमौर, गुलेर और मण्डी से लेकर कांगड़ा तथा नेपाल तक पहुंच गई। अकस्मात् ही गढ़वाल पर विपत्ति टूटी और निर्दयी गोरखों का उस पर आधिपत्य हो गया। वहां के कलाकार इधर-उधर चले गए किन्तु मोलाराम ने गढ़वाल नहीं छोड़ा। उन्होंने गोरखा सेना के सरदार तथा गवर्नर हस्तीदल चोतरिया की कृपा प्राप्त कर ली। उसी के समय में मोलाराम ने गढ़वाल राज्य की उत्पत्ति और उसके

विकास का पद्यबद्ध इतिहास रचा। गढ़वाल की सत्ता जब अंग्रेजों के हाथ आई तब मोलाराम के सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि वह राज्याश्रय के लिए राजा सुदर्शनशाह के टिहरी दरबार में चला जाए या अपनी जन्मभूमि श्रीनगर में ही रहे। अन्ततः मोलाराम ने श्रीनगर में ही रहने का निश्चय किया तथा वहीं सन् 1833 में उनकी मृत्यु हुई। उन्होंने 90 वर्ष की लम्बी आयु पाई।

मोलाराम प्रख्यात कवि भी थे तथा उन्होंने अपने कवि होने का गौरवपूर्ण उल्लेख अपने चित्र विवरणों में किया है। उनकी अपनी चित्रशाला थी जिसमें वे अपना अधिकतम समय व्यतीत करते थे तथा इस चित्रशाला में वे अपने शिष्यों को दीक्षित भी करते थे। एक मुसलमान चित्रकार बाकर अली फरदाक तथा एक संत मनीराम बैरागी के नाम इस संदर्भ में उल्लेखनीय है।

मोलाराम ने न केवल हिन्दी बल्कि फारसी व संस्कृत में भी कविताएं रचीं। विषय की दृष्टि से उनकी कविता तीन भागों में बांटी जा सकती है, पहले भाग की कविताएं वे हैं जो चित्रों की व्याख्या स्वरूप लिखी गई हैं, दूसरी कोटि की कविताएं वे हैं, जो गढ़वाल के इतिहास के लिए प्रामाणिक सामग्री सामने रखती हैं और तीसरे भाग में उनकी आध्यात्मपरक कविताएं हैं जिनके अनुसार उन्होंने एक नए आध्यात्म मार्ग मन्मथ पंथ को प्रचलित किया था। उनके एक महत्वपूर्ण ग्रंथ का नाम मन्मथसागर है जो अभी अप्रकाशित है, किन्तु इसके संबंध में भक्तदर्शनजी ने अपनी पुस्तक 'गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां' में प्रकाश डाला है। उनकी अनेकों स्फुट रचनाएं भी उपलब्ध हैं। मोलाराम के द्वारा एक और काव्य-ग्रंथ ''गणिकाग्रह गीता संग्राम'' भी लिखे जाने की सूचना मिली है। मोलाराम के द्वारा रचित कुछ काव्य पंक्तियां निम्नानुसार हैं –

**दोहा –**

**बनी ठनी यों सैत में बैठी अति सकुचाय।**
**ज्यों पतंग पिंजरा में बासकसय्या जाय।।**

**कवित्व–**

**फूले जल कमल हिमलतिका लिपटे रहि**
**सघन कुंज पुंज में सुगंधित गंध भोगती**
**करत कलोल ही जहान पशुपक्षी ठौर ठौर**
**चौंकि! चौंकि! चितवय चहुँ ओर नैन तकती**
**मत रूप की उजारी निर्मल दीप की शिखा सी**
**दिखाई छिपाई न छिपे गत ज्यों ज्यों वह रोकती**
**कहत मोलाराम कवि नील सारी तिर ओढ़े**
**प्यारी अंग को दुरे नंदलाल को बिलोकती**

**दोहा–**

**चौथे बीर नरसिंह हरिहर भये उग्र अवतार**
**धरे ध्यान यह भंटी जो लखे ना जम को द्वार**

**छप्पय –**

**खम्ब फार बलधारी कोप करि दस्त पछारयो**
**पकरी देरि मही नख सों उदर विदारयो**
**कौशल्या अरू प्रहलाद कर जोर निहारत**
**नमो नमो भय त्रास महा भयभीत पुकारत**
**चौथे बीर हरि हरिण कुस की मुक्ति कौन**
**मोलाराम बिचर कही हवाई हैं सहायक निज भक्तन कौन**

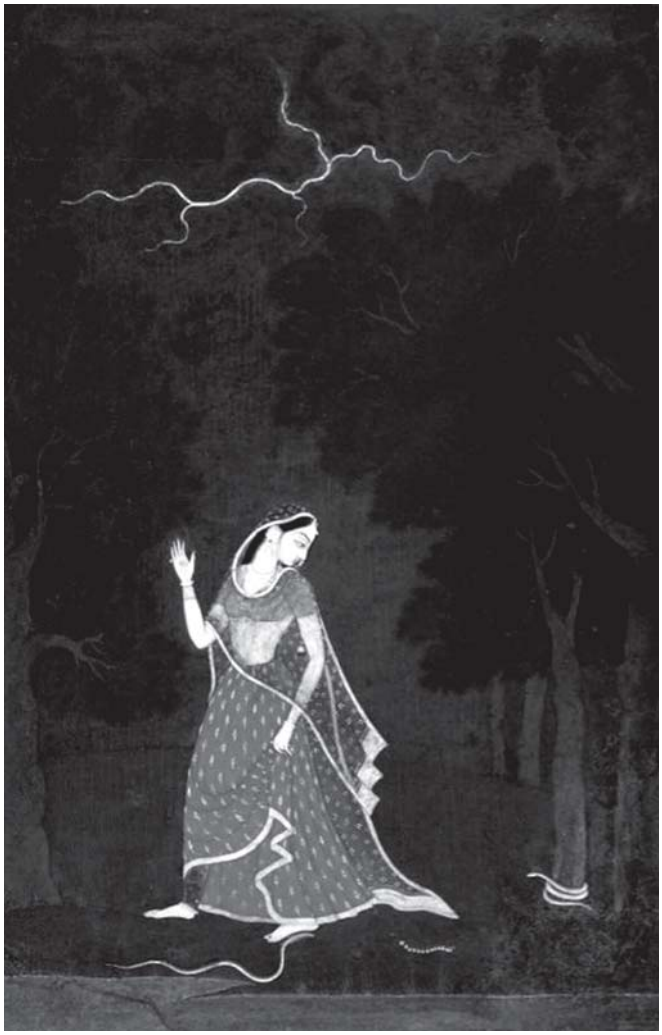

मोलाराम के पिता मंगतराम मुग़ल शैली के चित्र बनाया करते थे। 25 वर्ष की उम्र तक मोलाराम ने अपने पिता का अनुकरण किया। इसी बीच उन्होंने कांगड़ा की यात्रा की और कांगड़ा क़लम से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने इस शैली में चित्र बनाना आरंभ कर दिए। उन पर कांगड़ा तथा गुलेर क़लम के चितेरों का गहरा प्रभाव पड़ा, जो उनकी कृतियों में स्पष्ट झलकता है। मोलाराम के बनाए चित्रों रंगों के सुन्दर संयोजन के साथ ही साथ रेखाओं की बारीकी इतनी स्पष्ट है कि उनकी सधी हुई क़लम से विषय अपने पूरे परिप्रेक्ष्य में साकार हो उठता है और कविता, रूप के वातायन से उतर कर जीवन्त आकृतियों में आंखों के सामने थिरकने लगती है। मोलाराम का प्रिय विषय नायिका भेद का चित्रण था। उन्होंने नायिकाओं की मानसिकता, भाव तथा व्यवहार को केन्द्र में रखकर सुन्दर चित्र बनाए। उन्होंने विभिन्न प्रकार की नायिकाओं पर कविताएं लिखीं तथा अपने स्वयं के हाथों से नायिका के संबंध में चित्र के उपरी भाग पर विवरण अंकित किया। अष्ट नायिकाएं उन्होंने चित्रित कीं, जो बाद में उनके प्रपौत्र बालकराम ने टेहरी राजा कृतिशाह (1892–1913) को वर्ष 1910 में उनके श्रीनगर आगमन के समय एक एलबम के रूप में भेंट कीं। बैरिस्टर मुकुन्दीलाल ने गढ़वाल क़लम के चित्रों पर विशेष रूप से मोलाराम के द्वारा बनाए गए चित्रों पर गहरा शोध कार्य किया है तथा उन्होने लिखा है कि जिस

समय ये चित्र भेंट किए गए तब वे स्वयं उपस्थित थे। नायिकाभेद के अलावा दशावतार, राधा-कृष्ण लीला, रूकमणी मंगल तथा प्रकृति चित्रण मोलाराम के प्रिय विषय रहे। अपने ऑस्ट्रेलिया प्रवास के समय मैंने रूकमणी हरण का एक मनोहारी रूपांकन ऑस्ट्रेलिया की नैशनल गैलरी ऑफ ऑस्ट्रेलिया में गेयर एण्डरसन संग्रह में देखा। यह चित्र मोलाराम के द्वारा बनाए गए सुन्दरतम लघुचित्रों में से एक है।

मोलाराम की नायिका चन्द्रमुखी है। मयूर उसके आसपास घूमते रहते हैं। जब कभी उन्होंने राधा को चित्रित किया, तब उन्होंने राधा के आसपास सुन्दर मयूर भी अंकित किए हैं। जिस राधा को उन्होंने चित्रित किया, वह अनुपम और दिव्य है। मोलाराम की राधा प्रगल्भा नहीं है, वह बड़ी सुकोमल, लाजवन्ती और सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है। लगता है जैसे लाज बूंद-बूंद बनकर राधा के नैनों से टपकती है और इन्हीं बूंदों के पीछे उनका अद्वितीय रूप झिलमिलाया करता है। मोलाराम के द्वारा रची गई राधा की देहयष्टि बड़ी सुघड़ है। उनके अंग-अंग का अनुपात बड़े मनोयोग से मोलाराम ने साधा है। चाहे वे अपनी सखियों के साथ हों या कृष्ण के साथ, उनकी भंगिमा कभी मर्यादा की सीमाएं नहीं लांघती। मोलाराम ने राधा की देह पर अन्य क़लमों की तरह, तरह-तरह के आभूषण नहीं सजाए बल्कि लज्जा को ही राधा की देह का अनुपम अलंकरण बना दिया। निसर्ग चित्रण में मोलाराम की क़लम अद्भुत है। बड़े-बड़े वृक्ष, पुष्पों से लदी हुई बेल जिनकी पत्ती-पत्ती स्पष्ट दिखाई देती है, उनकी क़लम की विशेषता है। मन्दार के वृक्ष मोलाराम को बड़े प्रिय रहे। उन्होंने मन्दार के लाल फूलों वाले वृक्षों को बड़ी बारीकी के साथ उरेहा है। उनकी चित्रांकन शैली पर किंचित ब्रिटिश प्रभाव भी दिखाई देता है। एक सुन्दर चित्र जो 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मोलाराम ने बनाया, वह जेन ग्रिनफ ग्रीन कलेक्शन में अमेरिका में संग्रहीत है। विलक्षण नायिका है यह जो तूफानी अंधेरी रात में कड़कती बिजली, बरसते पानी और घने अंधकार के बीच बेसुध सी चली जा रही है अपने प्रियतम से मिलने। काले कोबरा सांप उसके पैरों से लिपट पड़ने को आतुर हैं, लेकिन उसे उनकी कोई परवाह नहीं। इस चित्र की सबसे बड़ी विशेषता है नायिका की वह गतिशील भंगिमा जिसे देखकर लगता है कि पैर अपने आप उठ चले, स्याह अंधेरी रात, बरसता पानी और कड़कती बिजलियां जिसके पथ में अवरोध तो बने हैं, लेकिन उनकी असहायता भी उसके संकल्प के समक्ष स्पष्ट दिखाई देती हैं।

मोलाराम की यह सृष्टि अद्भुत है। नायिका के एकचश्म चेहरे से उसकी बेसुधी स्पष्ट झलकती है। वह अलंकृत है। हाथ में मेंहदी और पांव में महावर हैं लेकिन उसके वस्त्र अस्त व्यस्त हैं मौसम के मिज़ाज़ की तरह। घने, काले घुमावदार बादल घूमती अलकनंदा का स्मरण कराते हैं और वृक्षों के झुके हुए पत्ते यह इंगित करते हैं कि उनमें उस नायिका की तरह गतिशील और ऊर्जावान बने रहने का संकल्प अब नहीं बचा। वे बरसात और बिजली के सामने नतमस्तक और पराजित हैं, जबकि यह नायिका पूर्णत: अजेय। इस तरह के चित्र विभिन्न कलावीथियों में बिखरे हैं। मोलाराम ने अपने समय में रेखाचित्र भी बनाए, जिनका संग्रह बैरिस्टर मुकुन्दीलाल ने किया है। मोलाराम ने एक सुन्दर चित्र ऐसा भी बनाया जिसमें अकबर को कुंए पर एक नवयुवती पानी पिला रही है और उसकी तीन सखियां इस दृश्य को निहार रही हैं। यह विषय मुग़ल और दक़नी क़लमों में बहुत चित्रित किया गया तथा मोलाराम के आरंभिक काल के चित्रणों में से यह एक है।

डॉ. आर्चर ने गढ़वाल क़लम के चित्रों की विशेषता को इंगित करते हुए यह कहा है कि इसके रंगों में बड़ा आकर्षण है। इन चित्रों में निर्मित पेड़ और उनकी शाखाएं तथा उनमें लिपटी हुई लता, फूलों से लदी हुई और नीचे की ओर झुकी रहती हैं। मोलाराम के चित्रों में एक वृक्ष बहुदा चित्रित रहता है जिसकी सब शाखाएं ऊपर की ओर खड़ी रहती हैं उनमें केवल नारंगी रंग के फूल होते हैं तथा शाखाओं में पत्ते नहीं होते। महिलाओं के माथे पर चंदन का सीधा शैव टीका रहता है जो गढ़वाल में प्रचलित था। उन्होंने लिखा कि गढ़वाल के चित्रों में स्त्रियों में नाज़ुकपन, लचक और अद्भुत आकर्षण ज़्यादा देखने में आया है तथा उनके चेहरों में भिन्नता है। यह देन मोलाराम को उसके पिता मंगतराम की मुग़ल कलाशैली से मिली थी।

मोलाराम की इस विरासत को उनके पुत्रों ने भी सहेजा। मोलाराम के बड़े पुत्र ज्वालाराम ने भी पशु-पक्षियों और पुष्पों के सुन्दर चित्र बनाए। उनके एक और पुत्र साहिबराम ने भी यद्यपि अपना पुश्तैनी स्वर्णकारी का कार्य जारी रखा किन्तु उन्होंने भी चित्रांकन का कार्य किया। परवर्ती वंशजों में तेजराम हुए जिनका जन्म सन् 1833 में हुआ तथा उसी वर्ष मोलाराम की मृत्यु हुई। तेजराम का निधन वर्ष 1906 में हुआ। उनके पुत्र बालकराम शाह थे जो स्वयं भी अच्छे चित्रकार थे। मोलाराम भारतीय चित्रांकन परम्परा के इतिहास में ऐसे बिरले चितेरे हैं जिन्होंने काव्य और कला दोनों की साधना की तथा इन दोनों अनुशासनों के बीच अपने आपको एक सेतु-पुरूष के रूप में स्थापित किया। कवि और चित्रकार होने के साथ-साथ वे राजनीतिज्ञ, चिन्तक तथा आध्यात्मिक व्यक्तित्व के रूप में भी अपने समय में प्रतिष्ठित हुए। मोलाराम की यह विरासत आज भी हमारे वर्तमान की गरिमा और भविष्य की धरोहर है।

- 85, इंदिरा गांधी नगर, आर.टी.ओ. कार्यालय के पास, केसरबाग रोड, इंदौर-9 (म.प्र.), मोबाइल - 9425092893

■

# अद्वैत का विशाल मंदिर - कैलाश मंदिर

डॉ.अखिलेश गुमास्ता

**विज्ञान -**

आज का युग वैज्ञानिक है या पुरातन, वैदिक युग अधिक परिष्कृत वैज्ञानिक युग था - विषय यह नहीं है मान्यताओं के परिवर्तनकाल को हम आज वैज्ञानिक युग कहते हैं जो तर्क आधारित नितनूतन थियोरीज के आधार पर विज्ञान की अट्टालिका बनाता जा रहा है वैदिक काल का ज्ञान विज्ञान कल्पनातीत की कल्पना ही नहीं वरन उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति पर केन्द्रित रहा। ग्रन्थों में ऋषियों ने अपने आश्रम, वन, कुटिया एवं यज्ञशाला को लेबोरेटरी बनाया और प्रत्यक्ष अनुभूति परक ऋचाओं का सृजन किया तभी तो इस विज्ञान ने इस युग के महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन को आकर्षित ही नहीं किया वरन प्रेरणा भी दी।

बात 29 जनवरी 1931 की है अमेरिका के माउण्ट विल्सन पर स्थित वैद्यशाला में आइन्सटीन ने कुछ ऐसा देखा कि वे नाच उठे। वैदिक विज्ञान के ब्रह्मनाद एवं विगबैंग थ्योरी को एकाकार करने का सूत्र उन्हें विस्तारिक होते ब्रह्माण्ड में दिखाई दिया एक वैज्ञानिक पुरातन वैदिक विज्ञान से एकाकार हो रहा था। वही वैदिक विज्ञान जिसने बताया **'एकोअहं बहुस्यामि तत्वमसि'** देट दाऊ आर्ट। अद्वैत मत को प्रतिपादित नहीं अनुभूत किया।

**आध्यात्म** - आदि शंकर का अद्वैत, माधवाचार्य का द्वैत निम्बार्क का द्वैताद्वेत और रामानुजाचार्य का विशिष्टा द्वैत सिद्धान्तों की जटिलता के पृथक तत्वों को पिरोते हुए स्वामी विवेकानंद कहते हैं **'एकत्व का बोध'** ही वेन्दान्त का सारतत्व है। पुन: कहते हैं अद्वैत भाव के अतिरिक्त अन्य कुछ भी इतनी शक्ति प्रदान नहीं कर सकता अद्वैत भाव के अतिरिक्त अन्य कुछ भी इतनी सात्विकता नहीं प्रदान कर सकता। **'सर्वमं खलु इदं ब्रह्म'**- सर्वत्र ब्रह्म ही है। समस्त जटिलताओं और मोह के विपरीत स्वामी विवेकानंद व्यावहारिक वेदान्त की मान्यता देते है। किन्तु व्यावहारिक अद्वैतवाद नवीन परिकल्पना नहीं है चीन कला जगत में इसके कई सूत्र प्राप्त होते है। आध्यात्म, ज्ञान, विज्ञान और कला के विभिन्न रंग अद्वैत की श्वेत रश्मिओं के ही अपरिवर्तित रूप है। प्राचीन व्यावहारिक अद्वैत का श्रेष्ठ उदाहरण कैलाश मंदिर ऐलोरा के शिल्पकारों ने उद्घाटित किया है।

**कला** - पुरातन काल से ही कला आध्यात्मिक साधना का अंग रही है। सूरदास संगीत के द्वारा, मीरा नृत्य करके, तुलसी साहित्य सृजन करके उस परम मार्ग पर अग्रसर होते हैं तो अज्ञात शिल्पकार मूर्तिकार, वास्तुकार, अभियंत मंदिर निर्माण की साधना कर व्यावहारिक अद्वैत को प्रकाशित करते हैं। और इस तरह आज भी अक्षुण्ण है।

**अद्वैत का विशाल मंदिर - कैलाश मंदिर, ऐलोरा ( महाराष्ट्र )**

**मूल मंत्र** - यहां कलात्मकता का मूल मंत्र एवं संदेश है -**एकात्म बोध**। इस मंदिर की विशालता जितनी है उससे अधिक उसका विशालता इस मंत्र की है **एको अहं द्वितीयो नास्ति।** एक ही पत्थर दूसरा कोई पत्थर नहीं।

**विशालता** - विश्व का विशालतम बृहतपाषाण ( MEGALITH ) मूर्तितक्ष कला एवं मंदिर निर्माण की उत्कृष्टता यह एक मात्र उदाहरण है। इसका विशाल

छायाचित्र : गुगल से साभार

स्वरूप, शिला-गठन, तराशना आदि अनूठा एवं भव्य है। संभवत: 8 वीं सदी में इसका निर्माण राजा कृष्ण प्रभम ने करवाया था। कैलाश मंदिर का निर्माण तीन खंड (तल्ला) में विशालतम है। 107 फिट ऊंचा है।

छायाचित्र : गुगल से साभार

**एक ही पाषाण** – एक ही पाषाण को काट कर बने इस मंदिर को अद्वैत मंदिर कहना उचित होगा क्योंकि एक पत्थर से शिवलिंग, उसी पत्थर से ड्योढी, खंभे, हाथी, कारीडोर अन्य देवी देवता एवं विभिन्न मूर्तियां नक्काशी आदि निर्मित है जैसे मूर्तियां स्वयं कह रही है। '**एको अहं द्वितीयो नास्ति**।' तीन खंड (तल्ले) के इस भव्य मंदिर निर्माण के छत, भूतल, सभाकक्ष, प्रार्थना गलियारे और गर्भगृह नंदी आदि भी एक ही पाषाण के हैं। सात फिट ऊँचे गर्भगृह और नंदीगृह को पाषाण काटकर पृथक-पृथक बनाया गया है।

इस एक ही पाषाण में रामायण और महाभारत के दृश्य भी दिखाये गये हैं। इस मंदिर में नटराज के तांडव से लेकर रावण के कैलाश पर्वत उठाने की उत्कृष्ट कृति भी इसी पाषाण से बनी है। गंगा, यमुना, सरस्वती का पृथक मंदिर इसी पाषाण को काट कर बना है।

**अनूठी शिल्पकारी** – शिल्प की अप्रतिमता इस कारण भी दैवीय प्रतीत होती है क्योंकि इसे ऊपर से काटते हुए Vertical Exclavation का बनाया गया है। पारंपरिक रूप से इस तरह का निर्माण सामने से प्रारंभ किया जाता है। राजा कृष्ण प्रथम की रानी मणिकेश्वरी के संकल्प को ध्यान में रखकर मुख्य शिल्पकार 'कोसका' ने सर्वप्रथम मंदिर के शिखर का निर्माण किया। यह कलाकार की अनूठी शिल्पकला का उदाहरण है। इस अद्वैत मंदिर का नाम मणिकेश्वर मंदिर रखा गया।

**विलक्षणता** – इस मंदिर के निर्माण में 2 लाख टन पत्थर को काट कर अलग किया गया जो अक्षुण्ण रखना है उसे बचाना जो व्यर्थ है पाषाण के उस भाग को अलग करना एक आश्चर्यजनक कार्य रहा होगा। '**प्राप्तस्थ प्राप्ति निवृतस्य निर्वत्ति**' का वैदिक सिद्धान्त कला साधना का अप्रतिम उदाहरण है। पुरातत्ववेत्ताओं का अनुमान है कि इसे पूर्ण होने में लगभग 100 वर्ष लगना चाहिए किन्तु 18 वर्ष में ही इस मंदिर का निर्माण पूर्ण हुआ।

मंदिर को आकार प्रदान करने में 2 लाख टन का पत्थर निकाला गया। वह पत्थर कहां गया इसका पता भी आज तक नहीं चल सका।

**द्वितीयो नाऽस्ति** – इस विलक्षण मंदिर जैसा निर्माण पुन: निर्माण करना लगभग असंभव है। इस युग के वास्तुकार भी आज के युग में इसे बनाने में असमर्थ है। इस मंदिर के जीर्णोद्धार की आवश्यकता भी 1400 वर्षों में नहीं पड़ी। इस मंदिर के निर्माण में 5 टन पत्थर प्रति घण्टे निकालकर हटाया गया जो आज के मशीन युग में भी असंभव ही है।

**रहस्यमय वास्तुशिल्प**– इस मंदिर में कुछ रहस्यमय प्रतीक भी हैं जो परा शक्ति के द्वारा निर्माण की थ्योरी को प्रस्तुत करते हैं। इस मंदिर में बाहर से किसी पाषाण स्तंभ या सीमेंट आदि का उपयोग नहीं किया गया। मंदिर के प्रांगण में सेतु निर्माण आदि भी एक ही पत्थर के हैं। इसका 'ड्रेनेज सिस्टेम' भी अनूठा है।

सभी मंदिरों का निर्माण कर इन पद्धति से होता है। यह निर्माण कट-आउट (Cutout) पद्धति से हुआ है जो कि विश्व का एक मात्र मंदिर है। 4 लाख टन पत्थर निकाल कर कहाँ गया यह भी पता नहीं चला आज तक।

इस मंदिर में कई गहरी सुरंगे है जो 10 फीट के बाद संकरी हो गई है। इस मंदिर के निर्माण में मानव या देव या परा मानव या कोई अलौकिक शक्ति का होना भी प्रतीत होता है। मंदिर को आकाश से देखने पर एक 'X' प्रतीक दिखाई देता है। धरातल के नीचे संकरी सुरंगे है जो मानव हेतु या मानव द्वारा निर्माण की हुई नहीं हो सकती।

**आक्रमण** – मुगल आक्रान्ता औरंगजेब ने इस मंदिर को तोड़ने का प्रयास 1682 में 1 हजार मजदूरों के साथ तीन वर्ष तक किया किन्तु कुछ भाग ही वह तोड़ सका। फिर उसने अपना प्रयास बंद कर दिया।

यह आलौकिक मंदिर है इसकी कला अद्वैत को स्थापित करती है यह ना ही पुन: बनाया जा सकता ना ही नष्ट किया जा सकता है।

इस अद्वैत मंदिर को वर्ल्ड हेरीटेज में सम्मिलित किया गया है किन्तु यह सर्वाधिक रहस्यमय है एवं बर्ल्ड वण्डर है जहां शिव, नंदी, अन्य मूर्तियों, स्तम्भों अन्य प्रतिमाओं और पूरे ही मंदिर के प्रत्येक कण में गुंजायमान होता है। **शिवो अहं।**

-460/11, स्नेह नगर, लेबर चौक, जबलपुर-482002, (म.प्र.) मो. 9425168684

■

# पुरातत्व के क्षेत्र में पूर्ण रूप से आने का श्रेय मेरे गुरू डॉ. वाकणकर को है

**डॉ. नारायण व्यास एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के पुरातत्वविद हैं आप 50 वर्षों से पुरातत्व में रहकर कई महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। उज्जैन में रहकर डॉ. वाकणकर के मार्गदर्शन में अपनी शिक्षा और पुरातत्व क्षेत्र में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में रहकर मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, दमन-दीव, छत्तीसगढ़ के क्षेत्रों में पुरातत्वीय कार्य किया जिसमें पुरातत्व स्थल एवं स्मारकों की खोज शामिल है। आपने गाँव-गाँव में सर्वेक्षण कर उत्खनन भी किये जिसमें भीम बैठका, सांची, सतधारा, विदिशा प्रमुख है। रानी की वाव गुजरात स्थित धरोहर पर कार्य कर पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त डॉ. व्यास द्वारा किये कार्य पर भारतीय मुद्रा पर रानी की वाव भी अंकित है। इसी के साथ रायसेन, भोपाल, भीमबैठका के शैलचित्रों पर आपको ( डी.लिट् ) हासिल है। डॉ. व्यास का कार्य, शिक्षा, पुरातत्व, इतिहास, चित्रकार, साहित्यकार कलाकार, समाजसेवी के साथ ही विनम्र व्यक्तित्व उनकी विशेष पहचान है। डॉ. व्यास के लेक्चर, शोधपत्र पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के साथ ही आपकी महत्वपूर्ण पुस्तकें जिनके भीमबैठका-भोजपुर, भीमबैठका, विश्वधरोहर, मन की पतवार कविता संग्रह, रानी की वाव इत्यादि पुस्तकें प्रमुख हैं। पुरातत्व विभाग से सेवानिवृत्ति के उपरान्त भी आप पूरी तरह सक्रिय रहकर सोशल मीडिया और पुरातत्व, समाजसेवा के साथ कई महत्वपूर्ण संस्थाओं की सलाहकार कमेटी के सदस्य के रूप में अपने अनुभवों और सेवाओं को निरन्तर प्रदान करते हुए आज भी सक्रिय हैं।**

**- संपादक**

- **पुरातत्व और इतिहास क्या है। दोनों के बैसिक अन्तर क्या है ?**

- पुरातत्व एवं इतिहास सही मायने में एक सिक्के के दो पहलू हैं। पुरातत्व के अन्तर्गत जब उत्खनन किया जाता है उससे विभिन्न प्रकार की सामग्री मिलती है उसकी सिलसिलेवार विधिवत स्क्रिप्ट लिखना डाक्यूमेन्ट तैयार करना लिखना यह इतिहास का हिस्सा है। इतिहास शब्द साक्षी बनकर पुरातत्व के प्रमाणिक अभिलेखों को जीवन्तता प्रदान करता है। सही मायने में वैज्ञानिक पद्धति से पुरानिधियों का अध्ययन कराना ही पुरातत्व है।

- **पुरातत्व के अंतर्गत हम किन-किन सामग्री को इसके दायरे में लाते हैं वे कितनी पुरानी होना चाहिए ?तथा इसकी पहचान किस तरह से की जाती है ?**

- पुरातत्व के अंतर्गत कोई भी महत्वपूर्ण सामग्री जो कम से कम 100 वर्ष या उससे भी प्राचीन होना चाहिए इसके अंतर्गत प्राचीन, स्मारक, प्रतिमाएं, सिक्के, चित्र, हथियार, हस्तलिखित ग्रंथ, पाण्डुलिपियां, प्राचीन मिट्टी के पात्र इत्यादि होते हैं। इनकी विधिवत विभिन्न प्रकार से प्राचीनता की प्रमाणिकता की जांच भी होती है।

- **हमारी पुरा सम्पदा का भंडार कहां-कहां है और किन-किन स्थानों पर काम और होना चाहिए ?**

- हमारी प्राचीन सम्पदा सर्वत्र मिलती है जहाँ प्राचीन निवास के अवशेष हों, नदी किनारे पर दबे हुए प्राचीन नगर उज्जैन, विदिशा जैसे मिलते हैं। पुरानी जगह सर्वे करने से मिट्टी के पात्र, सिक्के इत्यादि मिलते हैं। अभी भी कई जगहों पर नवीन खोजों की बहुत संभावनाएं हैं इसकी निरन्तरता कभी समाप्त नहीं होती है कब किस रूप में हमें पुरा सम्पदा मिल जायेगी इसकी जगह तिथि निर्धारित नहीं है उसके रूप माध्यम अलग-अलग हो सकते हैं। भारत में इसकी अपार संभावना है।

- **पुरातत्व संग्रहालय और उनके रख-रखाव के बारे में भी बात करना चाहूँगा यह संपूर्ण प्रक्रिया क्या है ?**

- संग्रहालय कई प्रकार के होते हैं। राष्ट्रीय संग्रहालय, राज्य संग्रहालय, विश्वविद्यालय संग्रहालय, जिला संग्रहालय, व्यक्तिगत संग्रहालय इत्यादि शामिल है। संग्रहालयों में हमारे पूर्वजों की युगयुगीन धरोहर प्रदर्शित होती है। जिसमें हम हर क्षेत्रों की संस्कृति को देख सकते हैं। हमें उस क्षेत्र विशेष की एक ही जगह संपूर्ण पुरातात्विक जानकारी मिल जाती है। इसका रख-रखाव संबंधित संस्थान विधिवत तरीके से करते हैं। कई बार राष्ट्रीय महत्व की सामग्रीयां देश के संग्रहालयों में रखी जाती है जिससे उसकी सुरक्षा तथा दर्शकों को भी अवलोकन का लाभ मिलता है।

- **अभिलेखागार पुरातत्व का क्या काम होता है ?इस दिशा में शासन की क्या पहल है। पुरातत्व खोज को प्रोत्साहित करने हेतु शासन की कोई नीति बनी हो क्योंकि आपका संबंध इस विभाग से भी रहा है।**

– पुरातत्व से संबंधित एक अलग शाखा होती है उसमें प्राचीन अभिलेख रखे जाते हैं जिनका महत्वपूर्ण दस्तवेजीकरण होता है तथा लिखित रूप में दस्तावेज होते हैं। विशेष रूप से इसमें पत्राचार लेख, यात्रा विवरण भी होता है इसकी महत्ता को देखते हुए अलग से अभिलेख शाखा बनाई गई है जिसमें सभी प्रकार का संपूर्ण रेकॉर्ड होता है।

- **इस क्षेत्र में युवा वर्ग का रूझान कैसा है ? क्या इस क्षेत्र में भविष्य और स्कोप है युवा पीढ़ी को इस संबंध में दिशा निर्देश देना चाहेंगे ?**

– बहुत कम युवा वर्ग है जिनका रूझान इस ओर है यदि युवा इस क्षेत्र में मेहनत करना चाहता है उसके पास पैसेन्स है तो भविष्य उज्जवल है रोजगार की प्रबल संभावना भी है। विद्यार्थी यदि एम.ए. पुरातत्व विज्ञान में करने के पश्चात पुरातत्व में डिप्लोमा करते हैं तो रोजगार की संभावना केन्द्र व राज्य पुरातत्व विभागों में अवसर प्राप्त हो सकते हैं पुरातत्व एक एडवेंचरस विषय है जितनी खोज करोगे उतना आनंद और उपलब्धि हासिल होगी इससे इतिहास को नये अवसर और राह मिलेगी।

- **सुना है आपको ढ़ेरो सम्मान और उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं यह सिलसिला अनवरत जारी है यह बहुत खुशी की बात है इसके पीछे आप क्या मानते हैं ?**

– मुझे कई पुरातत्वीय क्षेत्रों में सम्मान मिले है चित्रकला के क्षेत्र में संग्रह के क्षेत्र में जिसमे पुरातत्व का हिन्दी में शोधकार्य करने पर विभाग में पुरातत्व के कुछ क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने पर भी मिले हैं इसके पीछे में पुरातत्वीय कार्यों के प्रति अपनी पूर्ण संबंद्धता समर्पित होना मानता हूँ।

- **आधुनिक युग में पुरातत्व की क्या स्थिति है ?**

– आधुनिक युग में लोग पुरातत्व के प्रति बहुत जागृत हुए है इसका प्रमुख माध्यम आज का मीडिया है उससे हमारी धरोहरों का बहुत प्रचार-प्रसार हुआ है। एक और अन्य कारण पर्यटन क्षेत्र भी हैं जिससे पर्यटन को बहुत बढ़ावा मिला है परन्तु अन्य देशों की तुलना में इतना विकास अभी भी नहीं हुआ है।

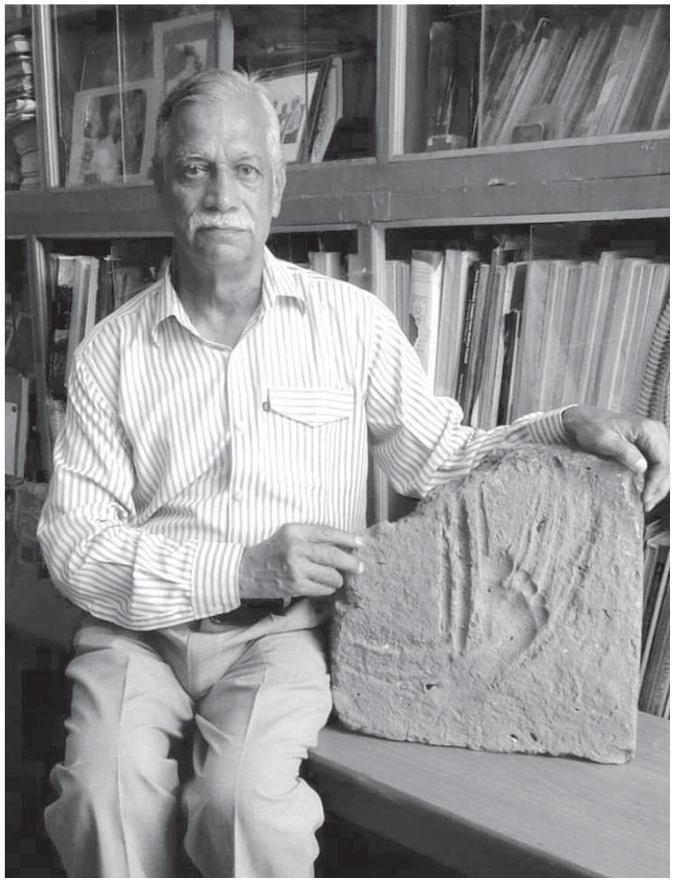

- **पुरातत्व के क्षेत्र में कोई इच्छा बाकी है जिस पर काम होना बाकी है या संभावना है। जिस पर कार्य होना चाहिए ?**

– वर्तमान समय में बहुत विस्तार से पुरातत्व के क्षेत्र में अनुसंधान होना आवश्यक है। अभी नदियां, घाटियों की सभ्यताओं का पूर्ण रूप से सर्वे होना आवश्यक है जिसमें चंबल, नर्मदा, बेतवा इत्यादि है। प्रयास तो हो रहा है परन्तु अभी और आवश्यकता है।

- **आपके पास जैसा में देख रहा हूँ। अपूर्व विशाल भंडार है। विभिन्न दस्तावेजों, सम्मानों विभिन्न संस्थानों के सदस्य आपके ग्रंथों को लेकर उम्र के इस पढ़ाव पर कुछ सोचा है आपकी यह विशाल धरोहर विरासत का आगे क्या होगा किसे इसका उत्तराधिकारी बनाने का सोचा है ?जिससे इसकी जीवन्तता बनी रहे और भावी पीढ़ी लाभान्वित होती रहे इस बारे में क्या कहना चाहेंगे ?**

– मेरे पास विभिन्न प्रकार का संग्रह है जिसमें प्राचीन ईंटे, मिट्टी के पात्र, जीवाश्म, पुरानी पुस्तकें, आदिमानव के पत्थरों के हथियार इत्यादि हैं ये सभी शोधकर्ताओं के काम की सामग्री है इनकी देखभाल के लिए उत्तराधिकारी ढूँढ़ रहा हूँ कोई मिल जाएगा ऐसा विश्वास है।

- **आपकी दीर्घ साधना के पीछे प्रेरणा, सहयोगी रूप में किसे मानते हैं जिनके बिना शायद यह साधना अधूरी सी रहती ?**

– मेरे जीवन में कई लोग आए जिनसे मुझे प्रेरणा मिली बचपन में मैं अपनी माताजी के साथ मंदिरों में जाता था वहां मैं मूर्तियां, चित्र इत्यादि देखा

करता था। उज्जैन, ग्वलियर में था उस समय के मंदिरों के पुराने स्तंभों, मूर्तियां देखा करता था। प्राचीन सिक्के, डाक टिकिट, पुरानी पुस्तकों का संग्रह करना पिताजी से सीखा उन्होंने मुझे बहुत सिक्के भी दिए थे। पुरातत्व के क्षेत्र में पूर्ण रूप से आने का श्रेय गुरू डॉ. वाकणकर को है। चित्रकला का ज्ञान लेते-लेते पुरातत्वेत्ता हो गया। इस क्षेत्र में पूर्ण रूप से आगे बढ़ने का सहयेाग मेरी पत्नी साधना व्यास ने दिया।

- **कोई संदेश जो अनुभवों से भरा हुआ हो ?**

– पुरातत्व एक ऐसा क्षेत्र है जिसके माध्यम से हम हमारी धरोहरों, पुरा सम्पदा को सामने ला सकते हैं जिससे हमें ज्ञात होता है कि हम कितने विकसित थे। सम्पन्नता के कारण ही हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाता था। अनुसंधान खोज एवं पुरातात्विक उत्खन्न किये जाने के लिए बहुत जोखिम उठाना पड़ता है। जंगलों में भटक जाना मधुमक्खियों का हमला, रानी की वाव में गिरने से बचना इत्यादि जोखिम मैंने भी झेले हैं।

- **हमें अपनी निजी भूमि पर व्यक्तिगत निर्माण में भी कुछ पुरा सम्पदाएं खुदाई के दौरान मिल जाती हैं ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए हमारा क्या कर्तव्य है उस धरोहर पर किसका अधिकार होता है ?इस स्थिति को स्पष्ट करना चाहेंगे ?**

– हम जब कभी अपनी निजी जमीन पर कुछ निर्माण करते हैं कुआं खुदवाते हैं या अन्य प्रकार की खुदाई करते हैं उसमें कोई पुरावस्तु, मूर्ति या सिक्के मिलते हैं उस पर हमारा अधिकार नहीं होता है उस पर सरकार का अधिकार होता है क्योंकि वे इतिहास बताती हैं, इंडियन ट्रेजररोव एक्ट के अंतर्गत जिले के जिलाध्यक्ष सामग्री अपने अधिकार में लेता है छः इंच जमीन के नीचे की पुरा सम्पदा शासकीय मानी जाती है। हमें इसकी सूचना जिलाध्यक्ष या संबंधित अधिकारी को देना चाहिए जिससे हम इतिहास की नई कड़ी को जोड़ सके यह हमारा नैतिक कर्तव्य भी है।

- **जैसा ही हमारा इतिहास कहता है हमारी बहुत सारी पुरा सम्पदा विदेश में चोरी होकर चली गई है उसकी हमें जानकारी भी हो गई है क्या इस दिशा में कोई प्रयास किये गये है या किये जा रहे हैं जैसे कोहिनूर की चर्चा आम है ?**

– हमारी बहुत सी पुराविधियां विदेशों में चली गई है। दुनिया का कोई ऐसा संग्रहालय नहीं होगा जिसमें भारतीय पुरानिधियां या प्रतिमाएं न हो कई पुरा वस्तुएं अभी सरकार के अथक प्रयास से वापस भी आई हैं। यदि हमारे पास चोरी होने के पक्के प्रमाण है तो यूनेस्को या अन्य संबंधित एजेंसी के माध्यम से वापस ला सकते हैं। कोहिनूर हीरे के लिए सरकार में अवश्य प्रयास किया परन्तु सफलता नहीं मिली है।

- **अंतिम प्रश्न इस क्षेत्र के विद्वान पुरातत्ववेत्ताओं में आप प्रमुख किन्हें मानते हैं उनका योगदान उनके द्वारा इस क्षेत्र में उपलब्धि युवाओं के लिये कोई गुरू तुल्य सीख के साथ आपके खट्टे-मीठे अनुभवों को भी सुधी पाठकों के बीच साझा करना चाहेगे ?18 अप्रैल को पुरातत्व दिवस मनाने की कोई खास वजह भी बताना चाहेंगे ?**

– आजादी के पश्चात पुरातत्वविदों ने अथक प्रयास करके सिंधु सभ्यता के पुरावशेषों की भारत में खोज की है। पहले मोहन जोदड़ों, हड़प्पा एवं

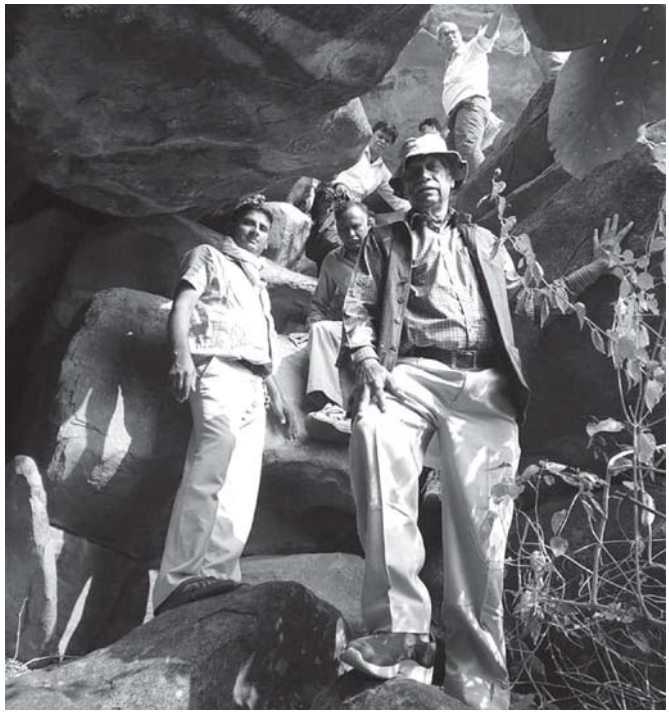

अन्य कई स्थान यहां थे वे सभी पाकिस्तान में है। इस क्षेत्र में प्रो. बी.बी.लाल ने महत्वपूर्ण खोज की उनकी उम्र का 100 वां साल अभी लगा है। उनकी महत्वपूर्ण खोज है। शैलचित्र कला के क्षेत्र में डॉ. वाकणकर ने सर्वाधिक कार्य किया। वे मेरे गुरू भी रहे हैं। पुरातत्व का ज्ञान मैंने उन्हीं से प्राप्त किया है। भीमबैठका उनकी प्रमुख खोज है। वाकणकर जी के चित्रकला में कई विद्यार्थी थे मैं भी था। परंतु पुरातत्व के क्षेत्र में मै केवल अकेला ही था। जैसा कि मैंने बताया कि पुरातत्व के क्षेत्र में काम करना, याने जोखिम भी उठाना है। रानी की वाव, पाटन, गुजरात में काम करते समय एक बार मचान टूट गया था, तथा ऊपर से गिरने से बचा। कठोतिया ग्राम में मेरे ऊपर मधुमक्खियों का जबरदस्त हमला था। मुझे लगभग 60-70 मधुमक्खियों ने शोध कार्य के समय काटा हुआ। ईश्वर कृपा से बच गया। जंगलों में रास्ता भटकना, जानवरों का सामना करना, भूख प्यास से परेशान होना। पुरातत्व में अनुसंधान के समय इस प्रकार की कठिनाई आती है। परंतु हमें इस क्षेत्र में पुरातत्वविदों को लाना चाहिए। धरोहर के प्रति जनता को जागरूक करना होगा। इसलिए हमेशा 18 अप्रैल को विश्व धरोहर दिवस एवं 19 से 25 नवम्बर को विश्व धरोहर सप्ताह मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य धरोहरों के प्रति सभी को जागरूक करना ताकि भावी पीढ़ी को ये धरोहर यथावत मिल सके।

संयुक्त राष्ट्र संघ की एक संस्था यूनेस्को ने संपूर्ण विश्व में 18 अप्रैल को विश्व धरोहर दिवस मनाए जाने का निर्णय लिया है। यह दिवस हमने 19 अप्रैल, 1988 से मनाया जाना प्रारंभ किया था, जिसे अब तक मनाते आ रहे हैं। विश्व धरोहर सप्ताह केवल भारत में ही आयोजित होता है। अतः हम सभी को हमारे पूर्वजों की धरोहर को सुरक्षित रखने का संकल्प लेना चाहिए। हमारे घरों में भी पुरानी पुस्तकें, चित्र इत्यादि रहते हैं। हमें उन्हें भी संभाल कर रखना चाहिए।

■

जीवन-वृत्त

# डॉ. नारायण व्यास का जीवन-वृत्त

**नाम :**

डॉ. नारायण व्यास

**पिता :**

वैद्य (स्व.) श्री अनन्त लाल जी व्यास (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी)

**जन्म :**

5 जनवरी, 1949 (उज्जैन, म.प्र.)

**प्रेरणा स्त्रोत :**

पुरातत्व, चित्रकला एवं साहित्य के क्षेत्र में गुरूवर पद्मश्री डॉ. वि.श्री वाकणकर तथा पिता श्री (स्व.) अनन्त लाल व्यास से प्रेरणा

**शिक्षा :**

- डी.लिट् (रायसेन जनपद तथा भीमबैठका की शैल चित्रकला), भोपाल 2005
- पीएच.डी. (रानी की वाव, गुजरात) भोपाल, 1992
- एम.ए. (प्राचीन भारतीय इतिहास, एवं संस्कृति) 1970, उज्जैन

**अन्य शिक्षा :**

- धर्मरत्न, 1962
- इन्टरमिडिएट ग्रेड ड्राईंग परीक्षा, 1965, उज्जैन
- चित्रकला का तीन वर्षीय डिप्लोमा, 1968, उज्जैन
- स्नातकोत्तर (डिप्लोमा), पुरातत्व, 1972, नई दिल्ली

**सेवानिवृत्त पद :**

अधीक्षण पुरातत्वविद्, मंदिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (भारत सरकार), भोपाल

**अनुभव :**

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में 1972 से जनवरी 2009 तक कार्यरत। अपने 37 वर्षों के कार्यकाल में मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, दमन-दीव, राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र राज्य में पुरातत्वीय उत्खनन, अनुसंधान, संरक्षण कार्य इत्यादि कार्यों का अनुभव।

**पुरातत्वीय उत्खनन :**

मेरे द्वारा निम्न पुरातत्वीय उत्खनन में भाग लिया गया है –
भीमबैठका, पुराना किला, नई दिल्ली, रायसेन किला, बेसनगर (विदिशा), ताम्रयुगीन स्थल रंगई (विदिशा), बीजामण्डल, विदिशा, गोरज (बड़ौदा), फतहपुर सीकरी, आगरा, थानेसर, हरियाणा, शैलकृत, मन्दिर, धार, सतधारा, सांची, कुतवार (मुरैना), बरहट, स्तूप, रीवा, खजुराहो के टीले, सीरपुर (रायपुर), दरकी चट्टान, भानपुरा, (मंदसौर), बेसनगर, सतधारा, तथा सांची की शोधपूर्ण उत्खनन रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा शीर्घ प्रकाशित की जा रही है।

प्रकाशन :

- शोध ग्रंथ, अभिनंदन/स्ममृति ग्रंथ, दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिकाओं में अब तक 100 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित तथा कुछ शोध पत्र प्रकाशन में है।
- भीमबैठका-भोजपर पर लघु पुस्तक प्रकाशित (1996)
- भीमबैठका (विश्व धरोहर स्थल) पर लघु पुस्तक प्रकाशित (2005), (2008)
- 'मन की पतवार' काव्य संग्रह प्रकाशित
- मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल के लिये 'मध्यप्रदेश की आदिमानव की शैलचित्रकला' पर पुरातत्व की स्नातकोत्तर कक्षा के लिये 120 पृष्ठों की मेरे द्वारा तैयार पाण्डुलिपि प्रकाशन हेतु प्रदाय की।
- आकाशवाणी भोपाल से वार्ताएं, तथा अन्य पुरातत्व विषयक 'हैलो आकाशवाणी' का समय-समय पर प्रसारण

- हस्तलिखित ग्रंथ 'मंजूषा' का वर्ष 1993 से 2004 तक संपादन, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल मण्डल, भोपाल
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल मण्डल द्वारा 'मंजूषा' वर्ष 2002, 2003 में प्रकाशन।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल एवं रायपुर मण्डल के अन्तर्गत स्मारकों पर आने वाले पर्यटकों के लिए हिन्दी भाषा में भीमबैठका, मध्यप्रदेश की धरोहर, सीरपुर, मल्हार, रतनपुर, पाली, खरोद, जांजगीर के स्मारकों पर ब्रोशर्स का विभाग की ओर से प्रकाशन।
- मंदिर सर्वेक्षण परियोजना के अंतर्गत मंदिर स्थापत्य पर त्रैमासिक शोध पत्रिका 'कलश' का प्रकाशन एवं संपादन।

**सम्मान एवं उपलब्धियां :**

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (भारत सरकार, गृहमंत्रालय, राजभाषा विभाग) द्वारा रू. 10,000/- का नगद पुरस्कार (1995)
- मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल द्वारा प्रथम 'विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान' तथा रू. 1001/- की सम्मान राशि प्रदत्त, (1995)
- पद्श्री डॉ. वाकणकर शोध संस्थान, उज्जैन द्वारा पुरातत्व के क्षेत्र में किये गये शोध कार्यो पर 'सारस्वत सम्मान' स्मृति चिन्ह तथा रू. 2001/- की सम्मान राशि प्रदत्त।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल मण्डल में विभागीय कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग किये जाने पर समय-समय पर नगद पुरस्कार प्रदत्त।
- पांच राज्यों (मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, गोवा, गुजरात) में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी प्रयोग किये जाने पर तत्कालीन महामहीम राज्यपाल मो.सफी कुरैशी द्वारा शिल्ड प्रदत्त (1995)
- अखिल भारतीय कालिदास चित्रकला एवं मूर्तिकला, प्रतियोगिता, उज्जैन में वर्ष 1974 तथा 1976 में विशेष प्रशसंनीय पुरस्कार प्राप्त।
- माधव महाविद्यालय उज्जैन में आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर डॉ. हरिवंशराय बच्चन द्वारा पुरस्कृत (1967)
- पुरातत्व के क्षेत्र में शोध कार्य के लिये अखिल भारतीय संस्कृति परिषद द्वारा 'भर्तृहरी सम्मान', उज्जैन वर्ष 1997
- भारती कला भवन, उज्जैन में सारस्वत सम्मान, वर्ष 1997
- महारानी लक्ष्मीबाई संस्थान, भोपाल द्वारा महाभाष्य के रचियता महर्षि पतंजलि पर आयोजित सेमिनार पर शॉल एवं श्रीफल से सम्मान।
- संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पुरूतत्व के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय कार्य के लिये वर्ष 2012 में सम्मान

**अन्य कार्य :**

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल, बड़ौदा कार्यालय में मेरे द्वारा समय-समय पर हिन्दी विकास के लिए कार्यशालाएँ आयोजित की गई।
- म.प्र. के विश्वधरोहर स्मारकों, सांची, खजुराहो तथा भीमबैठका के विश्वधरोहर सप्ताह तथा दिवस पर जनजागरण के लिये कार्यशाला, कार्यक्रम तथा प्रदर्शनियाँ लगाई गई ताकि अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को स्मारकों एवं सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति जागरूकता, के लिये समय-समय पर कार्य किये गये।
- संसदीय राजभाषा समिति का बड़ौदा मण्डल (गुजरात) तथा भोपाल (म.प्र.) में हम लोगों द्वारा हिन्दी में किये गये पुरातत्वीय कार्यों की जानकारी को अवलोकन करवाया।

**विशेष :**

- महापण्डित राहुल सांकृत्यायन द्वारा उनकी पुस्तक 'पुरातत्व निबंधावली' में मागधी भाषा के विकास विषयक लेख में महार्षि पतंजलि के जन्म स्थान गोनार्द (वर्तमान में भोपाल के निकट स्थित गोंदरमऊ ग्राम) उनके द्वारा बताया गया है। उक्त ग्राम की पुरातत्व के आधार पर प्रमाणिकता सिद्ध करने के लिए वहां समय-समय पर जाकर शोध कार्य किया है।
- आदिमानव की शैलचित्रकला के लिए प्रसिद्ध धरोहर स्थल 'भीमबैठका' (म.प्र.) को युनेस्कों द्वारा विश्व धरोहर श्रृंखला में लिये जाने के उच्च स्तर पर प्रयास किये जाने पर विश्व धरोहर श्रेणी में लिया गया है।
- फेडरेशन ऑफ इंटरनेशनल रॉक आर्ट आर्गनाईजेशन के भारत के अध्यक्ष डॉ. गिरीराज कुमार, आगरा के अनुसार शैल चित्रकला पर डॉ. व्यास की देश में सर्वप्रथम डीलिट् उपाधि।

**विदेश यात्रा :**

- भारत सरकार द्वारा सांस्कृतिक आदान प्रदान के अन्तर्गत नवम्बर 2005 में म्यांमार (बर्मा) भेजा गया जहां पर भारतीय सांस्कृतिक धरोहर विशेष रूप से बौद्ध स्मारकों का म्यांमार में कई स्थलों पर प्रचार किया तथा किस प्रकार से वहां के बौद्ध स्मारकों का विकास किया जाये इस हेतु योजना बनाई जा रही है। इसके साथ ही सांची, सतधारा इत्यादि बौद्ध स्मारकों के विषय में व्याख्यान किये।
- 2015 में शैलचित्र कला का अद्यतन, स्पेन में।

वर्तमान में :

मेरे द्वारा पुरातत्व पर एकल शोध केन्द्र खोला गया है जहाँ शोध करने वाले छात्र/विद्यार्थी तथा अन्य शोधार्थी शोध कार्य हेतु समय समय पर मार्गदर्शन लेने के लिए आते हैं।

- राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में एडवाईजरी कमेटी के सदस्य।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली, वेल्यूएशन कमेटी के सदस्य।
- राष्ट्रीय अभिलेख समिति, राष्ट्रीय अभिलेखाकार नई दिल्ली में सदस्य।
- आजीवन सदस्य, रॉक आर्ट सोसायटी ऑफ इण्डिया, आगरा।
- इतिहास संकलन समिति में सदस्य ।

**सम्पर्क :**

निवास : 95, फाईन एवेन्यू फेस-1, नयापुरा, कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.) 462042, मो. 9425600143

■

पुराकला पर एक साक्षात्कार
डॉ नारायण व्यास से इतिहासकार ललित शर्मा की बातचीत

# पुरातत्व के यशस्वी साधक - डॉ. नारायण व्यास

राजस्थान की मरूधरा के निवासी और मध्यप्रदेश में निवास कर रहे तथा महान पुरातत्ववेत्ता डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के प्रथम शिष्य डॉ. नारायण व्यास देश के उन पुरातत्वविदों में है जिन्होंने अपने गुरु के सानिध्य में बहुत कुछ सीखा तथा अनवरत भारतीय संस्कृति के विविध आयामों की सेवा में अपना जीवन ही समर्पित कर दिया भारत सरकार के अनगिनत सांस्कृतिक और पुरातात्विक सम्मानों से विभूषित डॉ. व्यास ने अपनी पी.एच.डी. जिस प्रसिद्ध 'रानीजी की वाव' (गुजरात) पर की वह ना केवल आज भारत सरकार के 100रूपये के नोट पर अंकित है वरन विश्व यूनेस्को धरोहर में भी शामिल की गई है। यह सब डॉ. व्यास की गहन शोध से सजी इस वाव की शिल्पकला पर की गई अथक मेहनत का ही परिणाम है।

भोपाल में आपका आवास आज एक पुराकला संग्रहालय है जहां उनके द्वारा की गई शोध उत्खनन की नायाब सामग्री संग्रहित है। बेहद सरल, सभी के प्रिय डॉ. नारायण दादा पर केन्द्रित कला समय के इस अंक में उनसे पुरातत्वकला पर जो विचार साझा किये वे यहां प्रस्तुत है।

● **यहां यह उल्लेखनीय होगा कि नारायण दादा, पद्मश्री वाकणकर जी के सबसे प्रथम शिष्य रहे तो संयोग से मैं स्वयं गुरूजी का सबसे छोटा व अन्तिम शिष्यों में से एक अकिंचन शिष्य रहा हूं। अत: यह साक्षात्कार भी एक विरल संयोग ही है। आप श्रद्धेय गुरुजी ( डॉ. वाकणकर जी ) के प्रथम और पट्ट शिष्यों में जाने जाते है। आज भी आप उनके कार्यों को जमीनी तौर पर आगे बढ़ा रहे है, इस बारे में क्या कहेगें ?**

– आपने सही बात पूछी है। गुरूजी के सानिध्य में चित्रकला के कई विद्यार्थी थे परन्तु पुरातत्व में सबसे प्रथम मैं ही रहा। बात 1962-1963 की है जब मेरे पिता उज्जैन में आर्य समाज के कार्यकर्ता थे वे वाकणकर जी को वैदिक प्रवचन हेतु आमंत्रित करते थे इसी क्रम में एक समारोह में पिताजी मुझे भी ले गये क्योंकि तब मैं भी चित्र बनाता था। इसी समय पिताजी ने मुझे वाकणकर जी से मिलवाकर उनसे मुझे शिष्य बनाने का आग्रह किया। उन्होंने अगले दिन मुझे भारती कला भवन (उज्जैन) आने का आदेश दिया। मेरे जाने पर वहीं विधिवत मेरा चित्रकला का प्रशिक्षण आरम्भ हुआ। वाकणकर जी ने ही मुझे कला भवन से इन्टरमिडियट एवं 3 वर्ष का डिप्लोमा करवाया इस प्रकार गुरूजी के सतत सम्पर्क में रहने से मुझे फिर पुरातत्व विषय में रूचि बढ़ने लगी। वहां जब मैंने मिट्टी के पात्र, मूर्तियां, सिक्के,पाषाण उपकरण देखे तो

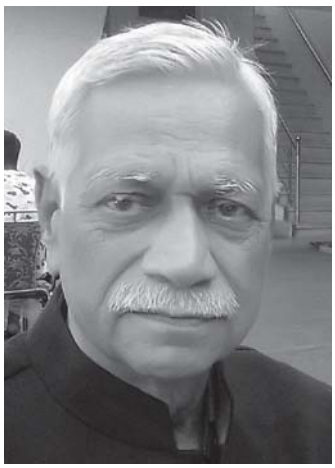

मेरा उत्तरोत्तर लगाव होता गया यह देखकर गुरुजी ने मुझे पुरातत्व में स्नातकोत्तर हेतु आदेशित किया और 1970 ई. में मैंने वह पूर्णकर उनके सहयोग से इसी विषय में दिल्ली से डिप्लोमा भी किया। उसी समय उनके द्वारा (वाकणकरजी) भीम बैठका के उत्खनन की तैयारी चल रही थी अत: वे मुझे वहीं ले गये इस दौरान मैं उनके साथ ट्रेनर के रूप में अनेक स्थानों पर गया था उनका विषय पुराकला के शैलचित्र था। वे इसी को आगे बढ़ाना चाहते थे मैं फिर उनके सहयोग से ही भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग में आया मैं उन्हीं के साथ शैलकला पर सर्वेक्षण कार्य करता था। उनके साकेतवास के पश्चात् उनके ही शेष कार्य को मैं समयानुसार अभी कर रहा हूं। 2005 ई. में मैंने शैलचित्र कला की भावों भंगिमाओं पर डी.लिट्. भी पूरी की मेरा मानना है कि मानव भले ही चला जाता है परन्तु उसका कार्य कभी समाप्त नहीं होता है उसकी प्रज्वलित मशाल को थामने वाले आ ही जाते है। इस क्रम में मेरा भी यही कार्य है।

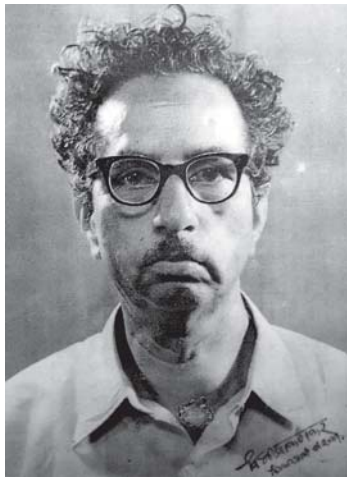

● **पुरातत्व शास्त्र आपकी भाषा में क्या है ?**

– दरअसल वास्तव में पुरातत्व एक सांईस (विज्ञान) है। किसी भी पुरावस्तु, स्मारक अथवा कोई भी उत्खनन में प्राप्त पुरावस्तु का वैज्ञानिक पद्धति से जो तीक्ष्ण विश्लेषण होता है, उसी को पुरातत्व विज्ञान कहा जाता है मिट्टी का विश्लेषण, उसके साथ मिलने वाली वस्तु (सामग्री) उसका काल (समय) निर्धारित करती है। उत्खनन में बहुधा हड्डी, लकड़ी, कोयला, जला अन्न मिलता है तब उसकी 'कार्बन डेटिंग' वैज्ञानिक करते है अत: पुरातत्व को विज्ञान सम्मत ही माना जाता है हां, यह बात दीगर है कि यह विषय या कार्य बहुत कठिन तथा आम व्यक्तियों की धारणा से बहुत दूर है।

● **वाकणकर जी के साथ आपने किन स्थलों की खोज की तथा उस दौरान क्या अनुभव रहे ?**

– जब मैं स्नातकोत्तर पुरातत्व में कर रहा था। वाकणकर जी मुझे पुरातत्व पढ़ाया करते थे और समय निकालकर मैं उनके साथ दंगवाड़ा, खनीजा, तराना, महीदपुर, करोहन, छायन, पिपलोद, द्वारकाधीश, नलखेड़ा

सहित लखुन्दर नदी के क्षेत्र में गया था इसके अलावा राजस्थान में प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ के क्षेत्र में भी गया था। ये स्थल प्रमुख रूप से ताम्रयुगीन सभ्यताओं से सम्बन्धित थे। वाकणकरजी के एक शिष्य जगदीश गांधी ने जब प्रतापगढ़ उन्हें वहां के एक स्तम्भ लेख के अध्ययन हेतु आमंत्रित किया था तब मैं भी उनके साथ था तब यह अनुभव रहा कि हम रात में रेल से मन्दसौर पहुंचे परन्तु वहां से प्रतापगढ़ जाने का कोई साधन नहीं मिला अत: वहीं स्टेशन पर अखबार बिछाकर हम सो गए। अगले दिन सवेरे हम फिर बस द्वारा प्रतापगढ़ पहुंचे परन्तु वहां भी हम साईकल चलाकर अंचलेश्वर स्तम्भ एवं वहां के अन्य पुरावशेष देखने गये थे। यह एक विचित्र अनुभव रहा। हां, यात्रा के समय वे सदैव स्केच बुक साथ रखते थे तथा स्थान या अवशेष के स्वयं स्केच बनाते थे।

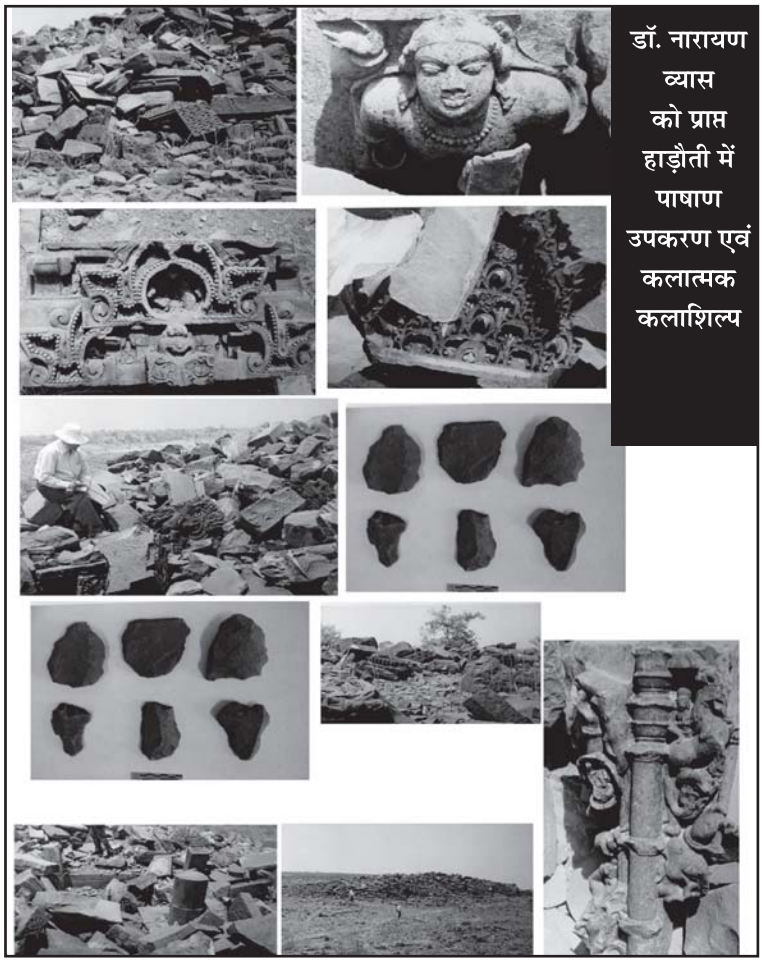

डॉ. नारायण व्यास को प्राप्त हाड़ौती में पाषाण उपकरण एवं कलात्मक कलाशिल्प

● **पुरातत्व के क्षेत्र में आपकी मौलिक खोज क्या रही है ?**

– भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में आने के बाद मेरा पदस्थापन भोपाल, सांची, आगरा, बड़ोदरा, रायपुर, नागपुर और पुन: भोपाल क्षेत्र का रहा। इस दीर्घावधि में इन क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के पुरावशेष, प्राचीन मूर्तियां, मन्दिर भग्नावशेषों को प्रकाश में लाने का कार्य किया इसका प्रकाशन इण्डियन आर्कियालोजी में विश्वस्तर पर 1968 से 2005 ई. के मध्य हुआ गुजरात के निकट केन्द्र शासित प्रदेश 'द्वीव' क्षेत्र का मैंने पुरातत्वीय सर्वेक्षण किया मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में मुझे अनेक शैलचित्र मिलेमेरा प्रमुख कार्य गुजरात में विश्व प्रसिद्ध 'रानीजी की वाव' पर रहा। यहां मैंने उत्खनन भी किया और इसी पर पी.एच.डी. भी की आज भारत के सौ रूपये के नोट पर यहीं 'वाव' आप देख सकते है मैंने इसी वाव पर 1500 से भी ज्यादा मूर्तियों का डाक्यूमेन्टेशन भी किया था। यह मेरे जीवन का सबसे अनुपम कार्य है। (ज्ञातव्य कि 'रानीजी की वाव' आज विश्व यूनेस्को धरोहर के रूप में अधिकृत है।)

● **हाड़ौती प्रदेश में आपकी खोज तथा उसके पुरा महत्व पर बताने का कष्ट करें।**

– 1972 ई. में जब पदस्थापन भोपाल में हुआ तब सबसे पहले मुझे हाड़ौती के कृष्ण विलास (कन्यादह) की मूर्तियों के डाक्यूमेन्टेशन करने भेजा गया मैं नया था अत: पहले बारां के रामपुरिया गया और वही से पैदल चलकर कृष्णविलास गया। कोई साधन भी नहीं था, मैं लगभग वहां एक माह रहा तथा अनेक मूर्तियों पर डाक्यूमेन्टेशन का कार्य किया यह स्थल उस समय कोटा जिले में था। कृष्णविलास क्षेत्र में मैंने कई शैलाश्रय देखे परन्तु दुर्भाग्य से उनका विवरण प्रकाशित न हो पाया1980-81 ई. में मैं पुन: वहां गयां जिसमें कपिलधारा के शैलाश्रयों का भी सर्वे किया हाड़ौती में बून्दी के ओम कुक्की के साथ कई टीले व शैलाश्रय देखे तथा नमाना, गरड़दा का अवलोकन किया। झालावाड़ में 2008ई. में काकूनी, भीमगढ़ के साथ बारां के अटरू क्षेत्र का सर्वेक्षण किया। वहां बहुत से कलात्मक मन्दिरों के अवशेष थे परन्तु कृष्ण विलास की बात सबसे अलग है। मुझे इस व्यापक भ्रमण से यह लगा कि हाड़ौती क्षेत्र प्राचीन भारतीय कला,पुरातत्व के क्षेत्र में अपना विशिष्ठ स्थान रखने में समर्थ है।

● **शैलचित्र एवं पुरातत्व विधियां आपकी भाषा में क्या है ?आज की शिक्षा तथा समाज में इनका क्या उपयोग है ?**

– पुरातत्व की निधियां एवं शैलचित्र वास्तव में हमारे पुरखों की धरोहर है, जैसे उन्होंने हमें दी वैसे ही हमें उन्हें सहेजकर भावी पीढ़ी के लिये रखना है। वे निधियां अनेक प्रकार की होती है। शैलचित्र कला भी उसी निधि का अंग है। यह हमारे देश की लोक संस्कृति का भी प्रतिनिधित्व करती है। पाषाण युग के अन्तिम चरण में अर्थात् उत्तर पाषाण काल में शैलचित्र बनना आरम्भ हुए जो सतत रूप में 15वीं, 16वीं सदी तक प्रचलन में रहे। लोग भी शैलाश्रयों में निवासरत रहे परन्तु परम्परा अगाध गति से चलती रही। पूर्व में शैलाश्रयों को पाषाण की दीवारों पर बनाया जाता था। कालान्तर में परम्परागत रूप से ये लोक में आकर ग्रामों की झोपड़ियों की दीवारों पर बनाने लगे ग्रामवासी शिक्षित होकर शहर में बसने लगे परन्तु परम्परा वहां भी प्रारम्भ रही। विषय वस्तु, रंग भी वहीं रहे लेकिन शैली में विकास और पतन भी आया। शैलचित्र बनाने में गेरू, सफेद, खडिया, पीला रंग (जिसे रामरज या पेवड़ी कहते है) काले रंग का प्रयोग कम हुआ। नर्मदा घाटी, बेतवा की घाटी के शैलचित्रों में हरा, लाल व सफेद रंग अधिक प्रयोग किया गया इसके विपरीत चम्बल घाटी के हाड़ौती क्षेत्र में लाल रंगों का प्रयोग अधिक देखने में आया है। प्राचीन समय में मानव पाषाण की भित्तियों पर चित्र उकेर कर अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता था। वह जो प्रत्यक्ष देखता, अनुभव करता, वही उकेरता

था। शिकार, नृत्य, युद्ध, अलंकरण आदि चित्रण इसलिये अधिक मिलता है इनमें आरम्भिक चित्र आखेट एवं नृत्य के है। युद्ध के चित्र परवर्ती है। इस प्रकार ये चित्र हमारी सांस्कृतिक निधियां है अन्य पुरामहत्व की निधियों में मुद्राएं, मूर्तियां, स्मारक, हस्तलिखित ग्रन्थ, लघुचित्र, हथियार, हाथीदांत की वस्तुएं आती है। पुरानिधियां कम से कम 100 वर्ष पुरानी या उससे पूर्व की ही मान्य होती है। इनमें से अनेक निधियां हमारे घरों में होती है परन्तु लोग इसका महत्व नहीं समझते अत: बड़ो को इसका महत्व समझकर अपने बच्चों को इसके प्रति जागरूक करना होगा यह सबसे बड़ा दायित्व है।

- **पुरानिधियों को नष्ट होने से बचाने हेतु क्या उपाय किये जा सकते है?**

– बहुत सी प्राचीन पुरा धरोहर अज्ञानवश नष्ट हो रही है। उन्हें सुरक्षित रखने के लिये केन्द्र एवं राज्य सरकार ने बकायदा नियम बनाकर पुरास्थलों तथा स्मारकों को सुरक्षित किया है तथा उन्हें संरक्षित भी किया है। अनेक स्थानों पर संग्रहालय भी बनवाये है जिनमें अलभ्य पुरानिधियां प्रदर्शित है। विभाग द्वारा 'एण्टिक्वीटीज एण्ड आर्ट ट्रेजर' कानून के तहत पुरावस्तुओं का रजिस्ट्रेशन भी किया जाता है। इनमें धरों में रखे ताम्रपत्र, मूर्तियां पुराने चित्रों व अन्य वस्तुओं का रजिस्ट्रेशन होता है इससे पुरावस्तु सुरक्षित होती है। पुरातत्वसंघ, राज्य, केन्द्र सरकार भी जगह जगह कार्यशालाओं का आयोजन करती है इसके साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि आज के दौर में प्रत्येक विद्यालय में विद्यार्थियों को पुरावस्तुओं का महत्व बताना होगा तभी जाग्रति आयेगी और हमारी निधियों को सुरक्षित रखा जा सकेगा।

- **पुरावस्तुओं की खोज तथा उनका काल निर्धारण कैसे किया जाता है?**

– पुरावस्तुएं मूक भाषा में बहुत कुछ कहती है। अत: हमें उनकी भाषा एवं भाव समझने के लिये उनसे स्नेह करना होगा। इन्हें समझने हेतु हमें पुरातत्व जीवन की साधना करना होगा धरोहर की खोज के लिए जान जोखिम में डालना होगा। नदी, घाटी, श्मशान, खण्डहर, जंगलों में जाना होगा। ग्रामीणों के बीच जाना होगा। प्राचीन काल का मानव वातावरण के आधार पर निवास करता था वह नदियों के किनारो शैलाश्रयों में वास करता था। अत: उसी संस्कृति के अवशेष वहीं पर मिलते है। ऐसे स्थलों पर उपकरण, मृदभाण्ड, चित्र, सिक्के, खिलौने प्राप्त होते है। यदि सामग्री महत्वपूर्ण हुई तो उत्खनन की योजना बनती है। टीलों पर फिर धीरे-धीरे उत्खनन किया जाता है। इसमें सबसे ऊपर की वस्तु वर्तमान (नयी) होती है। जैसे-जैसे नीचे की ओर उत्खनन होता जाता है वहां वहां प्राचीन वस्तुओं की प्राप्ति होती है। उनमें मुद्रा, लेख, मृदभाण्ड सहित रेडियो कार्बन डेटिंग की सामग्री कोयला, हड्डियां मिलती है तब उनका वैज्ञानिक काल निर्धारण किया जाता है। वैसे ही शैलचित्रों की कला का उसकी शैली, बनावट व तुलनात्मक अध्ययन से काल निर्धारण होता है।

- **इतिहास के उदीयमान लेखकों को आपका संदेश।**

– इतिहासकार एवं पुरातत्वविद् का आपसी बहुत सम्बन्ध होता है। पुरातत्ववेत्ता, उत्खनन से पुरानिधियां प्राप्त करता है, इतिहासकार उनके आधार पर हमारा प्राचीन गौरवमयी इतिहास तैयार करता है उत्खनन करना तथा इतिहास लिखना या तैयार करना बहुत ही ईमानदारी और कठिन परिश्रम का काम है क्योंकि आनेवाली एवं वर्तमान पीढ़ी उसी के आधार पर उसे ग्रहण करती है एक बार 1971 का वाक्या है। एक पुराने किले का उत्खनन चल रहा था। उसमें मैं भी था उसी समय किसी कार्यवश मुझे उज्जैन आना पड़ा। उसी दौरान मैं वाकणकर जी से मिला। बातों बातों में मैंने उत्खनन की चर्चा की तब उन्होंने मुझे उपदेश दिया 'नारायण' वहां ईमानदारी से काम करना क्योंकि तुम्हारे काम से ही इतिहास तैयार होगा 'किसी प्रकार का लालच नहीं करना वरना इतिहास गलत होते देर नहीं लगती' उनकी ये बाते आज भी मेरे मन मस्तिष्क में है। अत: मेरा सुधि विद्वान मित्रों से करबद्ध अनुरोध है कि पुरातत्व इतिहास को हवा में नहीं वरन् प्रमाणों के आधार पर लिखे। अपने स्वयं के मन से या किसी को प्रसन्न करने के लिये नहीं लिखे। जो भी पुरा निधियां प्राप्त हो उनकी सही जानकारी, नापतौल रखे अपने मन में यह भी कभी लालच न आने दे कि पुरावस्तु स्वर्ण की है या अन्य धातु की। लालच में स्वयं तो सुखी होगे परन्तु इतिहास का आने वाला क्षण समाप्त हो जावेगा। जिस प्रकार एक-एक बूंद से घड़ा भरता है उसी प्रकार ठीक एक-एक वस्तु से इतिहास तैयार होता है।

सम्पर्क: अमहद जैकी स्टूडियों, 15-मंगलपुरा झालावाड 326001
मो. 9079087965

आलेख

# वीणा का पुरातत्व

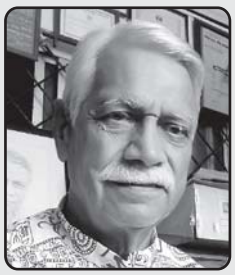

डॉ. नारायण व्यास

भारतीय संगीत विषयक वाद्य यंत्रों में वीणा का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। सर्वोत्तम तारों वाले वाद्य को ही वीणा या बीन कहते हैं। प्राय: इस वाद्य का निर्माण खोखले काष्ठ द्वारा किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि वीणा की आकृति पार्वती के शरीर के समतुल्य मानी जाती थी। पूर्व समय में इसकी अनुमानित लम्बाई दो हाथ दस अंगुल होती थी, सम्भवत: आज भी यही नाप हो सकता है, जिसमें दो स्टील तथा पाँच पीतल के तार होते हैं। प्राचीन काल से ही इस वाद्य का प्रयोग किन्नर, गन्धर्व तथा विद्याधर किया करते थे। इनके साथ ही कुछ प्रमुख देवी-देवताओं द्वारा भी वीणा का प्रयोग किया गया है। सरस्वती जिसे वीणापाणि भी कहते हैं तथा शिव को वीणाधारी प्रतिमा शिल्प में प्रदर्शित किया जाता था। नारद द्वारा नारायण की स्तुति वीणा बजाकर ही पूर्ण होती थी।

वैदिक साहित्य में वीणा वादकों के व्यवसाय के उल्लेख मिलते हैं महाजन पद युगीन साहित्य में आयुर्वेद, धनुर्वेद तथा वास्तुवेद के साथ संगीत (गन्धर्व वेद) की जानकारी प्राप्त होती है तथा विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों के उल्लेख मिलते हैं जिनमें वीणा, बाँसरी, दुन्दुभी प्रमुख है विष्णु धर्मात्तर पुराण, मार्कण्डेयपुराण, अंशुभेदागम में प्रतिमा शास्त्र के अन्तर्गत सरस्वती प्रतिमाओं का वर्णन मिलता है जिसमें उनके दो हाथों से वीणा वादन करने का उल्लेख मिलता है। भगवान शंकर की प्रतिमाओं के सौ से भी अधिक प्रकार मिलते हैं। उनकी दक्षिणामूर्ति के अन्तर्गत चार प्रकार की प्रतिमाएं होती हैं जो क्रमश: व्याख्यान मूर्ति, ज्ञानमूर्ति, योगमूर्ति एवं वीणाधर मूर्ति कहलाती है। दक्षिण भारत के मन्दिरों में विशेष रूप से वीणाधर मूर्ति काँस्य व पाषाण प्रतिमा के रूप में देखने को मिलती है।

शिल्प संहिता में अप्सराओं या सुर-सुन्दरियों की सैंतीस प्रकार की प्रतिमाओं के उल्लेख मिलते हैं। इनकी विभिन्न प्रकार के क्रिया कलापों से युक्त प्रतिमाएँ देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के आसपास मन्दिरों में देख सकते हैं। इनमें एक वीणा वादन करती अप्सरा भी होती है, जिसका शिल्प संहिता के अनुसार 'सरिता' नामकरण किया हुआ है। सामान्य रूप से प्रतिमाओं के ऊपरी परिकर भाग पर या देवताओं की प्रतिमाओं के पैरों के आसपास क्रमश: विद्याधर युग्म, गन्धर्व या परिचर वीणा वादन करते प्रदर्शित किये जाते थे।

भारत के विभिन्न प्रदेशों में वीणा वादन के उदाहरण शैलकृत गुफाओं की मूर्ति कला में, मन्दिरों में जड़ी प्रतिमाओं में, बाघ व अजन्ता गुफाओं की चित्रकला में, समुद्रगुप्त की स्वर्ण मुद्राओं पर शैल चित्रकला इत्यादि में देखे जा सकते हैं।

प्रारम्भिक उदाहरणों में आरम्भ में गुप्तकाल तक वीणा श्रृंगाकार, अर्धवर्तुलाकार व सरोदवाद्य यंत्र के समान देखने को मिलती है। इसमें सात तारों के प्रयोग का अंकन मिलता है जो आज भी सम्भवत: प्रचलन में है गुप्त काल के पश्चात् आकार-प्रकार में बदलाव प्रारम्भ हो जाता है । सातवीं-आठवीं शताब्दी से ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी के मध्य हुए प्रतिहार, पाल, कच्छपघात, चौहान, परमार इत्यादि शासकों के समय की मूर्तिकला में वीणा के आकार प्रकार में परिवर्तन दिखाई देता है जो कि आधुनिक वीणा के समान है। तेरहवीं शताब्दी के पश्चात् वीणा के समकक्ष सितार वाद्य का स्वरूप सामने आता है।

वीणा या उसके समकक्ष वाद्य का प्रथम उदाहरण शुंग कालीन कला के अन्तर्गत ई. पूर्व दूसरी शताब्दी में निर्मित भरहुत (जिला-सतना) स्तूप के एक वेदिका स्तम्भ पर देखने को मिलता है। स्तम्भ पर नारी आकृति को वीणा समान सात तारों वाले वाद्य का वादन करते हुए प्रदर्शित किया गया है। पवाया (जिला-ग्वालियर) के एक पाषाण सरदल पर नृत्योत्सव का दृश्य है जिसमें नृत्य करती स्त्री आकृति के आसपास वाद्यवृन्द करती कई स्त्री आकृतियाँ है। उनमें से एक आकृति लघु प्रकार की वीणा या उसके समान वाद्य यन्त्र लिये वादन कर रही है। इस दृश्य में ही एक श्रृंगाकार वाद्ययंत्र भी बताया गया है।

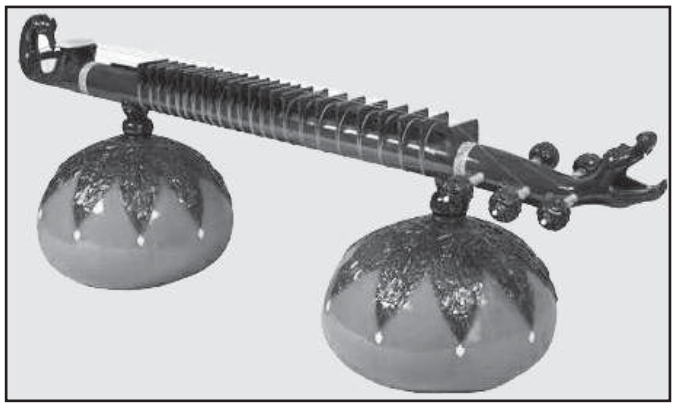

वर्तमान में यह पाषाण सरदल गुजरी महल संग्रहालय, ग्वालियर में प्रदर्शित है। इन उदाहरणों के समकालीन ही साँची स्तूप क्रमांक एक के तोरण द्वारों का निर्माण सातवाहन शासक गौतमी-पुत्र सातकर्णी के समय विदिशा के हाथी दाँत के कारीगरों द्वारा किया गया था। उनमें अनेक स्थानों पर इस प्रकार के वाद्य यंत्र देखे जा सकते हैं।

मथुरा की कृषाणकला के एक वेदिका स्तम्भ पर एक अप्सरा को तारों वाले वाद्य का वादन करते हुए निर्मित किया हुआ है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार यह वाध वीणा ही है।

भारतीय इतिहास में गुप्त काल को स्वर्णयुग माना गया है। इस युग में साहित्य, कला, संगीत के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति हुई थी स्वर्ण-मुद्राओं का भी सर्वाधिक प्रचलन था। गुप्त कालीन शैलकृत गुफाओं की प्रतिमाओं में, चित्रकला में व मुद्राओं पर वीणा वादन के पर्याप्त उदाहरण प्राप्त होते हैं। विदिशा के निकट उदयगिरी गुफाओं का निर्माण लगभग चौथी शताब्दी में प्रारम्भ हुआ

था चन्द्रगुप्त द्वितीय की मालवा विजय के उपलक्ष्य में उसके सेनापति साव वीरसेन ने इन गुफाओं का निर्माण करवाया था। वीणा वाद्य के उदाहरण यहाँ गुफा क्रमांक (4) व (5) में देखने को मिलते हैं। कनिंघम द्वारा गुफा क्रमांक (4) का नामकरण 'वीणा गुफा' किया गया था। गुफा के प्रवेश द्वार की शाखाओं पर वीणा वादन करते मानवाकृति उकेरी हुई है। गुफा क्रमांक (5) में गंगा-यमुना आकृतियों के ऊपरी भाग में किन्नरों-गन्धर्वो को आसमान में विचरण करते प्रदर्शित किया गया है। उनके हाथों में वीणा के समान वाद्य है। वराह अवतार प्रतिमा के ऊपरी भाग पर भी इस प्रकार की आकृतियाँ वीणा लिये देखी जा सकती हैं। यहाँ वीणा का आकार-प्रकार आधुनिक सरोद के समान है। इनमें तार व खुटियाँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं।

बाघ (जिला-धार) की गुफाओं में एक स्थान पर पाँच स्त्री आकृतियाँ चित्रित हैं, जिनमें मध्य स्त्री आकृति के हाथ में वीणा के समान वाद्य यन्त्र है। बाघ की ही समकालीन अजन्ता (महाराष्ट्र) की गुफाओं में भी इस प्रकार के चित्र देखे जा सकते हैं। गुफा क्रमांक (1) व (17) में एक युग्म व वाद्यवृन्द सहित मानवाकृतियों को वीणा-प्रकार के वाद्य का वादन करते हुए चित्रित किया हुआ है। गुप्तयुगीन शासकों में समुद्र गुप्त का एक महान योद्धा, कला व संगीत प्रेमी के रूप में सर्वोच्च स्थान था। उसके कला व संगीत प्रेमी होने का महत्वपूर्ण उदाहरण हरिषेण द्वारा रचित 'प्रयाग प्रशस्ति' में मिलता है उसने अपने समय में वीणा-प्रकार की स्वर्ण मुद्राओं का प्रचलन किया था। मुद्रा के अग्रभाग में सम्राट पलंग पर बैठे, गोद में वीणा रखकर वादन कर रहा है। कुषाण शासकों के समान उसने टोपी पहन रखी है। मुद्रा के ही अग्रभाग पर गुप्त कालीन ब्राह्मी में महाराजाधीराज समुद्र गुप्तः, संस्कृत लेख प्राप्त होता है, जिसमें समय की सार्थकता इंगित होती है।

गुप्त युग के पश्चात भारत का उत्तरी भाग हर्षवर्धन, प्रतिहार व पाल शासकों के आधिपत्य में आ जाता है। उनकी प्रतिमा-कला पर गुप्त युगीन कला का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। बड़ोह-पठारी के एक प्रतिहार कालीन मन्दिर में दो हाथों वाली सरस्वती की प्रतिमा में उसे वीणा वादन करते बताया गया है। पाल शासकों के समय की प्रतिमाओं में प्रमुख देवी-देवताओं के साथ गन्धर्व/विद्याधर या स्त्री परिचरों का अंकन होता है जिनमें कुछ आकृतियों को वीणा वादन करते बताया गया है जिनमें वीणा सीधी होती है। भारत कला भवन, वाराणसी में रखी एक नवीं शताब्दी की वामन प्रतिमा के निचले भाग में एक स्त्री परिचर को वीणा वादन करते बताया गया है। ग्यारहवीं शताब्दी की सुन्दरवन (बंगला) से प्राप्त पाल कालीन सरस्वती की दो भुजाओं वाली प्रतिमा एक श्रेष्ठ कलाकृति है। उसमें देवी को वीणा वादन करते हुए प्रदर्शित किया गया है। वर्तमान में यह प्रतिमा आशुतोष संग्रहालय में रखी है।

दक्षिण भारत में होयसेल शासकों के समय की प्रतिमाएँ अत्यधिक अलंकृत होती थीं। उनमें सरस्वती की प्रतिमाओं में देवी को नृत्यरत व किसी में व्याख्यान-मुद्रा में वीणा-वादन करते बताया गया है। उनके सर्वश्रेष्ठ उदाहरण होयसलेश्वर मन्दिर, हेलेबिड में देखे जा सकते हैं।

सुहानिया (जिला-मुरैना) से प्राप्त कच्छपघात कालीन वीणा युक्त चारभुजाओं वाली सरस्वती प्रतिमा तत्कालीन समय की सर्वोच्च कलाकृति है। यह प्रतिमा वर्तमान में गुजरीमहल संग्रहालय, ग्वालियर में प्रदर्शित है।

राजा भोज द्वारा निर्मित भोजशाला की परमार कालीन सरस्वती प्रतिमा वर्तमान में ब्रिटिश संग्रहालय में संग्रहित है- की समस्त भुजाएँ भग्न हैं परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उसमें वीणा अवश्य रही होगी।

सिन्दखेड राजा (महाराष्ट्र) के एक मन्दिर में अप्सरा की एक भग्न, परन्तु सुन्दर प्रतिमा है जिसमें उसे वीणा वादन करते बताया गया है। राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में बीकानेर क्षेत्र से प्राप्त बारहवीं शताब्दी की सरस्वती की चार भजाओं वाली अनूठी प्रतिमा है जिसमें वीणा नहीं बतायी गयी है। परन्तु उसके पैरों के निकट त्रिभंग मुद्रा में खड़ी स्त्री परिचर वीणा वादन कर रही है।

मूर्तिकला, चित्रकला के अतिरिक्त शैल चित्रकला में भी सामूहिक नृत्य के चित्रों के साथ कहीं कहीं वाद्यवृन्दों का भी अंकन मिलता है। इनका सबसे उत्तम उदाहरण पचमढ़ी के निबू भोज या बाजार केव शैलाश्रय में देखने को मिलता है जिसमें एक मानवाकृति अपने गोद में वीणा के समान वाद्य लिये हुए हैं। यह चित्र लाल गेरूए रंग का है तथा बाहरी रेखाकन सफेद रंग से किया हुआ है। शैली के आधार पर यह चित्र कुषाण या गुप्त काल का हो सकता है।

उपरोक्त उदाहरणों के अतिरिक्त वीणा वाद्य का प्रारम्भिक युग से वर्तमान समय तक की कला में विस्तृत, पुरातात्त्विक व साहित्य के आधार पर गहन शोध कार्य किया जाये तो सैकड़ों नये उदाहरण प्राप्त हो सकते हैं। इस कार्य से समय-समय पर वीणा के आकार-प्रकार के परिवर्तन की विस्तत झाँकी भी प्राप्त हो सकेगी।

जब हम अच्छा खाने, अच्छा पहनने और अच्छा दिखने में खर्च करते हैं
तो अच्छा पढ़ने-लिखने और सोचने-समझने की खुराक में खर्च क्यों न करें !

कलासमय

प्रबंध संपादक

सम्पर्क- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058

ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com / bhanwarlalshrivas@gmail.com

आलेख

# रानी की वाव प्रतिमाएं जो अतीत से जोड़ती हैं

-डॉ. नारायण व्यास

पुरातत्वशास्त्रियों का इंतजार करती रानी की वाव की सुंदर प्रतिमाएं बाहर निकलने के लिए आतुर थीं. अंतत: वे निकल ही गयीं. कई शताब्दियों से जमीन में दबी रहने के कारण घुटन महसूस करते हुए देवी-देवता, अप्सराएं तथा साधु-पुरुष इत्यादि अब बाहर निकल कर सुख की सांस ले रहे हैं।

पाटन नगर (अनहिलवाड़ पाटन) प्राचीन काल में सोलंकी नरेशों की राजधानी थी। इसकी स्थापना चावड़ा वनराज (746 ई.) द्वारा की गयी थी। यहां के प्राचीन अवशेष, खंडहर, पाषाण-प्रतिमाएं, ताल, दुर्ग, इत्यादि नगर में प्रवेश करते ही पर्यटकों, यात्रियों को अपनी कहानी स्वयं सुना कर आकर्षित करते हैं। इनमें सबसे अद्भुत 'रानी की वाव' है।

वैष्णव मतावलंबी रानी उदयमति, प्रतापी सोलंकी नरेश भीमदेव प्रथम (1022-1064 ई.) की पत्नी जो कर्णदेव की माता भी थी, ने ही इस वाव का निर्माण करवाया था। (कई प्रदेशों में वाव को ही बावड़ी माना जाता है) रानी की वाव पाटन से लगभग 5 किलोमीटर पश्चिमोत्तर दिशा में, सरस्वती नदी के तट पर बने सहस्त्रलिंग ताल के निकट स्थित है। भारत सरकार ने 'भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण' के अंतर्गत इस वाव को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया है। इसका उत्खनन तथा संरक्षण कार्य पिछले कई वर्षों से चल रहा है, वर्तमान में इस वाव की सात मंजिलें निकल चुकी हैं।

रानी उदयमति के धार्मिक स्वभाव के कारण ही विशाल मंदिर के समान दृष्टव्य होनेवाली वाव का निर्माण हुआ। भारत में साधारण, अलंकृत, विशाल तथा सोपानयुक्त वाव तो कई बनीं, परंतु इस प्रकार की वाव अपने आप में अनूठी है. रानी का विचार रहा होगा कि जहां तक उसकी दृष्टि पहुंचे वहां तक देवी-देवताओं के ही दर्शन हों और वाव को देखने से इस बात पर विश्वास हो जाता है, यह एक सत्य भी है, जहां तक हमारी निगाहें जाती हैं वहां देवी-देवताओं के ही दर्शन होते हैं।

सोलंकी वंश के पश्चात स्थापत्य तथा वास्तुकला का पतन होता गया। फिर न कोई संभालनेवाला, संवारनेवाला रहा और न ही सुरक्षित रखनेवाला। केवल नष्ट करनेवाले ही रह गये थे। रानी की वाव में उत्खनन से ऐसा लगा कि यह वाव नष्ट होने से पूर्व ही प्राकृतिक कारणों या जलप्लावन से पृथ्वी के गर्भ में समा गयी तथा सुरक्षित रही। जमीन के अंदर रहने के कारण प्रतिमाओं का न पैर टूटा न हाथ, न मस्तक या नाक, वे जैसी थी वैसी ही उत्खनन में मिलीं. इसके साथ की अन्य समकालीन इमारतें तो नष्ट कर दी गयी थीं। पिछले कई वर्षों से वाव का ऊपरी भाग दिखाई देने के कारण से रानी की वाव की यशोगाथा चलती रही।

वाव का निर्माण करने के लिए एक विशाल क्षेत्र को समतल कर उसे लगभग 40 मीटर गहरा किया होगा। प्रतिमाएं तथा वास्तुखंड लगाने से पूर्व वाव के अंदर चारों तरफ पक्की ईटों की मोटी दीवार बनायी गयी थी। वाव की. दीवारों के विभित्र स्तर हैं जिन पर देवी-देवताओं, अप्सराओं की प्रतिमाएं व अन्य छोटी-छोटी प्रतिमाओं के कई पट्ट लगे हुए है।

पानी के लिए मुख्य कूप तक पहुंचने के लिए विभिन्न स्तरों पर विशाल शिलाखंडों के ज्यामितिक ढंग से निर्मित सोपान हैं, जिनके द्वारा थकान महसूस किये बिना कई मनुष्य एक साथ उतर-चढ़ सकते हैं।

वाव पूर्वाभिमुख है। प्रवेश के सोपानों के निकट ही अष्टदिकृपालों के प्रमुख तथा पूर्व दिशा के रक्षक इंद्र की बहुत ही सुंदर प्रतिमा स्वागतार्थ लगी है। इंद्र के निकट ही चार हाथों वाले हनुमान की प्रतिमा है, जिससे अशोक वाटिका का प्रतीकात्मक अंकन सराहनीय है।

वाव के मुख्य भागों में शेषशायी विष्णु कूप तथा अन्य चार दीर्घाए हैं। यहां की सुंदर पाषाण प्रतिमाएं केवल विष्णु कूप, वैष्णव तथा दशावतार दीर्घा में ही देख सकते हैं। जो अपने आप में बेजोड़ है।

शेषशायी विष्णु कूप में जल के होने वाले विभिन्न स्तरों के कई गोल मंडल है. नीचे के मंडलों में शेषशायी विष्णु की कई प्रतिमाएं हैं, जिनमें विष्णु को शेषनाग पर शयन करते बताया है। नाभि से निकले कमल पर ब्रह्मा बैठे हैं. पैरों के निकट लक्ष्मी पैर दबा रही हैं। कूप के उपरी स्तरों पर देवतागण अपनी अर्द्धांगनी के साथ आलिंगन मुद्रा में खड़े है, जिनमें ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश, दिक्पाल इत्यादि हैं. इनके आसपास अप्सराओं की विभिन्न मुद्राओं व

कार्यकलापों की प्रतिमाएं भी लगी हैं।

कूप के निकटवाली वैष्णव दीर्घा है जहां विष्णु के 24 स्वरूपोंवाली प्रतिमाएं हैं,विष्णु के हाथों में आयुधों की विभित्रता के कारण नाम परिवर्तन हो जाता है. जैसे प्रद्युम्न ऋषिकेश, उपेंद्र, पुरुषोत्तम, नारायण, त्रिविक्रम, श्रीघर, माधव, केशव इत्यादि।

इस दीर्घा के अन्य आकर्षणों में पार्वती, गौरी, गणेश, विश्वरूप, वैकुंठ, अर्धनारीश्वर मुख्य है।

वाव की दशावतार दीर्घा विष्णु के दशावतारों के लिए विख्यात हो गयी है, यहां आलियों में वराह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध तथा कल्कि की ही प्रतिमाएं शेष हैं। मत्स्य, कूर्म तथा नृसिंह अवतारों की प्रतिमाएं अब तक प्राप्त नहीं हुई। केवल आले खाली .. पड़े हैं, उत्खनन समाप्ति के पश्चात शायद प्राप्ति हो सके, इस दीर्घा की अन्य सुंदर प्रतिमाओं में बीस-बीस हाथों वाली महिषासुरमर्दिनी तथा भैरव की प्रतिमाएं मुख्य है।

**अलंकृत स्तंभ**

वाव की प्रत्येक मंजिल विभिन्न प्रकार के अलंकत स्तंभो पर टिकी है, जिन पर प्रस्फुटित-घट, मालाएं अर्थ तथा पूर्ण पुष्प, कीर्तिमुख आदि का आलेखन है। स्तंभों के मध्य भाग में अर्धगोलाकार वृत्त में कई पशु-पक्षी, मानव इत्यादि हैं, साथ ही काल्पनिक पशुओं तथा आकृतियों की प्रधानता है. स्तंभों के ऊपर छत को संभालनेवाले सरदल हैं, जिन्हें भारवाहकों द्वारा उड़ते हुए उठाया जा रहा है।

इस वाव की विशेषता यह भी है कि जिन वास्तुकारों, शिल्पियों या कारीगरों ने यहां काम किया था उन्होंने अपने चिन्ह या नाम प्रतिमाओं एवं वास्तुखंडों पर उत्कीर्ण किये थे, जो वर्तमान में भी देखने को मिलते हैं। श्री, महिपाल, सहदेव, लोला, लो आदि नाम आसानी से पढ़े जा सकते हैं। जिन मूर्तिकारों ने यहां प्रतिमाएं बनायी होंगी वे निश्चत रूप से राष्ट्रीय स्तर के कलाकार रहे होंगे।

रानी की वाव का हम जितना भी वर्णन करें कम है. इसकी सुंदरता तथा कलात्मकता बेजोड़ है. यहां की पाषाण जालियां जिन पर ज्यामितिक आलेखन है, ऐसी हैं जो ताजमहल की जालियों को मात करती हैं. यदि हम रानी की वाव को संसार का आठवां आचर्य माने तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।


# पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

## पत्रिका मुफ्त मांग कर, कृपया हमारे अनुष्ठान को आघात न पहुँचाएं

**'कला समय'** के सदस्य बनें- ❍ पत्रिका की वार्षिक/द्वैवार्षिक /आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑनलाइन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

**'कला समय' की एजेंसी के नियम-** ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

**स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें-** जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com मो. 9425678058, 0755-2562294

**लेखकों/कलाकारों से** ❍ कला, संस्कृति और विचार के अछूते पहलुओं पर सृजनात्मक, शोधात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबंध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं। ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई तथा मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न हो। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई-मेल से भी भेजे जा सकते है।

**प्राथमिकता के साथ :** Chanakya फोंट / वर्ड फाइल / PDF फॉर्मेट में ही भेजें।

**अनुरोध : वे सदस्य जिनका वार्षिक / द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें। सदस्यों को पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। नहीं मिलने की स्थिति में सदस्यता शुल्क के साथ ` 120/- का प्रतिवर्षानुसार रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त भेजा जाना होगा।**

**-संपादक**

आलेख

# पुरातत्व क्या है ?

कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

पुरातत्तव शब्द का सामान्य अर्थ है 'प्राचीन वस्तुओं का ज्ञान।' इसके अंतर्गत प्राचीन सामग्री यथा- गुफाएँ शिलालेख ,मुद्राएँ, ताम्रपत्र, आदि का अध्ययन किया जाता है।

अंग्रेजी भाषा में इसके लिए 'आर्किऑलॉजी (Archaeology) शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह शब्द प्राचीन ग्रीक भाषा में, आर्किऑस(Archaios) से बना है। ग्रीक भाषा में इसका शाब्दिक अर्थ 'प्राचीन' (Ancient) होता है। द्वितीय शब्द 'लोगोस' (Logos) का अर्थ 'विवेचन' होता है । इस प्रकार 'आर्किऑलॉजी' शब्द का पूर्ण अर्थ है मानव उत्पत्ति का विवरण या विश्लेषण। ओ.जी. एस. क्राफर्ड अपने ग्रंथ 'ऑर्किऑलॉजी रन द फील्ड' में लिखा है कि Archaeology is that branch of science, which is concerned with past phases of human culture 'याने मानवीय सभ्यता के प्राचीन स्वरूप के अध्ययन करने का शास्त्र ही पुरातत्व है।'

'मनुष्य ने अपनी प्राचीनकाल से वर्तमान तक की यात्रा में जिन-जिन साधनों का प्रयोग किया वे सब पुरावस्तुओं के अंतर्गत आते है। भारतीय पुरावस्तु अधिनियम के अंतर्गत वे समस्त वस्तुएँ जो 100 वर्ष या उससे अधिक पुरानी हैं, पुरावस्तुओं के अंतर्गत आती थीं। अब यह अवधि 75 वर्ष कर दी है।

जैसा की हम जानते है कि इस वैज्ञानिक युग में इतनी नई-नई चीजें आने लगी है कि पुरानी वस्तुएँ अब अटाले में पड़ी हैं। अटाला खरीदने वाले भी गाँव, गली, मोहल्ले में दिन के दस फेरे करते हैं अत: घर में अटाला भी नहीं रहता। कोई रद्दी कागज बेंच रहा है, कोई पुराने नोट बदल रहा है, कोई सिक्के के बदले अधिक रुपये ले रहा है। क्या आपने कभी सोचा है कि ये सब चीजें कहाँ जा रही है? इन्हीं चीजों से पुरातत्ववेत्ता इतिहास का निर्माण करते है। पुरावेत्ताओं व इतिहासकारों की दृष्टि से निम्नलिखित सामग्री अति महत्वपूर्ण होती है - 94 के लिए एक राज्य स्तरीय बैठक (24-08-1993) आयोजित की गई। बहुत भाग्यशाली था कि मुझे इस बैठक में कार्यक्रम अधिकारी के रुप में आमंत्रित किया गया इस बैठक में मैंने तीन प्रस्ताव रखे जिसमें से एक रजत जयंती स्मृति वाटिका का था, और यह प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। इनमें से एक वाटिका की स्थापना का दायित्व मेरी ईकाई को प्राप्त हुआ। मुकेश बरोनिया, दीपक नन्नावरे, प्रदीप लालवानी, ब्रजेश सांखला आदि छात्रों की मदद से क्रमांक-1 में रजत जयन्ती वर्ष स्मृति वाटिका का निर्माण हुआ। इसका उद्घाटन माननीय मनोज कुमार श्रीवास्तव, कलेक्टर मन्दसौर (08-08-94 से 08-03-96) के द्वारा किया (सम्प्रति सचिव राजस्व म.प्र.) मुझे प्रसन्नता है कि लगभग 24 वर्ष बीत जाने के बाद भी यह वाटिका आज भी चमन है, ठीक उसी तरह जिस तरह मैं आज भी रासेयो से अपने पुरातत्त्व के साथ जुड़ा हूँ

इस अवसर पर मैं ईमानदारी पूर्वक कहना चाहूँगा कि पुरातत्त्व विभाग में दैनिक मजदूर के रुप में कार्य कर मैने जो ज्ञान पाया वह युवाओं को इस विश्वास के साथ सौंप रहा हूँ कि वे इसका सीधा सदुपयोग कर प्रदेश व देश की पुरासम्पदा के संरक्षण में अपना योगदान देंगे

इस वर्ष म. प्र. पुरातत्त्व विभाग के युवा आयुक्त श्री पंकज राग ने प्रदेश के युवाओं को पुरातत्त्व से जोड़ने की अभिनव योजना प्रारम्भ की है। उनके इस प्रयास का प्रदेश के सभी युवाओं की तरफ से स्वागत, अभिनन्दन, कोटि-कोटि बधाई।

इस अवसर पर मैं श्री एस. एन. राज. (उपसंचालक म.प्र. पुरातत्त्व' पश्चिमी क्षेत्र, इन्दौर) व श्री प्रवीण श्रीवास्तव (प्रमुख रसायनविद्) व उनकी टीम के सदस्य (श्री परांजपे, श्री महाशब्दे, श्री जोशी, श्री खान, श्री जगदीश

| पुरातत्व सामग्री | | |
|---|---|---|
| **स्मारक के रूप में** | **प्राचीन बस्तियों से** | **प्राप्त परिवारों में संग्रहित** |
| शैलचित्र | पाषाण उपकरण | पाण्डुलिपियाँ |
| चैत्य | जीवाश्म | ताम्रपत्र |
| स्तूप | ईंटे | सनदें |
| शैलोत्कीर्ण स्मारक | शौचकूप | हथियार |
| शैलोत्कीर्ण गुफाएँ | ठीकरें | चित्र, हस्तलिखित दस्तावेज |
| प्राकृतिक गुफाएँ | मृण मूर्तियाँ | सिक्के |
| शवागाह | तालाब | खिलौने, काँच की वस्तुएँ |
| बावड़ी | मनके | धातु की वस्तुएँ |
| मन्दिर | मुद्रा सांचे | गृह मूर्तियाँ |
| किले | मुद्राएँ | पुस्तकें, दैनंदियाँ |
| अभिलेख | आवासीय भवन | हाथी दांत की वस्तुएँ |
| जीवाश्म | भवन योजनाएँ | काष्ठ निर्मित सामग्री |
| पुल | शवाधान | वंशवृक्ष, मानचित्र |
| स्तम्भ | | |
| द्वार | | |
| महल | | |
| स्मृति स्मारक | | |
| चर्च | | |
| समाधि | | |
| पाषाण भवन योजना | | |
| ईष्टिका भवन योजना | | |
| प्रतिमाएं | | |
| मस्जिद | | |

शर्मा) का बहुत आभारी हूँ जिनके उदार हृदय के कारण मुझे पश्चिमी मालवा व निमाड़ में आयोजित पंच-सचिव पुरातत्त्व सम्मेलनों में भाग लेकर अपनी बात कहने तथा अनुभव बढ़ाने का अवसर मिला आशा है, श्री राज के नेतृत्व में इस युवा टीम के उत्साह में अभिवृद्धि होगी।

## युवा क्या करें

आप युवा हैं, भावी कलेक्टर, एस.पी., विधायक, मंत्री, सांसद आदि बनेंगे। अत: आप सभी का दायित्व है कि 'पूर्वदत्त भूमि की चाहे वह स्वयं तुम्हारे द्वारा दी गई हो अथवा किसी अन्य के द्वारा सावधानी से सुरक्षा करो, सुरक्षा दान देने से अधिक पुण्यकर है। कहा भी कहा गया है - **श्रेष्ठ दानाच्छ्रेयोऽनुपाल।'**

मित्रों, आप स्वयं देश की पुरा सम्पदा के संरक्षक है, आप उसे नव जीवन दे सकते है इस हेतु कुछ सुझाव इस प्रकार हैं -

**सबसे महत्वपूर्ण कार्य सूचना देना है -**

आप प्राप्त वस्तु की जानकारी विभिन्न पत्रों के सम्वाददाताओं तक पहुँचा सकते है ताकि वे सीधे इसका छायाचित्र खिंचवाकर समाचार पत्र अथवा इलेक्ट्रॉनिक मिडिया द्वारा प्रशासन का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। इसके सिवाय जिला प्रशासन अथवा क्षेत्रीय पुरातत्त्वअधिकारी को सूचना दी जा सकती है।

यदि पुरावशेष के रूप में कोई पाषाण अभिलेख, मूर्ति, ताम्रपत्र, दफीना आदि हो तो उसे पुलिस थाना आदि किसी सुरक्षित स्थान पर रखवाकर इसकी सूचना भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की इन दो शाखाओं को दी जा सकती है।

**(I) मुख्य अभिलेखविद, भा.पु.सर्वेक्षण ओल्ड यूनि. मैसूर (कर्नाटक) - 570005** इस कार्यालय पर खरोष्ठी, ब्राह्मी या अन्य किसी प्राचीन लिपि में लिखे अभिलेखों की सूचना दी जा सकती है।

**(II) मुख्य अभिलेखविद - अरबी व फारसी, भा.पु. सर्वेक्षण ओल्ड हायकोर्ट नागपुर (महाराष्ट्र) 440001** इस कार्यालय पर अरबी एवं फारसी भाषा में लिखे अभिलेखों की जानकारी भेजी जा सकती है।

इन कार्यालयों से अभिलेखविद आता है व यह उस अभिलेख का छापा, छायाचित्र निकालकर ले जाता है। विभाग की वार्षिक रपट में इसके वाचन की जानकारी प्रकाशित होने की सम्भावना रहती है।

प्राचीन भित्तिचित्र, पेन्टिंगस आदि के संरक्षण कार्य हेतु नेशनल म्यूजियम दिल्ली की कन्जरवेशन शाखा से सम्पर्क किया जा सकता है। इस कार्य में भारतीय सांस्कृतिक न्यास निधि (INTACH) 71, लोदी स्टेट, नई दिल्ली अथवा इसकी शाखा कन्जरवेशन लेब्रोटरी अ-1/II सेक्टर, अलीगंज स्कीम, लखनऊ, (उत्तरप्रदेश) 226001 भी आवश्यक परामर्श दे सकती है।

पुरावस्तु संग्रहण अधिनियम के अंतर्गत अवैध रूप से प्रतिमा आदि के संग्रहण पर छ: माह की सजा अथवा 10 हजार रु. दण्ड की व्यवस्था है। इसके लिये पुरावस्तु पंजीयन कराना सुरक्षित है। इस हेतु अपने प्रदेश के आयुक्त, पुरातत्त्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय, बाणगंगा मार्ग, भोपाल (म.प्र.) 462001 से पत्राचार कर मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

म.प्र. शासन ने प्रदेश के सभी जिलों में जिला पुरातत्त्व संघों की स्थापना कर रखी है। कलेक्टर महोदय, इसके अध्यक्ष होते हैं। अत: कलेक्टर के नाम पत्र लिखकर भी प्रशासन का ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। किया जा सकता है।

**युवा, पुरासम्पदा को संग्रहालयों में भेज सकते हैं -**

किसी भवन, तालाब या जमीन आदि की खुदाई से यदि कोई प्रतिमा, अभिलेख, मृदभाण्ड, सिक्के आदि निकलते हैं तो उस सामग्री को सुरक्षा की दृष्टि से जिला मुख्यालयों पर बने संग्रहालय में स्थानान्तरित किया जा सकता है। यदि मन्दिर आदि में कोई प्रतिमा खण्डित हो जावे तो उसे भी जल में प्रवेश कराने की बजाए संग्रहालय में रखा जा सकता है। ऐसी सामग्री को विधिवत आवक-जावक . के साथ भेजा जाना चाहिये। सामग्री जमा किये जाने के बाद उसकी-पावती अवश्य लें। हस्तांतरित की गई सामग्री की सूचना वरिष्ठ कार्यालयों को भी दें।

**(III) युवा, पुरासम्पदा का छांयाकन कर सकते हैं -**

अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों से पुरासम्पदा की चोरी होती है, लोग नष्ट कर देते है। रेकार्ड के अभाव में पुलिस कार्यवाही नहीं कर पाती है। युवकों को चाहिये कि वे अपने क्षेत्र की पुरासम्पदा का छायांकन कर लें । छायाचित्रों का व्यवस्थित एलबम संधारण करें। छायाचित्रों के पीछे उनके खींचे जाने की तारीख, पुरावस्तु की लम्बाई-चौड़ाई×ऊँचाई, माध्यम, वर्तमान स्थिति आदि का अंकन करें।

**(IV) युवा, नवीन संग्रहालय का निर्माण कर सकते हैं -**

यदि ग्राम पंचायत क्षेत्र में प्रभूत सम्पदा हो तो उसे पुरातत्त्व विभाग के अधिकारियों के मार्गदर्शन में एकत्रित कर स्थानीय संग्रहालय का निर्माण भी किया जा सकता है। इस हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता का भी प्रावधान है।

**(V) युवा, स्थानीय इतिहास का प्रकाशन कर सकते हैं -**

हो बक्यो ने एक लिख्यो यह हमारी प्राचीन ग्रामीण कहावत है। याने सौ बार बोलने की बजाए एक बार लिख डालो। युवा, इतिहास विशेषज्ञों को आमंत्रित कर अपनी पुरासम्पदा का व्यवस्थित इतिहास लिखवाले तथा उसका समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, स्मारिका, तहपत्रिका के माध्यम से प्रकाशन करवायें। इस प्रकार जानकारी के फैलने से इतिहास प्रेमी, जिज्ञासु अपने लेखन में इस सामग्री का प्रयोग करेंगे, साथ ही पर्यटकों का ध्यान भी आकर्षित होगा।

**(VI) युवा, अतिक्रमण रोक सकते हैं -**

अक्सर पुरातात्त्विक स्थलों पर ग्रामीण रोड़ियां बना लेते है, घास भर देते है, लकड़ियां जमा देते है, भैंसे बांध देते है, बाड़ा बना देते है, युवकों को चाहिये की वे अतिक्रमण की समस्या का समाधान कर इन धरोहरों की सुरक्षा करें। शासन के द्वारा संरक्षित स्मारकों से 100 मीटर की सीमा को सुरक्षित क्षेत्र एवं 200 मीटर तक की सीमा को नियंत्रित क्षेत्र घोषित किया गया है, अर्थात इस सीमा में किसी भी प्रकार का निर्माण अतिक्रमण माना गया हैं।

**(VII) युवा, सौन्दर्गीकरण कर सकते हैं -**

यदि आपके ग्राम, पंचायत क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण पुरातत्त्व अथवा पर्यटन स्थल है तो उसके सौन्दर्गीकरण का प्रयास किया जाना चाहिये। बगीचा लगाया जा सकता है, झाड़ झंखाड़ कटवाया जा सकता है, घास आदि को नष्ट करने वाले साधनों का प्रयोग किया जा सकता है। ऐसे स्मारकों आदि पर यदि तत्काल किसी मरम्मत की आवश्यकता हो तो उसकी ओर पुरातत्त्व विभाग के कर्मचारियों या पुरातत्त्व विशेषज्ञों का ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। यदि

ऐसे स्थान पर पर्यटकों, श्रद्धालुओं की आवाजाही है तो वहाँ कचरा डालने हेतु गड्ढे खुदवाने चाहिये ताकि गंदगी न हो, सफाई का प्रबंध हो, उस स्थान की जानकारी प्रदान करने वाला कोई बोर्ड बनाकर लगाया जा सकता है। इस हेतु ग्राम पंचायत का सहयोग लिया जा सकता है।

**(VIII) युवा, पुरासम्पदा के संरक्षण की शिक्षा प्रदान कर सकते हैं –**

पुरासम्पदा का सर्वेक्षण या सूचियन करना तो महत्वपूर्ण कार्य है ही लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण कार्य उसके संरक्षण के प्रयास करना अथवा उस स्थान, गाँव या क्षेत्र के लोगों को उसकी सुरक्षा की सूचना प्रदान करना है। यदि कोई महत्वपूर्ण, टीला, किला, मन्दिर, भवन, छत्री आदि आपके सर्वेक्षण के दौरान प्रकाश में आवे तो राज्य सरकार के संस्कृति विभाग का ध्यान आकर्षित कर इसे संरक्षित स्मारक घोषित कराया जा सकता है। यदि ये सार्वजनिक या व्यक्तिगत मन्दिर, इमारत, किला, महल आदि में हो तो उगने वाली घास, पेड़ों आदि को रासायनिक क्रिया द्वारा नष्ट करने की प्रेरणा प्रदान करनी चाहिये।

पुरा सम्पदा की सुरक्षा हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना के दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया जा सकता है। यदि स्मारक बड़े हैं तो सात दिवसीय शिविर भी लगाए जा सकते हैं। वर्षकाल के पूर्व व पश्चात् पुरा स्मारकों की देखभाल को युवा अपनी आदत में शुमार कर सकते है।

पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में उनके संग्रहकर्ताओं को उन्हें परम्परागत तरीके से लपेट कर रखने, सांप की केंचुली, नीम के पत्ते आदि रखकर रखने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिये। इसके अलावा इन मूल दस्तावेजों की जेराक्स प्रतियाँ बनवाकर रखना चाहिये ताकि बार–बार पुराभिलेखों को निकालने की आवश्यकता न पड़े। उन्हें सीलन युक्त व अंधेरे स्थानों से दूर रखना चाहिये ताकि ये दीमक तथा सड़न का शिकार न हो। पाण्डुलिपियों के संबंध में कहा गया है कि –

**'यत्नेन लिखितं शास्त्रम्, पुत्रवत् परिपालयेत्।'**

धार्मिक एवं पर्यटक स्थलों को स्वच्छ रखने की शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया जा सकता है। पुरास्मारकों की दीवालों, छतों पर चहलकदमी करने की मना की जानी चाहिये। प्राचीन बावड़ियों में गंदगी न डालें नहीं उसे कचरे–कूड़े से भरे बहुधा पर्यटक किलों, मन्दिरों, महलों तथा अन्य पुरा स्मारकों की दीवारों, छतों, गुम्बदों आदि पर अपनी यात्रा की स्मृति के रूप में अपना नाम, आगमन तिथि आदि अंकित कर देते हैं । भित्तिचित्रों, शैलचित्रों पर नवीन चित्र अंकित कर देते हैं जनसाधारण, शिक्षक, विद्यार्थी, राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक इस प्रकार के विनाश को रोकने में सहायक होते है। इनकी मदद लेकर युवा अपने क्षेत्र की पुरासम्पदा को विकृत करने वाले प्रयासों को रोक सकते है। इस हेतु पर्याप्त जनजागरण की आवश्यकता है, यह युवाओं के द्वारा किया जाना चाहिये।

जमीन से प्राप्त मुद्राएँ दफीना अधिनियम के अंतर्गत अपने पास रखना अपराध है। किसी भी प्रकार का खजाना मिलने पर तत्काल प्रशासन, पुरातत्व विभाग व पुलिस विभाग को इस क्रम में सूचना देना चाहिये। लेकिन मुद्राओं को एकत्र करने हेतु किसी पंजीयन की आवश्यकता नहीं है। यदि आप मुद्राओं के एकत्रीकरण उनके कालानुक्रम, तकनीक आदि पर व्यवस्थित प्रशिक्षण चाहते हों तो आपको निदेशक, मुद्रा अकादमी, आंजनेरी, नासिक (महाराष्ट्र) 422001 से पत्र व्यवहार करना चाहिये।

**(IX) युवा, सर्वेक्षण कर सकते हैं –**

युवा अपने सदस्यों, ग्राम के शिक्षितजनों, अध्यापकों, बुद्धिजीवियों आदि का दल बनाकर अपने क्षेत्र की पुरा सम्पदा का सर्वेक्षण कर सकते है । ग्रामीण पुरातत्व सर्वेक्षण में निम्नस्थलों, वस्तुओं की जानकारी एकत्र की जा सकती है। इस हेतु विशेषज्ञों का सहयोग भी लिया जा सकता है।

**( 1 ) प्राचीन टीले**– आवासीय प्राचीन टीले पुरावस्तुओं के केन्द्र होते है अक्सर या तो प्राचीन गाँव या शहर इन्हीं पर बसे हैं अथवा अब ये वे चिराग होकर अपनी कोख में इतिहास को समेटे उपेक्षित पड़े है। बढ़ती खेती व इनकी उपजाऊ मिट्टी के कारण अब किसानों ने अपने खेतों में मिट्टी डालने व मकान बनाने में इन्हें जमीदोज कर दिया है।

अक्सर ये प्राचीन आवासीय टीले, खेड़ा–खेड़ी, रूण्डा–रूण्डी करार आदि के नाम से जाने जाकर नदी, नाले या किसी तालाब के किनारे अवस्थित होते हैं। ऐसे टीलों से वर्षाकाल में, मिट्टी खोदने के दौरान, मकानों की नींव खोदते समय पुरावशेष यथा – ठीकरें, मृण मूर्तियों, मनके, मिट्टी के खिलौने, चारकोल, हड्डियाँ जीवाश्म आदि प्राप्त होते हैं। इनमें ठीकरों की सहायता से बस्ती की प्राचीनता का अभिज्ञान किया जा सकता है। प्राप्त कोयले से कार्बन 14 की विधि से बस्ती की प्राचीनता ज्ञात करायी जा सकती है। कोयले को प्रयोगशाला में भेजते समय हाथों से उठाने के बजाय चिमटी से उठाया जाना चाहिये। इस हेतु टाटा फंडामेन्टल रिसर्च सेंटर अहमदाबाद (गुजरात) 38001 से पत्र व्यवहार करना चाहिये।

**( 2 ) मुद्राएँ** – प्राचीन मुद्राओं की प्राप्ति के अनेक स्त्रोत होते है जिनमें पुराने आवासीय टीले, नदियाँ, व्यक्तिगत संग्रहकर्ता, बर्तन व्यापारी, सोने–चाँदी के व्यापारी आदि सम्मिलित रहते हैं। मुद्राओं का प्रतिभिज्ञान अत्यधिक जटिल प्रक्रिया होती है। अत: यदि मुद्राएँ साफ हों तो उनके पेंसिल घिसकर छापें तैयार की जानी चाहिये ताकि मुद्रा शास्त्रियों से परामर्श कर उनकी पहचान की जा सके।

यदि मुद्राएँ साफ न हो तो उन्हें सीधे तेजाब में न डालें क्योंकि कुछ सिक्के सीसा आदि नर्मधातु के बने होते है, जो नष्ट हो सकते हैं। इनकी पानी, दही, निम्बू का रस, इमली आदि के द्वारा ही सफाई करना चाहिये। सफाई के बाद मुद्राओं को पानी से अच्छी तरह धोकर सुखाना चाहिये। सुखने के बाद पेराफिन मोम या पोली विनाईल एसीटेंट के घोल की परत चढ़ानी चाहिये ताकि शीघ्र आक्सीकरण न हो

मुद्राओं के संग्रहण हेतु किसी भी पंजीयन की आवश्यकता नहीं होती है अत: इनको आसानी से संग्रहित किया जा सकता है, अत: मुद्रा संग्रहण की प्रवृति का विकास बच्चों में सहज रूप से किया जा सकता है।

**( 3 ) भवन** – ऐसी इमारतें जो किसी ऐतिहासिक घटना, स्मृति अथवा कला एवं स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सर्वेक्षण के अंतर्गत सम्मिलित की जा सकती है, यथा महल, किले, गढ़ियाँ, हवेलियाँ, काँटाघर, गोदाम आदि इसके अंतर्गत आते हैं। ऐसी इमारतों का सर्वप्रथम मानचित्र निर्माण किया जावे ताकि उसमें क्या कहाँ अवस्थित है दर्शाया जा सके। यह जरूरी नहीं है कि यह मानचित्र पैमाने पर हो। फिर इमारत आदि में लगे अभिलेखों आदि के वाचन कर यह पता लगाया जाना चाहिये कि इस भवन का निर्माण क्रम क्या रहा है ? भवन के प्रवेश द्वारा से भीतरी भागों का विवरण गृह स्वामी अथवा स्थानीय

लोगों के विवरण के आधार पर हो तो अधिक उचित रहता है। भवन के विभिन्न कक्षों व उनके निर्माण सामग्री यथा लकड़ी, चूना, मिट्टी, आदि की विशेष जानकारी लिपिबद्ध की जाना चाहिये।

**( 4 ) धार्मिक स्थल** – इसके अन्दर उन स्थलों का सर्वेक्षण किया जा सकता है जिनका उपयोग पहले या वर्तमान में धार्मिक उपासना स्थल के लिये किया जाता था अथवा किया जा रहा है। इसमें प्राचीन खण्डहर मन्दिर, मस्जिद, चर्च, अगियारी, चैत्य, विहार, मठ, गुफाएँ आदि सम्मिलित किये जा सकते हैं। भवनों की तरह इनकी भी योजना तैयार की जा सकती है । इनका विवरण दक्षिणाक्रम से अंकित किया जाना चाहिये । इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण विवरण मन्दिरों का होता है। किसी प्राचीन मन्दिर का प्रतिभिज्ञान उसके गर्भगृह के ललाटबिम्ब पर अंकित प्रतिमा से होता है। लेकिन यह नियम परवर्ती मन्दिरों अथवा पुन: निर्मित मन्दिरों पर लागू नहीं होते है। साधारणत: मन्दिर में मण्डप, अंतराल, गर्भगृह होते हैं । गर्भगृह के प्रवेश का निचला पत्थर चन्द्रशिला व ऊपर का ललाट बिम्ब कहा जाता है। जिस चबूतरे पर बना होता है वह जगती कहलाती है। गर्भगृह का बाहरी भाग रथी कहलाता है। जो पांच या सप्तरथी होता है। गर्भगृह के ऊपर शिखर व सबसे ऊपर रखा गोल पत्थर आमलक व इसके ऊपर कलश होता है। जिस रास्ते से देवालय का पानी निकलता है वह गौमुखी या मकरमुखी कहा जाता है। देवालय पूर्वाभिमुखी या पश्चिमाभिमुखी होते है। हनुमान, भैरव, गणेश, शनि आदि देवताओं के मन्दिर दक्षिणाभिमुखी हो सकते है। इनमें ऐसे ताक जिनमें प्रतिमाएँ जड़ी होती है रथिका कहलाती है।

वर्तमान में बहुधा मन्दिरों का जीर्णोद्धार कर उन्हें सिमेन्टीकरण, तेलरंग आदि के द्वारा सजाया जाता है पर इससे उनकी प्राचीनता प्रकट करने वाले लक्षण समाप्त हो जाते है। अत: जीर्णोद्धार के पूर्व विशेषज्ञों की राय लेना चाहिये।

**( 5 ) स्मृति स्थल** – किसी पवित्र यज्ञ की स्मृति में प्राचीन काल में जिन काष्ठ स्तम्भों को गाड़ने की परम्परा थी वे आगे चलकर पाषाण के निर्मित किये जाने लगे। इसके प्राचीनतम प्रमाण 'ईसापुर के यूप स्तम्भ' है जो क्रमश: 20 फुट व 20 फुट 2 इंच के होकर मथुरा संग्रहालय में प्रदर्शित हैं। ये कुषाण शासक हुविष्क के काल के है। इसी प्रकार पाषाण स्तम्भों के ऊपर राजाज्ञाओं को खुदवाने का प्रचलन सम्राट अशोक ने प्रारम्भ किया । समुद्रगुप्त की विजय प्रशस्ति हमें स्तम्भ पर मिलती है। तात्पर्य यह है कि स्मृति स्थल के रूप में पाषाण स्तम्भ का प्रयोग हमारी प्राचीन परम्परा है जिसका उत्स महाप्रस्तर कालीन सभ्यता में खोजा जा सकता है।

स्मृति स्तम्भ के रूप में अनेक प्रकार की लाटें आदि मिलती है जो मन्दिर, कुण्ड, बाबड़ी, छत्री अथवा चबूतरों के समीप गड़ी मिलती है। इसी प्रकार वीर पुरुष की युद्धआदि में मृत्यु पर 'जुझार' स्थापित करने की परम्परा भी है। किसी वीर पुरुष की मृत्यु के उपरांत उसकी स्त्री द्वारा सती होने के प्रमाण सती स्तम्भों पर मिलते हैं। ये स्तम्भ कलात्मक तो होते ही है परंतु इनका सर्वाधिक महत्व इस बात में है कि ये किसी प्राचीन युद्ध की प्रामाणिक तिथि प्रदान कर सकते है। स्मृति स्थल के रूप में बनी कलात्मक छत्रियाँ स्थापत्य की अनूठी धरोहर होती है। सर्वेक्षण के दौरान इनका छायांकन कर इनके अभिलेखों की छापें निकालना महत्वपूर्ण कार्य है। दुर्भाग्य से जब लोग इन प्राचीन अभिलेखों का वाचन न कर पाते हैं तो वे उन्हें किसी प्राचीन खजाने का बीजक मान लेते हैं, चुरा लेते हैं अथवा नष्ट कर देते हैं।

**( 6 ) प्राचीन गुफाओं, शैलचित्रों युक्त गुफाओं व शैलोत्कीर्ण युक्त गुफाओं की खोज**

प्रागैतिहासिक काल में मानव प्राकृतिक गुहाओं में निवास करता था, ये आज भी गहन वनों, पहाड़ों की कन्दराओं आदि में मिलती है। प्रागैतिहासिक मानव की शरण स्थली के रूप में ऐसे स्थलों का सर्वेक्षण महत्वपूर्ण खोज है बहुधा ऐसी गुफाओं में शैलचित्र मिलते हैं। जिनमें हाथ के निशान, जानवर, शिकार के दृश्य, रथों की सवारी, गर्भिणी गाय आदि नाना प्रकार के दृश्यों का अंकन मिलता है । ये दृश्य हमें गुहा निवासी प्राचीन मानव के दैनिक जीवन आदि की जानकारियाँ प्रदान करने के कारण महत्वपूर्ण है।

ऐसे प्राकृतिक निर्जन स्थलों का उपयोग अक्सर लोग सेल के दौरान भोजन बनाने में करते है । यद्यपि उनका लक्ष्य पर्यटन करना होता है लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से वे ऐसे स्थलों पर खाना बनाकर, आग जलाकर इस प्राचीन धरोहर को नष्ट कर देते हैं। इतना ही नहीं वे इन शैलचित्रों के ऊपर ईंटों के टुकड़े, कोयले और यहाँ तक कि पक्के रंग से न केवल अपना नाम अंकित कर देते है बल्कि अपनी तरफ से चित्रकारी भी कर देते हैं। ऐसी चित्रकारी यद्यपि पुरा मानव की चित्रकला में विकास या ह्रास का दर्शन तो कराती है परंतु यह उसको नष्ट भी करती है। सर्वेक्षण के दौरान यदि कभी ऐसे नवीन स्थल की खोज हो जावे तो पहले यह देख लें कि आपसे पूर्व किसी ने अपनी खोज का दावा तो प्रस्तुत नहीं कर रखा है। शैलचित्रों की खोज में भारत में प्रतिवर्ष यूरोप व अमेरिका के शैलचित्र संशोधक आते हैं व इस दुष्कर कार्य को सम्पन्न करते हैं। वर्तमान में इस क्षेत्र में 'खोज में चोरी' की प्रवृति बढ़ी है। शैलचित्रों पर राक आर्ट सोसायटी आफ इण्डिया नामक संस्था अच्छा कार्य कर रही है। इस हेतु डॉ. गिरिराज कुमार, 01 कमलविहार, दयालबाग, आगरा–282005 अथवा डॉ. जी. एल. बादाम,फ्लेट नम्बर 4, बिल्डिंग 26/1, हेरम्स पारस–3, कल्याणी नगर पूणे (महाराष्ट्र) 41006 से मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

प्राकृतिक व चित्रित शैलाश्रयों के साथ–साथ मानव ने कृत्रिम गुफाओं का निर्माण भी किया है। ये गुफाएँ सिकताश्म अथवा लेटराईट पहाड़ों को काटकर बनायी जाती रही है। अजन्ता, ऐलोरा, कार्लाइल, महाबलिपुरम्, कांगड़ा, धर्मराजेश्वर, कोलवी आदि ऐसे प्रख्यात स्थल हैं। प्रारम्भ में ये गुफाएँ बौद्धधर्मावलम्बियों ने निर्मित करायी बाद में जैन, वैष्णव आदि धर्म के लोगों ने भी इनके निर्माण में अपना योगदान दिया। वनों के कटने से ये गुफाएँ तेजी से नष्ट हो रही हैं। युवक ऐसी गुफाओं के संरक्षण, खोज आदि में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।

**( 7 ) प्रतिमा सर्वेक्षण** – पुराने नगरों मन्दिरों के खण्डहरों आदि में, नदियों, प्राचीन, आवासीय टीलों, बावड़ियों आदि में से अक्सर प्राचीन मूर्तियां निकलती रहती है ऐसा इसलिये है क्योंकि प्राचीन काल में खंडित प्रतिमा को जल में प्रवेश कराने का विधान था।

इस प्रकार से वे प्राप्त प्रतिमाओं को लोग किसी वटवृक्ष, पीपल के वृक्ष या किसी ऐसे स्थान पर रख देते हैं जहाँ उनकी पूजा होती रहे । कई दुर्लभ प्रतिमाएँ अब भी पूजी जा रही है। सैंकड़ों आज भी लावारिस पड़ी है। पाषाण व धातु मूर्तियों के तस्कर भी इस प्रकार के सर्वेक्षण में संलग्न होते हैं जो बहुधा पूरी प्रतिमा को अथवा प्रतिमा के सिर को तोड़कर अथवा काटकर ले जाते हैं। इस

महत्वपूर्ण पुरा सम्पदा को सर्वेक्षण कर के बचाया जा सकता है। खण्डित प्रतिमाओं को संग्रहित कराके स्थानीय संग्रहालय की स्थापना की जा सकती है।

यदि प्रतिमाओं के सर्वेक्षण में कोई ऐसी प्रतिमा मिले जो किसी देवालय में प्रतिष्ठित है या चबूतरे आदि पर रखी जाकर पूजित हो तो उसे स्थानांतरित करके ग्रामीणों को नाराज नहीं करना चाहिये। अपितु उसके महत्व से ग्रामीणों को परिचित कराके उस प्रतिमा का श्वेत श्याम चित्र निकाल कर उसका रेकार्ड तैयार कर लेना चाहिये। प्रतिमा की माप लम्बाई-चौड़ाई×मोटाई में दर्ज की जाना चाहिये । माध्यम के रूप में पाषाण का प्रकार भी दर्ज किया जाना चाहिये।

प्रतिमा का विवरण भी दॉयी ओर से बॉयी तरफ लिखा जाता है। इसमें निम्न बातों के आधार पर सम्पूर्ण विवरण लिखा जाता है जैसे-प्रतिमा की स्थिति यथा खड़ी, बैठी, आड़ी या लेटी, केश सज्जा, आभूषण, आयुध यानें किस-किस हाथ में कौन-कौन सी चीजें धारण कर रखी है अथवा उसका पार्श्व में अंकन है या नहीं। मुख मुद्रा आदि।

प्रतिमाओं का काल निर्धारण एक अनुभवजन्य कार्य है जो प्रतिमा शास्त्र के विशेषज्ञों के परामर्श, शास्त्र के प्रमाण, अभिलेखिक प्रमाण अथवा परम्परा के आधार पर ही किया जाना चाहिये। सर्वेक्षण के दौरान पाषाण अथवा मिट्टी की ऐसी प्रतिमाएँ मिले तो उनके संरक्षण के पर्याप्त प्रयास किये जाना चाहिये।

**( 8 ) युवा, पुराभिलेखों का सर्वेक्षण करा सकते हैं -**

पुराभिलेखों के अंतर्गत पुराने कागजात, सनदें, पट्टे, फरमान, संदेश, बहीखाते, डायरियाँ, बस्ते, पोथियाँ, पाण्डुलिपियाँ, पुरानी पुस्तकें, पत्राचार, ताम्रपत्र, सूचना पत्र, छायाचित्र आदि समाहित किये जा सकते है। ये सामग्री पुराने व प्रतिष्ठित परिवारों, राजघरानों से सम्बन्धित कर्मचारियों, मन्दिरों, मठों, शासकीय कार्यालयों, पुस्तक प्रेमियों आदि के पास संग्रहित होते है । बहुधा ऐसी सामग्री धूल खाती रहती है। अत: इनके संग्रहकर्ताओं को खूब विश्वास में लेकर इनकी जेराक्स प्रतियाँ तैयार की जा सकती है। इनके संग्रहकर्ताओं को इन्हें सँभालकर रखने हेतु प्लास्टिक की थैलियों आदि के इस्तेमाल की जानकारी दी जाना चाहिये। ताम्रपत्रों को साफ करके उनका आकार, वजन आदि की जानकारी कर इसकी भी फोटोकापी करायी जा सकती हैं । रंगीन छायाचित्र लेने के पूर्व ताम्रपत्रों के अक्षरों में पावडर भर देना चाहिये ताकि उसके अक्षर साफ दिखायीं दे।

**( 9 ) युवा, चित्रों का सर्वेक्षण करा सकते हैं** - सम्पन्न परिवारों के निवास स्थान यथा गढ़ी, महल, मठ, हवेली अथवा मन्दिरों में भित्तिचित्रों का निर्माण प्राचीन परम्परा रही है। वर्तमान में पुरा भवनों के आधुनिकीकरण, सिमेन्टीकरण अथवा आइलपेंट आदि की धुन में पुरानी भित्ति चित्रकला नष्ट हो रही है। इसका भी सर्वेक्षण कर इसकी विगत नोट कर ली जानी चाहिये। इसके अंतर्गत चित्र का आकार, रंग संयोजन, वर्ण विषय, शैली, काल आदि बातों का बारीकी से अध्ययन कर लिखना चाहिये। घरों में कांच पर बने चित्र, पोथी चित्र, स्केच, पुराने छायाचित्र आदि भी संग्रहित हो सकते है। इनके स्वामियों को इन्हें सहेजकर रखने की प्रेरणा देना चाहिये।

**( 10 ) युवा, मूल्यवान वस्तुओं का भी सर्वेक्षण कर सकते हैं -**

बहुधा सम्पन्न परिवारों में वंश परम्परा से संग्रहित जेवर, बर्तन, मूर्तियां, धातु के खिलौने, लकड़ी के फर्नीचर, औजार, हथियार आदि होते है जो प्राचीन, कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं । क्षेत्रिय कलाकारों द्वारा निर्मित यह सामग्री अयोग्य उत्तराधिकारियों, बिगड़ेल बच्चों के द्वारा कोड़ियों के मोल बेच दी जाती है। यदि सर्वेक्षण के दौरान ऐसी सामग्री प्राप्त हो जावे तो उसका पूर्ण विवरण नोट कर उसका छायांकन कर लेना चाहिये।

**(X) युवा, 'पुरातत्त्व दिवस' व 'विश्व पर्यटन दिवस' पर कार्यक्रम कर सकते हैं**

युवा, अपने ग्रामों में व उनके विद्यालयों में स्थानीय, इतिहास, पुरातत्त्व आदि पर क्विज प्रतियोगिता, भ्रमण, भाषण, निबंध लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कर सकते है। विद्वानों को आमंत्रित कर उनसे भाषण, प्रदर्शनी, चित्रकला प्रतियोगिता आदि के माध्यम से जानकारियाँ प्राप्त कर सकते है। ये आयोजन प्रतिवर्ष निम्न दिवसों पर किये जा सकते हैं।

**18 अप्रैल-पुरातत्त्व दिवस -**

इस दिवस पर स्थानीय व क्षेत्रिय इतिहास, पुरातत्त्व की सामग्री पर बच्चों व पूर्व विद्यार्थियों के कार्यक्रम कर उन्हें पुरस्कृत किया जा सकता है।

**27 सितम्बर - विश्व पर्यटन दिवस -**

पर्यटन अत्यधिक सजीव जीवन दर्शन है। प्रख्यात शायर मिर्जा गालिब ने लिखा है

**सैर कर दुनिया की गाफिल, जिन्दगानी फिर कहाँ ?**
**जिन्दगानी गर रही तो, नौजवानी फिर कहाँ ?**

इस अवसर पर पंचायतें बच्चों के शैक्षणिक भ्रमण में अपना सहयोग प्रदान कर छात्रों का उत्साहवर्धन कर सकती है।

## युवा क्या न करें

इस प्रकार युवक हमारी सांस्कृतिक सम्पदा के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका को निभा सकते हैं। लेकिन बहुधा यह देखा जाता है कि वे इस प्रकार के अभियान से जुड़कर लालच में पड़ जाते है। भटक कर पुरावस्तुओं की तस्करी तथा खरीद-फरोख्त में लग जाते है। यदि आप किसी संगठन के सच्चे सहयोगी है तो आपका ऐसा भटकाव उचित नहीं है।

**( 1 ) व्यक्तिगत संग्रह की प्रवृत्ति से बचें -**

पुरावस्तुएँ राष्ट्रीय सम्पदा है अत: इनके व्यक्तिगत संग्रहण की प्रवृत्ति से बचें। ऐसे में चोरी चकारी, धनार्जन आदि की प्रवृत्ति का विकास होता है धीरे धीरे युवक इन वस्तुओं के संरक्षक होने की अपेक्षा तस्कर बन जाता है। अक्सर व्यक्तिगत संग्रहकर्ता/ पुरावस्तुओं के दलाल/व्यापारी ऐसी प्रवृत्ति उत्पन्न करते हैं।

व्यक्तिगत संग्रह आगे चलकर पारिवारिक विवादों में घिर जाते है। परिवार के लोग इन्हें या तो कबाड़े में बेंच देते हैं या दबा कर बैठ जाते है। ऐसे संग्रह का खोनें या चोरी होने का भय होता है। ऐसी स्थिति में इस सम्पदा को शासकीय उपक्रम में ही जमा कराकर रसीद प्राप्त करना चाहिये।

**(II) विश्वास जाग्रत करें न कि भय -**

अक्सर प्राचीन खंण्डहरों के प्रति लोगों का यह विश्वास होता है कि इनमें भूतप्रेत का निवास होता है। टूटी-फूटी प्रतिमाएँ अभिशापित होती है। अक्सर मिडिया वाले इस पक्ष को अपने हित में उजागर करना चाहते है। अत: हमें लोगों को यह विश्वास कराना चाहिये की ये स्थल हमारे पूर्वजों के द्वारा

निर्मित किए गए है। सुरक्षा, मरम्मत आदि के अभाव में खण्डहर हो रहे है। हमारी भावी पीढ़ी के लिए हमें इन्हें सुरक्षित रखने के यथा सम्भव प्रयास करना चाहिए।

**(III) प्रामाणिक शोधकार्य करें न कि तथ्यों की चोरी –**

यदि आप इसको पढ़कर आपकी इतिहास में रुचिजाग्रत हो जाए और आप शोधकार्य की ओर प्रवृत्त हों तो मौलिक कार्य को अपना लक्ष्य बनाए। चोरी–चकारी की प्रवृत्ति से बचें क्योंकि एक न एक दिन लोग जान जाएंगे कि आपने अपने से पूर्ववर्ती किस लेखक की सामग्री की चोरी की है। नाम एवं ख्याति की दृष्टि की गई चोरियाँ अन्त में आपके खोखलेपन को उजागर कर देगी अत: जिस किसी की सामग्री का उपयोग करें उसका प्रामाणिक संदर्भ अवश्य दें।

**(IV) स्मारकों पर अपलेखन न करें –**

अक्सर युवा जब किसी प्राचीन स्मारक किले, महल, मंदिर, गढ़ी आदि की यात्रा करते हैं तो लौटने के पूर्व कोयले, चाक, कवेलु, काँच के टूकड़े, छैनी आदि से अपना नाम लिख देते है। आपकी इस नामेष्णा के कारण स्मारकों की दिवारें खराब हो जाती हैं। सोचिये, किसको गरज पडी है कि वो आपके नाम को पढ़ेगा ? काँच व छैनी से खोदे हुए नाम से दिवारों प्लास्टर क्षतिग्रस्त हो जाता है। अभिलेखों के ऊपर खोदने से इतिहास नष्ट हो जाता है। संरक्षित स्मारकों में तो ऐसे कृत्य अपराध की श्रेणी में आते है। यदि आप पकड़े गए तो सजा हो सकती है।

**(V) पर्यटन स्थलों की सफाई करें न कि गंदगी–**

यदि आप किसी भी संगठन के स्वयं सेवक है तो एक जिम्मेदारी ओढ़ लें – युवा बनाम सफाई। अक्सर पर्यटन स्थलों पर नल, हेण्डपम्प आदि स्थानों पर गंदगी मिलती है। पानी यहाँ वहाँ फैलता है, कीचड़ होता है। यदि कुछ करना चाहते है तो इस अव्यवस्था को दूर करने का प्रयास करें। पेयजल स्त्रोतों की सफाई में रुचि लें न कि गंदगी फैलाने में। ऐसे स्थानों पर प्लास्टिक की बोतलें, जूठी पत्तले आदि फैलाने को पाप मानें। यहाँ–वहाँ थूँकने, जूठन फेंकने व मल–मूत्र त्याग करने से बचें।

**(VI) हानि की शिकायत करें न कि उपेक्षा–**

अक्सर धार्मिक व ऐतिहासिकस्थलों पर दानदाताओं अथवा शासन द्वारा दरवाजे, तार फेंसिंग, शेड, फर्शीकरण आदि करवाया जाता है। इन्हें लोग नष्ट करते हैं अथवा खुले आम चोरी करते हैं। यदि आपके सामने ऐसी घटना हो या घटिया निर्माण कार्य हो तो संबंधित कार्यालय को शिकायत करने से न चूकें। आपकी पहल रंग ला सकती है।

**(VII) संग्रहकर्ता को सचेत करें–**

अक्सर लोग अज्ञानता के कारण भय के कारण अपने घर परिवार में संग्रहित पुरासम्पदा यथा मूर्ति, ताम्रपत्र, सनद, पाण्डुलिपियाँ, सिक्के आदि की जानकारी का प्रकाशन नहीं करते व नहीं पंजीयन कराते है। पुरातत्त्व विभाग द्वारा पंजीयन प्रमाणपत्र नि:शुल्क जारी किया जाता है। अत: जहाँ–कहाँ ऐसी सामग्री दिखे उसके संग्रहकर्ता को सचेत करें कि वह उसका पंजीयन करा ले। ऐसी सामग्री को प्रदेश के पुरातत्त्व विभाग, राष्ट्रीय अभिलेखागार आदि खरीदने हेतु समय–समय पर विज्ञापन जारी करते हैं। यदि आप ऐसी वस्तुओं सुरक्षित नहीं रख पावें तो क्रय करने हेतु इन विज्ञापनों के आधार पर आवेदन करें अथवा संग्रहालयों में प्रदर्शन की दृष्टि से दान कर दें। धन न मिले तो कोई बात नहीं पर इस बात का संतोष करें कि आपने अपने पूर्वजों की धरोहर को सुरक्षित रख दिया है। इसके बदले में प्रमाणपत्र अवश्य प्राप्त करें।

**(VIII) पुरासम्पदा संग्रहण की धोखेबाजी से बचे–**

अक्सर आपको पर्यटक स्थलों पर प्राचीन पेंटिग, सिक्के, आदि बेंचते हुए मिल जावेंगे। लोग आपको अकबर का लोटा, मुगल पेंटिग, बंदर छाप सिक्के, पाँच हिरन वाले नोट, बाबर का खंजर, गड़ा हुआ दफीना, सौने चाँदी के सिक्के जेवर आदि खरीदने हेतु आग्रह करेंगे। ये 100 प्रतिशत नकली होते हैं। व्यापारी कुशल चित्रकारों से नकली पेंटिग बनवाते है, बर्तन–सिक्के–हथियार आदि ढलवाते है ताकि आपकी रुचि का दोहन किया जा सके।

**(IX) देशी–विदेशी, पारिवारिक, विभागीय अधिकारियों के प्रभाव में न आवें–**

संग्रहकर्ता व पुरावस्तु धारकों को किसी के प्रभाव में आकर अपनी दुर्लभ वस्तु जैसे–पुस्तक, दस्तावेज, ताम्रपत्र, पेंटिग आदि प्रदान नहीं करना चाहिये। अक्सर ऐसे लोग सामग्री को ले जाने पर लौटते नहीं है। विदेशी लोग सभी पूर्णत: प्रामाणिक नहीं होते। विभाग के लोग आप से जांच के नाम पर वस्तुएँ प्राप्त कर लेंगे पर जब आप अपनी सामग्री वापस मांगेंगे तो वे लोग पल्ला झाड़ लेंगे।

**(X) युवा जिला पुरातत्त्व संघों को निष्क्रिय न करें–**

संभवत: भारत भर में म.प्र. ही ऐसा राज्य है जहाँ जिला स्तर पर जिला पुरातत्त्व संघों का गठन किया है। प्रत्येक जिले में इस संघ का गठन अनिवार्य है। कलेक्टर इसके अध्यक्ष होते हैं। जिले में इतिहास व पुरातत्त्व में रुचि रखने वाले व्यक्ति इसके सदस्य बन सकते हैं। एक वर्ष में कम से कम तीन बार इस संगठन की बैठक होना चाहिये । युवाओं को चाहिये वे अपने जिले के कलेक्टर से मिलकर इस संगठन को सक्रिय रखे। इस संगठन के माध्यम से पुरातत्त्वीय गतिविधियों को संचालित करने के लिए शासन से अनुदान भी प्राप्त किया जा सकता है। युवाओं को चाहिये कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा व राजनीतिक गुटबाजी में पड़कर इस संगठन को निष्क्रिय न करें।

## पुरातत्त्वीय नियम एवं अधिनियम

01 केन्द्र शासन द्वारा निर्मित – प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्त्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम 1958

02 केन्द्र शासन द्वारा निर्मित – प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्त्वीय अवशेष अधिनियम 1959

03 मध्यप्रदेश निखात निधि नियम 14 जुलाई, 1964 ( प्रमुख बातें )

**इतिहास**–सन् 1878 ई. में ब्रिटिश शासन में सर्वप्रथम यह नियम बनाया गया। कोई 86 वर्ष तक यही नियम भारतीय निखात निधि अधिनियम के नाम से प्रचलित रहा। देश की आजादी के कोई 17 वर्ष बाद उसमें राज्य स्तरीय संशोधन हुआ।

**प्रमुख बिन्दु**– इस अधिनियम की प्रमुख बातें इस प्रकार है –

(i) किसी स्थान पर जमीन से खजाना निकला है ऐसी जानकारी मिलने पर कलेक्टर उसकी सूचना संचालक, पुरातत्त्व तथा संग्रहालय म. प्र. शासन को देगा।

(ii) संचालक, पुरातत्त्व म.प्र.शासन 60 दिन में निखात निधि के

निरीक्षण की व्यवस्था करेगा तथा उसका कोई भाग शासन द्वारा अर्जित करने की रपट कलेक्टर को प्रस्तुत करेगा।

(iii) कलेक्टर, निखात निधि को अर्जित करने के लिए धारा 16 के अधिकार का प्रयोग करने के पूर्व शासन के आदेश प्राप्त करेगा।

(iv) संचालन पुरातत्त्व विभाग कलेक्टर से प्राप्त निधि को राज्य शासन के संग्रहालयों तथा संस्थाओं के बीच वितरण की सिफारिश करेगा।

(v) संचालक, पुरातत्त्व विभाग वित्तीय वर्ष के दौरान निधि की सांकेतिक रिपोर्ट भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय को भेजेगा।

04 मध्यप्रदेश शासन द्वारा निर्मित – मध्यप्रदेश प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्त्वीय स्थल तथा अवशेष (संशोधन) अधिनियम – 1970

05 मध्यप्रदेश शासन द्वारा निर्मित – मध्यप्रदेश प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्त्वीय स्थल तथा अवशेष (संशोधन) अधिनियम – 1975

06 केन्द्र शासन द्वारा निर्मित 'पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम 1972 पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृतियों का निर्यात व्यापार विनियमित करने परावशेषों की तस्करी तथा उनमें कपटपूर्ण संव्यवहार के निवारण, सार्वजनिक स्थानों से पुरावशेषों तथा बहुमूल्य कलाकृतियों के रखे जाने के लिए उनके अनिवार्य अर्जन और उनमें संबद्ध अथवा सशक्त या आनुषंगिक कतिपय अन्य विषयों के बारें में उपबंध करने के लिए अधिनियम।'.

07 केन्द्र शासन द्वारा निर्मित – पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति नियम – 1973

– निदेशक, श्री दशपुर प्राच्य शोध संस्थान मंदसौर 458001 (म.प्र)
मोबाईल : 9424546019

# कला समय

## आगामी अंक
## अक्टूबर-नवम्बर 2020

### लघुचित्रों और साहित्य के अंतर्संबंध

**संस्कृत ग्रन्थ वाल्मीकि,**

**रामायण, महाभारत, भागवत, अभिज्ञान शाकुन्तलम और गीत गोविन्द तथा मध्यकाल में सूर केशव, बिहारी और देव जैसे कवियों के काव्य प्रसंगों के आधार पर मध्यकालीन की लघुचित्र शैलियों में बहुत अंकन हुए लेकिन साहित्य और चित्रकला के इस अंतर्संबंधों पर कितनी चर्चा हुई, विमर्श हुए या इन अंतर्संबंधों की पड़ताल नहीं हो पाई, कला और साहित्य के इन अंतर्संबंधों पर केन्द्रित ''कला समय'' के आगामी अंक में इस विषय पर केन्द्रित मनोरम लघुचित्रों की छबियों के साथ विद्वानों के विचारोत्तेजक आलेख आप जरूर पढ़ें।**

**– सम्पादक**

आलेख

''काशी हिन्दु विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा आयोजित अंतराष्ट्रीय वेबिनार में दिये गये व्याख्यान का संपादित अंश''

# संगीत में घराना: कुछ सुलगते सवाल- पं. विजयशंकर मिश्र

पं. विजयशंकर मिश्र

संगीत के क्षेत्र में घराना कोई नई बात नहीं है। यह काफी प्राचीन काल से ही संगीत में प्रचलित रहा है। जब घराना शब्द का प्रचलन नहीं था संगीत में, तब भी संगीत में घराना प्रणाली प्रचलित थी अलग-अलग नामों से। आचार्य शारंगदेव ने संप्रदाय शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ है सम्पूर्णता पूर्वक प्रदान करना। उस समय न तो किसी धर्म, संप्रदाय से जुड़ना गुनाह माना जाता था और न तो साम्प्रदायिक होना ही।

वह युग राजाओं, नवाबों का था। उनके दरबारों में एक-से बढ़कर एक महान् संगीतकार रहते थे, जिन पर उन राजाओं, नवाबों को गर्व होता था। और, वे जब भी दूसरे राज्यों में जाते थे अपने साथ संगीतकारों को भी ले जाते थे। तब राजनीतिक चर्चाओं के साथ-साथ दोनों ओर के संगीतकारों की मनोहारी प्रस्तुतियां भी होती थीं। और, उपहार स्वरुप संगीतकारों का भी आदान-प्रदान हुआ करता था। संगीत सम्राट तानसेन भी अकबर के दरबार में रीवा के राजा के दरबार से आये थे।

उस काल खंडमें अलग-अलग राजाओं, नवाबों के संरक्षण में रहकर संगीतकारों ने अपनी-अपनी कला का अभूतपूर्व विकास किया..... उसे नया आयाम दिया..... नई दिशा दी। और अपनी रचनात्मकता का श्रेय अपने आश्रयदाताओं को देकर एक तरह से नमक का हक अदा किया। ध्यान दीजिये, ध्रुवपद और घमार के आविष्कार का श्रेय ग्वालियर के राजा मान सिंह तोमर को दिया जाता है, जबकि उनके दरबार में नायक बैजनाथ उर्फ बैजू बावरा भी थे। बैजू बावरा के गुरु स्वामी हरिदास रासलीला का शुभारम्भ तब तक कर चुके थे जो पूरी तरह से ध्रुवपद गीतों पर आधारित थी और जिसकी नृत्य संरचना आमेर के एक कत्थक-कथक नर्तक आचार्य वल्लभ ने की थी। यह विवरण देते हुए मैं आप लोगों का ध्यान इस ओर भी आकर्षित करना चाहता हूं कि हमारे यहां इतिहास कैसे लिखा जाता है? और, फिर पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसे ही कैसे पढ़ाया जाता है। ध्रुवपद को तब गाते तो थे ही ध्रुवपद अंग से वीणा आदि जैसे साजों को बजाते भी थे। इसलिये, तानसेन के समय तक आते-आते जब ध्रुवपद गायकी 4 शाखाओं में विभक्त हो गई तो उसे अलग-अलग वाणियों की संज्ञा दी गई गौड़हार वाणी, डागुर वाणी, खंडार वाणी और नौहार वाणी। इनमें गौड़हार वाणी को राजा की संज्ञा दी गई। माना जाता है कि चूंकि तानसेन गौड़ीय ब्राह्मण थे इसलिये वे ध्रुवपद की जिस शैली को गाते थे उसे गौड़हार वाणी कहा गया डागर परंपरा के कलाकारों के अनुसार डागर वाणी के आविष्कारक स्वामी हरिदास थे। यपि मैं इससे सहमत नहीं हूं। स्वामी हरिदास के नाम के साथ मुझे कहीं भी डागर या डागुर शब्द नहीं मिला। डागर वाणी के सर्जक डागर साहब हरियाणा के रहनेवाले थे और हिंदू थे। ऐसे प्रमाण मिलते हैं। हरियाणा में डागर उपनाम धारी एक जाति मिलती भी है। इसी तरह से तंत्र वादयों की वादन शैलियों को बाज शब्द की संज्ञा दी गई। सेनिया बाज, जयपुर बाज, इमदाद खानी बाज, जाफरखानी बाज आदि । संगीत के क्षेत्र में घरानों का एक बहुत बड़ा योगदान यह रहा है कि इसने संगीत की विकास यात्रा को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। हर एक नये घराने का अर्थ होता था तब उसमें- एक नयी विशेषता का समावेश होना। किसी नये घराने की स्थापना के लिये सबसे पहली शर्त यह होती थी कि उसमें कोई नयी बात, कोई ऐसी विशेषता हो जो अब तक के घरानों में न रही हो, तभी किसी नये घरानें को मान्यता मिलती थी। लेकिन, कोई नयी बात हो जाने से ही घराने को मान्यता नहीं मिल जाती थी। इसके लिये वह भी जरुरी होता था कि आपने जिस नई बात को कहा है, जिस नयी शैली की स्थापना की है, वह अबाध रुप से अगली तीन पीढ़ियों तक चलती रहे। तभी उसे घराने की मान्यता मिल पाती थी। मैं फिर स्पष्ट कर दूं कि एक नये घराने को मान्यता दिलाने के लिए इन दोनों शर्तों का पालन होना जरुरी होता था किसी एक शर्त के पूरा होने भर से किसी भी शैली या परंपरा को नये घराने के रुप में मान्यता नहीं मिलती थी।

यहां मैं अत्यन्त विनम्रता के साथ निवेदन करना चाहता हूं कि उस्ताद अहमद जान थिरकवा, उस्ताद अमीर हुसैन खां साहब और चूडियां वाले इमाम बख्श जैसे महान् तबला वादकों ने क्रमशः मुरादाबाद घराना, बंबई घराना और भटोला घराना बनाने की कोशिशे की थीं किंतु सफल नहीं हो पाये। क्योंकि, इनके अनेक महान् शिष्यों में से कोई भी उस दम-खम वाला नहीं हुआ। वे सभी अच्छे तबला वादक तो हुए किंतु नयी परंपरा के संवाहक नहीं बन पाये। थिरकवा साहब ने अपना पारंपरिक तबला ही बजाया था। उ. अमीर हुसैन खां ने जरुर अनेक अच्छी बंदिशों की रचना करके अपनी सृजनात्मक क्षमता का परिचय दिया था लेकिन इन तीनों ही तबला वादकों ने किसी नयी शैली की स्थापना नही की थीं। इसीलिये इनकी परंपरा को नये घराने का नाम नहीं मिला लेकिन, यहीं एक अपवाद भी मिलता है खयाल गायन के इंदौर घराने के प्रवर्तक उस्ताद अमीर खां साहब को उनकी दूसरी पीढ़ी में ही मान्यता मिल गई थी। आकाशवाणी के एक कार्यक्रमों में जब वे अपने दो शिष्यों के साथ गाने बैठे थे तो उनके परिचय में इंदौर घराने का नामोल्लेख हुआ था। ऐसा शायद पहली बार हुआ था।

बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध संचार क्रांति की शुरुआत थी। आकाशवाणी के बढ़ते पांवों ने जैसे घरानों को सिमटने के लिये विवश कर दिया। अब, हर घराने का संगीतकार दूसरे घरानों के संगीतकारों को घर बैठे सुन सकता था, उसकी विशेषताओं को इच्छानुसार अपना सकता था रही-सही कसर ग्रामोफोन और कैसेट कंपानियों ने पूरी कर दी इनके माध्यम से संगीतकारों ने अपने-अपने प्रिय संगीतकारों के संगीत को बार-बार सुनकर उन्हें अपनाने की कोशिशें शुरु कर दी इसका प्रतिफल यह हुआ कि एक ओर तो लोगों का गायन, वादन और नर्तन समृद्ध हुआ तो दूसरी और घरानागत दूरियां

मिटने के कारण घरानों की मौलिक विशेषताओं पर संकट के बादल भी घिर आये। देश की आजादी के पहले का वह एक अलग समय था जब हम किसी व्यक्ति की वेश भूषा या बोल चाल से समझ जाते थे कि यह आदमी राजस्थानी है, यह बंगाली है और यह गुजराती। लेकिन, आज इन्हें पहचानना कठिन हो गया है। सभी एक जैसे कपड़े पहनने लगे हैं पैंट-शर्ट और एक जैसी बोली बोलने लगे हैं अंग्रेजी। लगभग यही स्थिति घरानों की है घरानागत बंदिशों की बात अगर छोड़ दें तो प्रस्तुतिकरण की शैली के आधार पर आज कोई भी कलाकार यह दावा करने की स्थिति में नहीं है कि मैं अपने घराने की शुद्ध शैली में गाता, बजाता या नाचता हूं। हां। यह अलग बात है कि वरिष्ठ कलाकारों ने अपनी खुद की एक अलग और विशिष्ट शैली विकसित करने की पूरी कोशिश की है। पं. जसराज, पं. राजन-साजन मिश्र, उस्ताद जाकिर हुसैन, पं. सुरेश तलवलकर और इन जैसे कलाकारों के गायन, वादन की स्पष्ट झलक इनके शिष्यों और अनुयायियों में स्पष्ट देखी जा सकती है दिवंगत कलाकारों में पं. कुमार गंधर्व, पं. भीमसेन जोशी और पं. किशन महाराज आदि को इस श्रेणि में रखा जा सकता है यह अच्छा है या बुरा ? सही है या गलत ? इस पर हां या ना में जवाब देना कठिन है इस पर थोड़ा सा विचार कर लेते हैं।

संगीत समय और समाज से जुड़ी हुई कला है। और, बदलते समय तथा बदलते समाज का प्रभाव इस पर पड़ना स्वाभाविक ही है। यहां पर दो महत्वपूर्ण बातों की ओर मैं आप लोगों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। अगर किसी एक कलाकार को किसी दूसरे कलाकार की कोई बात अच्छी लगती है, पसंद आती है, तो वह उसे अपनाने के लिये पूरी तरह स्वतंत्र होता है। किसी भी तीसरे व्यक्ति को उसे रोकने का अधिकार नहीं है।और, यह आज से नहीं शुरु से होता रहा है। फर्रुखाबाद घराने के वरिष्ठ ताबलिक उ. अहमदजान थिरकवा और उ. अमीर हुसैन खां ने अपने गुरु की इजाजत से दिल्ली घराने के खलीफा उ. नत्थू खां साहब से भी सीखा था। अजराड़ा घराने के वरिष्ठ तबला वादक उ. हबीबुद्धीन खां ने दिल्ली घराने के उ. नत्थू खां और लखनऊ घराने के उ. अली रजा खां से भी सीखा था।अजराड़ा घराने के ही दूसरे वरिष्ठ ताबलिक उ. नियाजू खां ने अपने वालिद उ. बन्ने खां के अलावा दिल्ली घराने के उ. गामी खां से भी सीखा था। भारत रत्न पं. भीमसेन जोशी ने अपने गुरु सवाई गंधर्व से सीखने के बाद उ. अमीर खां, विदुषी केसरबाई केरकर, विदुषी सिद्धेश्वरी देवी और विदुषी बेगम अख्तर की गायकी से काफी प्रेरणा ली थी। इस तरह के और भी उदाहरण हैं। कई उदाहरण ऐसे भी हैं जिनमें कलाकारों ने प्रत्यक्ष तौर परन सीखकर अप्रत्यक्ष रुप से वरिष्ठ कलाकारों के गुणों को अपनाया है। इस दृष्टि से एक बहुत बड़ा नाम इंदौर घराने के प्रवर्तक गायक उ. अमीर खां साहब का है। उ. अमीर खां की गायकी से प्रेरणा लेने वालों में पं. रविशंकर, उ. विलायत खां, पंडित भीमसेन जोशी और पं. जसराज जैसे कई वरिष्ठ कलाकारों के नाम शुमार हैं, जबकि स्वयं उ. अमीर खां ने अपने पिता उ. शाहमीर खां से सीखने के बाद भेंडी बजार घराने के उ. अमान अली खां और देवास के उ. रजब अली खां के गायन से काफी प्रेरणा ली थी।

इन बातों की चर्चा करते हुए हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आज संगीत को एक व्यावसायिक कला के रुप में भी अपनाया जा रहा है। यह जीविकोपार्जन और धनोपार्जन का भी एक सशक्तमाध्यम बन गया है। इसलिये भी अनेक कलाकारों ने घरानागत शुद्धता की अपेक्षा व्यावसायिक सफलता की ओर अधिक ध्यान देना शुरु कर दिया है। क्योंकि, अब उन्हें आयोजकों, प्रायोजकों सहित हजारों दर्शकों, श्रोताओं को भी खुश करना होता है। इसलिये वे अपने गायन, वादन और नर्तन को अधिकाधिक आकर्षक और समृद्ध बनाने की कोशिश कर रहें है। ताकि, वे हर तरह के लोगों को खुश कर सकें, संतुष्ट कर सकें। और, यह गलत भी नहीं है। लेकिन, यहीं यह कहना भी गलत नहीं होगा कि आज घरानागत अनेक विशेषतायें विलुप्त होने के कगार पर हैं।

तबला वादन के क्षेत्र में अगर बात करें तो अब वह समय नहीं रहा कि गायन की संगति के लिये किसी एक ताबलिक को ले लो, स्वर वाद्यों की संगति के लिये किसी दूसरे ताबलिक को और नृत्य की संगति के लिये किसी तीसरे ताबलिक को। अब हर तबला वादक चाहता है कि वह अधिक से अधिक लोगों के साथ अधिक से अधिक कार्यक्रम बजाये। इसलिये वे खुद को हरफनमौला बनाने की कोशिश भी करते हैं। यह अलग बात है कि कोई बन जाता है हरफनमौला और कोई नहीं। लेकिन, यहां यह ध्यान देने वाली बात है कि अगर दिल्ली या अजराड़ा घराने के तबला वादक सिर्फ दो अंगुलियों का किनार का बाज ही बजाते रहेंगे तो कथक नृत्य की समुचित संगति नहीं कर पायेंगे। इसलिये दिल्ली घराने के सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद लतीफ अहमद खां को दिल्ली घराने की सीमा रेखा से बाहर निकलना पड़ा बाद में उ. शफात अहमद खां ने भी उनका अनुसरण किया। इसी तरह अजराड़ा घराने के उस्ताद हबीबुद्दीन खां साहब और और उ. हसमत अली खां को भी नृत्य की संगति के लिये अजराड़ा घराने के बंद दरवाजे से बाहर आना पड़ा। बनारस के कलाकारों को समय और अवसर के अनुरुप किनार और दो अंगुलियों के बाज को अपनाना पड़ा। जो लोग ऐसा सफलतापूर्वक कर पाये, संगीत के व्यावसायिक मंचों ने उन्हें हाथोंहाथ लिया। वैसे, खा-कमा तो दूसरे लोग भी रहें ही है।

और, इस तरह से एक-एक करके घरानों की दीवारें गिरने लगीं। और, आज अगर मैं यह कहूं कि... आज की तारीख में घरानागत विशेषतायें या तो घरानागत बंदिशों में निहित हैं और या तो पाठ्य पुस्तकों में- तो शायद- गलत नहीं होगा- यपि मेरा यह कथन लोगों को बुरा जरुर लगेगा। दरअसल, जाति और धर्म की ही तरह घराना भी बहुत संवदेनाशील विषय है और इस विषय से हर संगीतकार भावनात्मक रुप से जुड़ा होता है। इसलिये इसकी आलोचना वह कतई बर्दास्त नहीं कर पाता है। कुछ ही दिन पहले की बात है। मेरा लाइव इंटरव्यू चल रहा था। दर्शकों और श्रोताओं की ओर से लगातार प्रश्न आ रहे थे और मैं अपनी ओर से यथासंभव उत्तर देने की कोशिश कर रहा था। वार्ताकार भी अपनी ओर से लगातार प्रश्न पूछ रहीं थीं।

अचानक एक प्रश्न कोलकाता से आया कि कोलकाता के घरानों के विषय में आप की क्या राय है ? मैंने जवाब दिया कि कोलकाता और बंगाल ने संगीत के क्षेत्र में बहुत योगदान दिया है। मेरे पिता गुरु तबला शिरोमणि पं. गामा महाराज कहते थे कि एक समय ऐसा था कि जब तक संगीतकारों को कोलकाता में सराहना नहीं मिल जाती थी तब तक उन्हें प्रतिभावान कलाकार नहीं माना जाता था। मैंने यह भी कहा कि अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह को जब कोलकाता के मटिया बुर्ज में नज़रबंद किया गया तो अवध की रंगीनियां कोलकाता में बिखरने लगीं। और बंगाल के प्रतिभासंपन्न संगीतकारों ने बंगला भाषा में भी ठुमरी और टप्पा को लिखना तथा गाना शुरु कर दिया। मैं

ने यह भी कहा कि कोलकाता चूंकि संगीत का गढ़ है। इसलिये, अलग-अलग परंपरा और घराने के अनेक संगीतकार वहां हैं और वे सभी मिलकर संगीत की भिन्न-भिन्न धाराओं को समृद्ध कर रहे हैं। लेकिन, कोलकाता स्वयं में कोई घराना नहीं है

इंटरव्यू समाप्त होते ही कई फोन और व्हाट्सप मैसेज मेरे पास आने लगे, और वे आज भी आयेंगे कि मैं ने कोलकाता के विष्णुपुर घराने की बात क्यों नहीं की ? वह ध्रुवपद का सबसे पुराना घराना है। मैंने उन लोगों को बहुत विनम्रता से समझाने की कोशिश की, कि विष्णुपुर और कोलकाता अलग-अलग जगहें हैं। दोनों के जिला भी अलग हैं, और आने-जाने में तीन-चार घंटे का समय भी लगता है। लेकिन, जब मैंने देखा कि वे लोग मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हैं, और केवल अपनी बात कहना चाहते हैं तो मैंने उन्हें उत्तर देना बंद कर दिया। लेकिन, आज इस मंच का उपयोग मैं उस चर्चा के लिये करना चाहता हूं।

सबसे पहली बात तो यह कि मुझे मालूम है कि पश्चिम बंगाल का विष्णुपुर क्षेत्र महान् संगीतकारों का गढ़ रहा है। गदाघर चक्रवर्ती, मुरलीघर चक्रवर्ती, और बेचाराम चटटोपाध्याय जैसे कई महान् संगीतकार इस परंपरा में हुए थे। जोदू भट्ट के नाम से सुविख्यात पं. यदुनाथ भट्टाचार्या जैसे संगीतकार भी इस परंपरा में हुए थे, जिन्होंने गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के बचपन में उन्हें ध्रुवपद सिखाया था यह अलग बात है कि ध्रुवपद के कठोर बंधनों को रवि ठाकुर स्वीकार नहीं कर पाये, अत: यह सिलसिला ज्यादा लंबा नहीं चला। आज की तारीख में भी पं. मणिलाल नाग जैसे सितार वादक और पं. अमिय रंजन बंदोपाध्याय जैसे गायक विष्णुपुर परम्परा से ही जुड़े हुए हैं।

लेकिन, प्रश्न तो यह है कि ध्रुवपद का कोई घराना स्थान के नाम पर बना ही नहीं आजतक जिस ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर को ध्रुवपद का आविष्कारक कहकर प्रचारित किया जाता है भले ही यह स्तुत्य कार्य उनके राजकीय संगीतकार नायक बैजनाथ उर्फ बैजू बावरा ने की हो। लेकिन ध्रुवपद गायन का न तो कोई ग्वालियर घराना बना और न तो स्वामी हरिदास की पुण्यभूमि मथुरा-वृदांवन में ध्रुवपद का कोई घराना स्थापित हुआ, जबकि वहां बहुत अच्छे-अच्छे ध्रुवपद गायक हुए हैं। डागर परंपरा के कलाकारों ने ध्रुवपद का बहुत प्रचार-प्रसार किया। इस परंपरा के कलाकार राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, गुजरात और महाराष्ट्र आदि प्रांतों में रहकर ध्रुवपद का प्रचार-प्रसार करते रहे। लेकिन, परंपरा डागर वाणी ही कहलाई। बिहार के ध्रुवपद गायकों ने भी अपनी पपरंपरा का खूब प्रचार-प्रसार किया, लेकिन बिहार घराना नहीं स्थापित किया। वे खुद को गौड़हार वाणी का ही गायक कहते रहे।

बनारस में भी संगीत स्वामी हरिदास के गुरु राधावल्लभ संप्रदाय के विद्वान संगीतज्ञ 108 हित हरिवंशजी स्वामी के माध्यम से आया। पं. दिलाराम मिश्र सेवक ने उनसे सीखकर बनारस में छंद-प्रबंध के गायन की शुरुआत की थी, बाद में ध्रुवपद-धमार भी गाया गया बनारस में लगभग 30वर्ष पहले तक बनारस में पं. हरि शंकर मिश्र जैसे धुरंधर गायक थे। वे जब ध्रुवपद गाने बैठते थे तो बड़े-बड़े पखावजी पखावज पर थाप नहीं लगा पाते थे। दर्जनों बार उनका ध्रुवपद मैंने सुना है। बचपन में तबला लेकर कई बार उनके साथ बैठने का और संगत करने का तौर-तरीका सीखने का सुयोग भी मुझे मिला है। तब वे भी लखनऊ में रहते थे और मैं भी पं. हरिशंकर मिश्र खयाल, ठुमरी और टप्पा वगैरह भी बहुत बढ़िया गाते थे। लेकिन, इन सबके बावजूद भी बनारस में ध्रुवपद का कोई घराना नहीं बना। घरानों की बात करते हुए हमें यह स्मरण रखना होगा कि यह केवल आस्था और भावना का ही विषय नहीं है यह तर्क का भी विषय है।

और भी उदाहरण है- बनारस में पं. लक्ष्मीदास मिश्र नामक एक महान् वीणा वादक हुए थे। उनकी वीणा दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में आज भी रखा हुआ है। उनसे सीखने के लिये पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्करजी भी गये थे। लेकिन, उन्होंने यह कहकर सिखाने से मना कर दिया कि- तुम अच्छा गा रहे हो, और इस समय गुरु तथा परंपरा बदलना उचित नहीं होगा उसके बाद भी बनारस में वीणा के कई कलाकार हुए। पंडित छोटे रामदासजी तक वह परंपरा चली, किंतु बनारस में वीणा का भी कोई घराना स्थापित नहीं हुआ। बनारस के संगीतकारों ने इसके लिये कोई आग्रह भी नहीं किया।

यहां मैं, इस बात को एक बार फिर से दुहराना चाहता हूं कि केवल अच्छे कलाकार हो जाने से ही कोई घराना नहीं बन जाता है। उसके लिये कई दूसरी चीजों की भी जरुरत पड़ती है। नही तो हमारे उदार दिल महान् संगीतकारों ने हर गली-मुहल्ले में एक-एक घराना स्थापित कर दिया होता। लेकिन, इसके लिये कुछ नियम हैं, कुछ प्रावधान हैं जिनकी चर्चा मैं पहले कर चुका हूं।

मेरे परदादाजी संगीत नायक पं. दरगाही मिश्रजी महान् संगीतकार थे। विद्याधरी देवी और जद्न बाई जैसी गायिकायें उनकी शिष्या थीं। उनके एक प्रमुख शिष्य थे पंडित सियाजी मिश्र- जिनकी शिष्या थीं- विदुषी सिद्धेश्वरी देवी। सितार उनका प्रमुख विषय था, लेकिन वे संगीत की सभी विधाओं के ज्ञाता थे।

इसीलिये उन्हें संगीत नायक की उपाधि मिली थी। उत्तर प्रदेश के प्रथम संगीत विद्यालय- काशी संगीत समाज की स्थापना उन्होंने 1906 में वाराणसी में प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चंद और कुछ धनी व्यावसायियों के सहयोग से की थी। इसी विद्यालय में उन्होंने पं. विष्णुदिगम्बर पलुस्कर को सितार पर श्रुतियों का प्रयोग करके दिखाया था। और भातखंडेजी द्वारा आयोजित अधिवेशन में उनकी नीतियों का विरोध करके उन्हें निरुतर कर दिया था। लेकिन, इतिहास उनके विषय में मौन है।

सदारंग-अदारंग ने सैकड़ों खयाल की रचना करके अपने शिष्यों को सिखलाया जरुर किंतु स्वयं उन लोगों ने महफिलों में ध्रुवपद ही गाया। क्योंकि, तब तक खयाल को विकलांग गायकी कहकर उसका मजाक उड़ाया जाता था क्योंकि, उसमें स्थायी और अंतरा दो ही भाग होते थे, जबकि ध्रुवपद में स्थायी, अंतरा, संचारी और आभोग चार भाग होते थे। लेकिन, ध्रुवपद का कोई दिल्ली घराना भी नहीं बना। मैं इस समय हरियाणा से आप लोगों को संबोधित कर रहा हूं हरियाणा में एक स्थान है मेवात- जहां से मेवाती घराना बना और जिसके प्रतिनिधि आचार्य आज प. जसराजजी हैं किंतु, अगर आज कोई मुझसे पूछे कि हरियाणा के किसी घराने के विषय में बताइये तो मैं स्पष्ट कहूंगा कि हरियाणा का मेवाती घराना हरियाणा में तो कहीं नहीं हैं। मेवाती घराना के संस्थापक के परिवार से कोई ऐसा व्यक्ति नहीं निकला जो इसके ध्वज को संभाल सके।

पं. दरगाही मिश्र महान सितार वादक थे। लेकिन, उनके तीन पुत्रों में

से किसी ने भी सितार नहीं बजाया। पं. विक्रमादित्य मिश्र उर्फ पं. बिक्कू महाराज ने तबला बजाया, दूसरे पुत्र पं. सरयू प्रसाद मिश्र ने गाना गाया और पं. गोवर्धन मिश्र ने सारंगी बजाई। लेकिन पं. दरगाही मिश्र के प्रपौत्र पं. सुरेंद्र मोहन मिश्र ने बहुत अच्छा सितार बजाया। बाद में उनके पुत्र ने भी सितार बजाया। बावजूद इसके, तकनीकी कारणों से इसे घराना नहीं कहा जा सकता है बनारस में कई और भी अच्छे सितार वादक हैं। लेकिन, बनारस में सितार का घराना नहीं स्थापित हो पाया और अगर सिर्फ सितार के संदर्भ में कहना हो तो कहना चाहूंगा कि अब शायद किसी के लिये भी यह संभव नहीं है कि वह सितार का नया घराना स्थापित कर सके क्योंकि पं. रविशंकर, उ. विलायत खां, पं. निखिल बैनर्जी, उ. रईस खां, पं. बलराम पाठक और उ. अब्दुल हलीम जाफर से लेकर आधुनिक युग के सितार के दो महत्वपूर्ण स्तम्भ पं. बुधादित्य मुखर्जी और उ. शाहिद परवेज आदि ने सितार के क्षेत्र में जितना कुछ कर दिखाया है, उससे अलग हटाकर एकदम से कुछ अनूठा सोच पाना और कर पाना मुझे तो असंभव सा लग रहा है। यही बात अन्य विषयों के लिये भी कहा जा सकता हैअब किसी नये घराने की स्थापना के लिये सोचना ही कठिन है। मैं फिर कह रहा हूं कि सिर्फ अच्छा गा--बजा या नाच लेने से ही घराने नहीं स्थापित हो जाते हैं। उसके लिये कई और चीजों की भी जरुरत पड़ती है।

एक उदाहरण और पेश करता हूं और, वह भी बनारस से ही... पं. राम सहायजी के पिता पं. प्रभाष महाराज कथक नर्त्तक थे और चाचा पं. प्रकाश महाराज तबला वादक। बचपन में राम सहायजी का तबला वादन सुनकर ही उस्ताद मोदू खां ने उनके पिता से कहा था कि- 'पंडित- यह बालक मुझे दे दो। इसे मैं तबला सिखाऊंगा। उसके बाद क्या हुआ - इससे संगीत जगत भलीभांति परिचित है मैं तो बस इतना बताना चाहता हूं कि पं. राम सहायजी के पूर्व भी बनारस में तबला बजता था, किंतु उसे घरानें के रुप में मान्यता नहीं प्राप्त थी। क्योंकि घरानों की कुछ अपनी शर्ते होती हैं। और, यह तबला सिर्फ बनारस में ही नहीं, लगभग पूरे देश में बज रहा था। अजराड़ा में भी उस्ताद कल्लू खां और उ. मीरु खां के पहले कन्हाई और बसंत नामक दो कलाकार थे जो बहुत अच्छा तबला बजाते थे। लखनऊ में हाजी विलायत अली थे। बनारस में पं. प्रकाश महाराज थे, और पंजाब में भी कुछ तबला वादक थे। लखनऊ घराने के खलीफा उ. मोदू खां की शादी जब पंजाब के तबला वादकों के परिवार में हुई थी तो दहेज में उन्हें कई पंजाबी गते और कायदे मिले थे ऐसा उल्लेख मिलता है। उ. मोदू खां की पत्नी ने पं. रामसहायजी को 500 पंजाबी गतें सिखाई थी। ऐसा भी कई किताबों में लिखा गया है। बावजूद इन सबके- ये परंपरायें घरानें के रुप में मान्य नहीं थीं।

देश की आजादी के पहले छोटी-छोटी रियासतों में भी कई धुरंधर संगीतकार थे और वे अपने क्षेत्र में काफी अच्छा काम भी कर रहे थे। इससे मुझे बिल्कुल भी इन्कार नहीं है। देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद वे रियासतें भी खत्म हो गईं और वे संगीतकार भी देश के अलग-अलग भागों में फैल गये। अब उनके नाती-पोते बड़े हो गये हैं। पिछले तीन-चार महीनों अर्थात् मार्च 2020 से देश में तालाबंदी की जो स्थिति पैदा हुई है, उसने संगीतकारों को एकदम से मुखर कर दिया है। फेसबुक पर दिनभर में सैकड़ों लाइव जीवंत कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं। दर्जनों अच्छे संगीतकारों से भी परिचय हुआ, और पचासों ऐसे संगीतकारों से भी- जिन्हें सिर्फ अपने बाथरुम में ही गाने की आज्ञा मिलनी चाहिये- लेकिन, वे हर दूसरे तीसरे दिन कहीं-न-कहीं गाते-बजाते दिख जाते हैं। और, कहीं नहीं अवसर मिला तो अपने ही फेसबुक पेज पर। यह एक तरह से अच्छा ही है- कि हर इंसान को अपने आपको अभिव्यक्त करने का अवसर मिल रहा है। लेकिन इन दिनों फेसबुक पर उसी तरह कई नये घरानों का अस्तित्व दिखने लगा है जिस तरह से बरसात के दिनों में मेढ़कों का अस्तित्व दिखने लगता है। 21वीं शताब्दी के इस दौर में जब घरानों के बीच की दूरियां मिट रही हैं, और हर संगीतकार अपने संगीत को अधिकाधिक समृद्ध बनाने में जुटा है, तब औसत दर्जे के कुछ संगीतकारों द्वारा फेसबुक पर अलग-अलग घरानों के नाम पर अपनी-अपनी दुकानें खोल लेने का प्रयास मुझे तो ओछी अवसरवादिता ही लग रही है।

सेमिनार की जगह वेबीनार जैसा शब्द भी आविष्कृत हो गया, और इन चार महीनों में मैंने इतने सारे वेबीनार देख लिये जितना शायद पिछले दस वर्षों में नहीं देखे। आयोजक भी खुश हैं। क्योंकि केवल तन और मन से काम हो जा रहा है, और धन पूरी तरह से सुरक्षित है।

इस संबंध में मैं कलापिनी कोमकली का नाम जरुर लेना चाहूंगा। कलापिनीजी क्रांतिकारी गायक पं. कुमार गंधर्व की सुपुत्री और सुशिष्या हैं। आज से 50-60 साल पहले मैं घरानों की कुलीगिरी नहीं करता। कहकर कुमारजी ने जैसे घरानों की जमीन ही खिसका दी थी कुमारजी ने संगीत की शिक्षा भेंडी बजार घराने की वरिष्ठ गायिका विदुषी अंजनीबाई मालपेकर और ग्वालियर घराने के वरिष्ठ गायक प्रो. बी. आर. देवधर से प्राप्त की थी।

कुमारजी के एक कार्यक्रम का भी उल्लेख मैं करना चाहता हूं। उनके उस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में प्रो. बी. आर. देवधर भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के बाद अपने संबोधन में देवधर साहब बोले थे। यह कुमार की अपनी गायकी है। कुमारजी के निधन के बाद उनके शिष्यों ने तो नहीं, किंतु उनके शिष्यों के शिष्यों ने कभी-कभी यहां-वहां अपने नाम के साथ देवास घराना जोड़ना शुरु किया था लेकिन, मेरे सामने जब भी ऐसा हुआ, मैं दबी जुबान से उन्हें टोक देता था। लेकिन, पिछले दिनों विदुषी कलापनी कोमकली फेसबुक के एक जीवंत- लाइव कार्यक्रम में साक्षत्कार के लिये आईं तो उनके प्रचार सामग्री में उनके नाम के साथ ग्वालियर घराना देखकर मुझे अच्छा लगा।

अंत में मैं यह कहना चाहता हूं कि संचार क्रान्ति और संगीत के वैश्वीकरण के इस युग में घराने बहुत पीछे छूट गए हैं, और एक तरह से उनका राष्ट्रीयकरण हो गया है। आज घरानों का नहीं, बल्कि उस अच्छे गायन, वादन और नर्तन का महत्व है जो अधिकाधिक लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर सके और जिसमें आपकी अपनी प्रतिभा भी प्रदर्शित हो सके। तभी आपका संगीत आपके बाद भी आपको जीवित रख पाएगा।

Sangeet Nayak Pt. Dargahi Mishra Sangeet Academy,
K1/234, New Palam Vihar,Phase1, Sector 110,
GURUGRAM,122017 Haryana)
Contact 9810517945 Email - anhad.sam@gmail.com

■

आलेख

# भोपाल क्षेत्र के महत्वपूर्ण शैल चित्रकला केन्द्र

-डॉ. नारायण व्यास

भारत की हृदयस्थली मध्य प्रदेश शैलचित्रों के लिये विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ लगभग 24 जिले में 250 से भी अधिक इन केन्द्रो की खोज एवं अनुसंधान कार्य किये गये हैं। इनमें भानपुरा (मन्दसौर) क्षेत्र, ग्वालियर क्षेत्र, रीवा तथा भोपाल क्षेत्र महत्वपूर्ण है। इन सभी क्षेत्रों मे भोपाल तथा उनके आसपास स्थित जिलों में स्थित शैलचित्रों का क्षेत्र प्रमुख माना गया है। इनमें रायसेन, विदिशा, सीहोर, राजगढ़, होशंगाबाद प्रमुख है। अभी भी कई ऐसे क्षेत्र है जहाँ विस्तृत अध्ययन तथा अनुसंधान की आवश्यकता है ये सभी केन्द्र विन्ध्याचल एवं सतपुड़ा पर्वतमाला एवं नर्मदा तथा बेतवा नदी घाटी में स्थित है। रायसेन जिले मे स्थित भीमबैठका के शैलचित्रों को उनकी महत्ता के कारण यूनेस्को की विश्व धरोहर श्रेणी में 3 जुलाई, 2003 में सम्मिलित किया गया है। साथ ही बुधनी, तालपुरा, पान गुराड़िया, होशंगाबाद, पचमढ़ी, रायसेन, सांची, नागौरी, विदिशा, हाथीटोल, खरवाई, उरदेन, पेनगवाँ, समरधा इत्यादि स्थलों के चित्र उल्लेखनीय है। खोज किये गये शैलचित्रों से तत्कालीन समय के मानव के क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त होती है। मानव की वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन, विभिन्न प्रकार के क्रिया कलाप (आखेट, शिकार, युद्ध), एकल व सामुहिक नृत्य की जानकारी प्राप्त होती है।

**खोज एवं अनुसंधान:**

शैलचित्रों की खोज का अपना एक इतिहास है। भारत के अतिरिक्त अन्य कई देशों में शैलचित्र कला केन्द्र प्रकाश में लाये गये है उनमें स्पेन, फ्राँस, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, सहारा, दक्षिण अफ्रीका इत्यादि है। स्पेन तथा फ्राँस के शैलचित्र विश्व प्रसिद्ध है उत्तरी स्पेन में स्थित अल्तामिरा एवं फ्रांस की लास्को की भूमिगत गुफाओं के चित्र सर्वाधिक प्राचीन है आस्ट्रेलिया के शैलचित्रों की परंपरा प्राचीन समय से वर्तमान तक चली आ रही है। कई देशों में कोयले से बनाये गये चित्रों का भी समय निर्धारित किया गया है। भारत में शैलचित्रों की खोज मेजर जनरल कनिंघम के मार्गदर्शन में कार्य करने वाले कार्लाईल व काकबर्न द्वारा वर्ष 1880 में मिर्जापुर के निकट की गई थी उनके द्वारा खोजे गये चित्र में गेंडे का शिकार करते हुए शिकारी है, जिन्होंने उसे चारों तरफ से घेर रखा है, हाथों में आयुध व हारपून नामक शस्त्र है। तत्पश्चात समय-समय पर अनुसंधान तथा खोज कार्य चलते रहे जो वर्तमान में भी चल रहे है।

**प्रमुख खोजकर्ता:**

भारत व मध्य प्रदेश के कई खोजकर्ता है जो देश की आजादी से पहले से ही खोज कार्य में थे। इनमें प्रमुख कार्लाइल, काकबर्न, कनिंघम, डी.एच.गार्डन, एण्डरसन, मनोरंजन घोष, के.डी.बाजपेयी, वाकणकर, एस.के.पाण्डे, एस.बी.ओता, एस.एस.गुप्ता, शंकर तिवारी, मिनाक्षी पाठक, गिरिराज कुमार, मेनुअल जोसेफ, मठपाल, राधाकान्त वर्मा, महेश श्रीवास्तव, ए.के.पंचोली, प्रद्युम्न भट्ट, सी.बी.त्रिवेदी, बी.एल. मल्ला, लटोरी लाल, राजीवन चौबे, इरविन न्यूमियार, नारायण व्यास इत्यादि है।

**शैलचित्रों के विषय में स्थानीय धारणाएं:**

शैलचित्रों की पहाड़ियों के आसपास स्थित ग्रामवासी शैलाश्रेयों को चुडैलन की दांत, कराड़, टोल, इत्यादि नामों से संबोधित करते है। कई शैलाश्रय नामों से भी पुकारे जाते हैं जैसे शहदकराड़, पुतली कराड़, इत्यादि। ग्रामवासियों का ऐसा मानना है कि चित्रों के बनाने वाली चुडैल होती है (Female ghost) इसलिये शैलाश्रयों को चुडैल के दांत भी कहते है। वैसे भी देखा जावे तो ग्रामों में महिलाएं ही मकानों में चित्र बनाती है तथा घरों को चित्रों से सजाती है। कई निवासी शैलाश्रयीन क्षेत्र को रामायण तथा महाभारत से जोड़ते है तथा मानते है कि वनावास के समय राम तथा पाण्डव यहाँ रहा करते थे। रायसेन के निकट राम छन्जा शैलचित्र समूह है, उसमें एक चित्रित शैलाश्रय में पैर उत्कीर्ण है जिसकी तुलना राम से करते है। ऐसा कहते है राम वनगमन के समय राम छन्जा में रहे थे तथा यहाँ से ही विदिशा में चरणतीर्थ गये थे। ऐसा कहा जाता है कि पाण्डव वनवास के समय भीम बैठका में रहे थे एवं निवास किया था। भीम बैठका के क्षेत्र में स्थलों के नाम भीयाँपुरा (भीमपुर), पाण्डापुर, भीमबैठका, लाखाजुहार, जहां लाख का महल जलाया गया था, बाण गंगा, गुप्त गंगा, इत्यादि

है यहाँ स्थानीय बाबा कहते है कि उनके द्वारा कई बार अश्वस्थामा (द्रोणाचार्य का पुत्र) को देखा है। भीम बैठका की एक गुफा को पिशाच गुफा कहते है, जिसके बाहरी भाग में चित्रित गुप्तकालीन ब्राह्मी लिपि में विशाच लिखा हुआ है। भानपुरा के निकट चिब्बड़ नाला नामक शैलाश्रय समूह में एक विशाल शैलश्रय चोरोंवाली देवी का माना है, जिसमें चोर लोग चोरी करने के पहले व पश्चात् यहाँ पूजा करने आते है। इस प्रकार अलग अलग स्थानों पर शैलश्रयों के विषय में विभिन्न प्रकार की धारणाएं प्रचलन में है

**काल निर्धारण :**

पुरातात्विक सर्वेक्षण, अनुसंधान, अद्यारोपण, तुलनात्मक अध्ययन करने से विद्वानों द्वारा अनुमान लगाया गया है कि इन चित्रों का समय उत्तरपुरापाषाण काल, मध्याश्मकाल, ताम्राश्मकाल, इतिहासकाल, व मध्यकाल माना गया है। फिर भी इनका निश्चित कार्यकाल निर्धारित किये जाने के प्रयास किये जा रहे है। भोपाल के आसपास विशेष रूप से कठोतिया के

चित्रों को आधार मान कर समय निर्धारण करने का कार्य स्पेन के कन्सटाईना शहर में स्थित सीईसी म्यूजियम के विद्वानों द्वारा किया जा रहा है। उनका यह कार्य प्रगति पर चल रहा है। आस्ट्रेलिया एवं कुछ अन्य देशों में कोयले से बने चित्रों की कारबन डेटिंग करके समय निर्धारित किया गया है जो कि लगभग 25 से 40 हजार वर्षों के मध्य है।

**शैलचित्रों का वर्गीकरण:**

पुरातात्विक सर्वेक्षण एवं शोध के अन्तर्गत यह पाया गया है कि यहाँ पर आखेट् दृश्य, युद्ध दृश्य, पशु-पक्षी तथा जलचर, व्यक्ति चित्र, नृत्य (एकल व सामुहिक), आलेखन, धार्मिक चित्रण, अभिलेख (उत्कीर्ण एवं चित्रित) इत्यादि प्रकार के है।

**रंगो का प्रयोग:**

शैलश्रयों में गहरे तथा हल्के लाल रंग, सफेद खड़िया, पीला रंग, हरे रंगो का प्रयोग किया गया है जिनके लिये हरे खनिज, मुरम हिमेटाईट) के कंकड़, गेरू, खड़िया, रामरज (पीला) का प्रयोग किया गया है। प्रारंभिक चित्रो में हरे खनिज तथा हेमेटाईट कंकड़ का प्रयोग पाया गया है।

**प्रमुख शैलचित्र कला केन्द्र:**

भोपाल एवं आसपास के क्षेत्रों में सैकड़ों चित्रित शैलाश्रय है, उनमे प्रमुख रूप से निम्न जिलों में स्थित है।

**1. दौलतपुर ( भोपाल )**

| क्रमांक | जिला | स्थल का नाम |
|---|---|---|
| 1. | भोपाल | दौलतपुर, मनवाभान की टेकरी, भदभदा, श्यामला हिल्स, धरमपुरी, शहदकराड़, समरधा |
| 2. | रायसेन | भीमबैठका, सतकुंडा, खरवाई, उरदेन, रामछज्जा (रायसेन), पेनगवाँ, सांची, नार्गोरी, सतधारा, झीरी, जावरा |
| 3. | सीहोर | कठोतिया, पानगुराड़िया, तालपुरा |
| 4. | विदिशा | गुफा मासेर, नीमखेरिया |
| 5. | होशंगाबाद | आदमगढ़, पचमढ़ी |
| 6. | राजगढ़ | नरसिंहगढ़, कोटरा विहार |

यह स्थल भोपाल कोलार मार्ग पर बैरागढ़ चिचली के निकट दौलतपुर ग्राम के पीछे वाली पहाड़ी पर स्थित है यहाँ का विशाल शैलाश्रय रिछन खो के नाम से जाना जाता है। यहाँ दो शैलाश्रय है प्रथम शैलाश्रय छोटा है जिसमें कुछ ही चित्र है, जबकि द्वितीय विशाल शैलाश्रय में सैकड़ों चित्र है यह शैलाश्रय लगभग 60 फीट लम्बा, 15 से 20 फीट चौड़ा तथा 15 फीट ऊंचा है। इसमें इतिहास एवं मध्यकालीन कई चित्र है। जिनमें पशुचित्रण, योद्धागण, तथा युद्ध दृश्य प्रमुख है। कुबड़वाले बैल तथा धर्नुधारी के सुन्दर चित्र है। यहाँ लाल एवं सफेद रंग के चित्रों की प्रधानता है शैलाश्रयों के आसपास पूर्व पाषाणकालीन उपकरण बहुतायत से प्राप्त होते है।

**2.मनवाभान की टेकरी ( भोपाल )**

यह शैलाश्रय समूह भोपाल विमान पतनम मार्ग पर एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। शैलाश्रयों में कुछ मध्याश्म कालीन चित्र है, तथा कई शंख लिपि के चित्रित लेख है, जो अधिकतर नष्ट हो चुके है। इस पहाड़ी के आसपास गुफा मन्दिर समूह तथा टी.बी. हास्पिटल के आसपास कई शैलाश्रय है जिनके चित्र लगभग नष्ट प्राय हो रहे है।

**3,शहरकराड़ ( भोपाल )**

यह समूह भोपाल भदभदा मार्ग पर स्थित है। यहाँ लगभग आठ चित्रित शैलाश्रय है जिनमें लाल रंग के पशु चित्रण के समूह है।

**4.भदभदा ( भदभदा )**

यहाँ पर इण्डियन ईस्टीट्यूट ऑफ फारेस्ट मेनेजमेंट की पहाड़ी के पिछले भाग में चित्रित शैलाश्रय समूह है जिनमें लाल रंग से चित्रित मध्याश्म युगीन शैलचित्र है जिनमें मानवाकृतियाँ अधिक है। एक शैलाश्रय में सफेद पशुचित्रण है जो धुंए के कारण नष्ट प्राय है।

**5.धरमपुरी एवं श्यामला हिल्स ( भोपाल )**

ये दोनों स्थल एक लम्बी पहाड़ी की पहचान है। श्यामला हिल्स एवं मानव संग्रहालय के पृष्ठ भाग में जो धरमपुरी तक है, में कई चित्र शैलाश्रय है जिनमें मध्याश्म तथा ताम्राश्म युगीन चित्रों की प्रधानता है, जो हल्के लाल व गहरे लाल रंगो में है। यहाँ किये गये पुरातात्विक उत्खनन में उत्तरपुरापाषाण काल एवं मध्याश्म युग के लघु अश्मोपकरण प्राप्त हुए है। यहाँ शैलाश्रयों की छत पर पशु चित्रण उल्लेखनीय है। धरमपुरी के शैलाश्रयों में चित्रों के अतिरिक्त प्रतिहार कालीन मंदिर के अवशेष है।

**6.समरधा एवं सतकुण्डा ( भोपाल व रायसेन )**

ये शैलाश्रय एक पहाड़ी पर ही है जिसमें समरधा का क्षेत्र भोपाल तथा सतकुण्डा का क्षेत्र जिला रायसेन के अंतर्गत आता है। यह रायसेन जिला का महत्वपूर्ण शैलचित्र समूह है जो भोपाल रायसेन मार्ग पर स्थित है। यहाँ कई विशाल शैलाश्रय है जो दो मंजिलों वाले भी है यहाँ लाल एवं सफेद रंगों का प्रयोग किया गया है। यहाँ असंख्य चित्र है जिनमें ताम्रश्म एवं इतिहास कालीन चित्र सर्वाधिक है। जानवरों का भागता हुआ समूह, विशाल हाथी का चित्र, युद्ध के दृश्य इत्यादि है यहाँ पर युद्ध में घायल व्यक्ति को उठा कर ले जा रहे चार योद्धाओं का चित्र महत्वपूर्ण है।

**7.भीमबैठका ( रायसेन )**

भीमबैठका के शैलचित्रों का समूह भोपाल-होशंगाबाद मार्ग पर ओबेदुल्लागंज के निकट स्थित है। इस स्थल की खोज 1957 में डॉ. वाकणकर ने की थी यहाँ सैकड़ों चित्रित शैलाश्रय है जो लगभग 10 कि.मी. के क्षेत्र में फैले

हुए है (चित्र- 5)। अद्यारोपण के आधार पर यहाँ के चित्र उत्तरपुरापाषाण काल से मध्यकाल तक के माने गये है। यहाँ कई शैलाश्रयों में डॉ. वाकणकर एवं अन्य कई संस्थाओं द्वारा पुरातत्विय उत्खनन एवं सर्वेक्षण किया गया है। भीमबैठका के विषय में अधिकतर जानकारी प्रकाशित हो गयी है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा भीमबैठका के संपूर्ण क्षेत्र जिन्हें पांच समूहों में बांटा गया था, संरक्षित किया गया है।

**8.खरवाई एवं उरदेन ( रायसेन )**

ये दोनो स्थल रायसेन भोपाल मार्ग पर खरवई ग्राम के निकट दो पहाड़ियों पर स्थित है यहाँ 100 से भी अधिक चित्रित शैलाश्रय है। इसके अतिरिक्त खरवई की पहाड़ी पर द्वितीय शताब्दी ई.पू. के बौद्ध स्तूप समूह तथा विहार के अवशेष भी प्रकाश में लाये गये है। डॉ. ए.के. पाण्डे द्वारा पुरातत्विक उत्खनन भी किया गया था। यहाँ पर भी इन दोनों स्थलों पर इतिहास युगीन चित्रों की प्रधानता है। उरदेन के एक शैलाश्रय में मध्याश्म युगीन मानवाकृतियां एवं पशुचित्रण बहुत ही सुन्दर है। खरवई के मध्यकालीन चित्र जिसमें पूजा पाठ के दृश्य है। इस प्रकार के चित्र वर्तमान में भी बनाये जाते है।

**9.रामछज्जा ( रायसेन )**

रामछज्जा शैलचित्र समूह रायसेन जिला मुख्यालय के निकट किले के पास स्थित है। यहां कई चित्रित शैलाश्रय है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यहाँ पर राम वनवास के समय आये एवं ठहरे थे। रामछज्जा शैलाश्रय समूह में हाथी टोल दो मंजिलों वाला शैलाश्रय महत्वपूर्ण है जिसमें प्रमुख रूप से गहरे लाल रंग के चित्र है चित्रों में नृत्यरत मानवाकृतियां, एक दिशा में जाते हुए पशु, दो मुह वाला हिरण, मल्ल युद्ध महत्वपूर्ण है। शैलाश्रय के आसपास उत्तर पुरापाषाणकाल एवं मध्याश्म युगीन लघु अश्मोपकरण बहुतायत से फैले हुए है।

**10.पेनगवाँ ( रायसेन )**

यह शैलचित्र समूह रायसेन चिकलोद मार्ग पर रायसेन जिला मुख्यालय से लगभग 8 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ कई शैलाश्रय है, जो जमीन पर विशाल शैलाश्रय के रूप में देखे जा सकते है। यहाँ लाल तथा सफेद रंगो के चित्र है जिनमें महत्वपूर्ण गिद्ध समूह, पूजा के दृश्य, चक्रव्यूह रथ, युद्ध दृश्य, मध्याश्मयुगीन भैंसा इत्यादि महत्वपूर्ण है। चक्रव्यूह के चित्र देश विदेश में कई स्थानों पर भी देखने को मिलते है।

**11.सांची एवं नागोरी ( रायसेन )**

यह स्थल बौद्ध स्मारकों के लिये प्रसिद्ध है जो भोपाल से लगभग 45 कि. मी. की दूरी पर विदिशा मार्ग पर स्थित है। यहाँ इन दोनों स्थलों की पहाड़ियों के पिछले भाग में कुछ चित्रित शैलाश्रय है, जिने कुछ प्राकृतिक प्रभाव से नष्ट हो रहे है यहाँ पर प्रमुख रूप से मध्याश्म तथा ताम्रकालीन पशुचित्रण एवं मानवाकृतियां है तथा मध्यकालीन पूजापाठ के दृश्य है नागोरी के प्रमुख शैलाश्रय में बैठे हुए राजा तथा सामने कुछ व्यक्ति खड़े हैं । तथा पीछे छत्र लिये व्यक्ति का चित्र है जो संभवत: लाल रंग का स्प्रे करके बनाया हुआ है। एक दिशा में जाते हुए जानवर भैसा, बाघ देखे जा सकते है। मध्याश्मयुगीन नग्न मानव का यहाँ अद्भुत चित्र है

**12.सतधारा ( रायसेन )**

यह स्थल बौद्ध स्मारकों के लिये प्रसिद्ध है, जो भोपाल विदिशा मार्ग पर सलामतपुर के पास हलाली नदी के तट पर स्थित है। यहाँ पाँच चित्रित शैलाश्रय है जिसमें ताम्राश्मयुगीन तथा इतिहासयुगीन चित्र है। इसमें प्रमुख शैलाश्रय में बुद्ध का व्यक्ति चित्र, स्तूप तथा गुप्तकालीन ब्राह्मी लिपि में बौद्ध धर्म का मूल बीज मंत्र चित्रित है। प्रथम शैलाश्रय में ताम्राश्मयुगीन चित्र उल्लेखनीय है

**13.झीरी ( रायसेन )**

यह स्थल रातापानी अभयारण्य में भोपाल कोलार मार्ग पर बेतवा नदी के उद्गम स्थल के निकट स्थित है। यहाँ कई छोटे तथा विशाल चित्रित शैलाश्रय है। जिनमें चित्रो का पूर्ण रूप से अद्यारोपण देखा जा सकता है। यहाँ पर इतिहास युगीन चित्रो के बड़े बड़े पेनल है जिसमें दो सेनाओं के युद्ध के दृश्य तथा पशुचित्र है जो संभवत: पंचतंत्र की सिंह तथा वृषभ की कहानी दर्शाता है। यहाँ पर आदमकद योद्धा मल्लयुद्ध करते हुए दो व्यक्तियों को एक व्यक्ति द्वारा उल्टा लटकाते तथा विशाल हाथी का चित्र महत्त्वपूर्ण है। वर्षो पूर्व यहाँ पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र दिल्ली तथा मानव संग्रहालय भोपाल द्वारा उत्खनन भी किया गया था। यहां के कुछ योद्धाओं के चित्र देखने से ऐसा ज्ञात होता है कि उन पर ग्रीक वेशभूषा का प्रभाव है। यहाँ कुछ हरे रंग के भी चित्र है

**14.जावरा ( रायसेन )**

यह स्थल भोपाल-होशंगाबाद मार्ग पर मंडीदीप के निकट रातापानी अभपारण्य में स्थित है यहाँ कई विशाल तथा छोटे बड़े शैलाश्रय है, जिनमें युगयुगीन चित्र है। एक शैलाश्रय में रथ का चित्र है, तथा इसके निकट विशाल शैलाश्रय में बहुत ही बड़े चित्र बने है जिनमें लगभग 14 फिट लंबा आक्रमक भैंसा महत्वपूर्ण है। ताम्रश्मकाल में इसे सफेद रंग का बनाया था परन्तु कालान्तर में लालरंग में इस पर अलंकरण किया गया है। यह भारत का सबसे बड़ा शैलचित्र माना जाता है।

**15.कठोतिया ( सीहोर )**

यह स्थल भोपाल- कोलार मार्ग पर स्थित है। यहाँ 60 से भी अधिक छोटे-बड़े चित्रित शैलाश्रय है वैसे देखा जाये तो यहाँ इस क्षेत्र के सबसे सुन्दर चित्र है जो प्रमुखत: गहरे लालरंग के है। यहाँ पर अधिकतर मध्याश्म एवं ताम्रश्म कालीन चित्र है बाद के चित्रों की संख्या न्युन है। यहाँ सर्वाधिक चित्र इमली वाले शैलाश्रय में है यहाँ कुछ हरे रंग के भी चित्र है, संभवत: माध्याश्म युग के पहले के होना चाहिये मध्याश्म युगीन सारस एवं उसके बच्चों का सबसे सुन्दर यहाँ चित्र है एक शैलाश्रय में मध्याश्मयुग के प्रारंभिक समय के चित्र है जिसमें मानवकृतियां लेंप शेड जैसी दिखाई देती है। मध्यकालीन चित्रों में युद्ध दृश्य सबसे सुन्दर है।

**16.पान गुराड़िया एवं तालपुरा ( सीहोर )**

ये दोनों बौद्ध स्मारक समूह है, जो शैलाश्रयीन क्षेत्र में निर्मित हुए थे। यह स्थल भोपाल बुधनी मार्ग पर (सलकनपुर होकर) स्थित है। यहाँ कई चित्रित शैलाश्रय है। कई शैलाश्रयो में द्वितीय शताब्दी ई.पू. के बौद्ध स्मारक है। यहाँ पर कूदते हुए वानर, युद्ध दृश्य, घुडसवार इत्यादि है। कुछ चित्र पीले रंग के भी है, जो कम मात्रा में पाये जाते है। पानगुराड़िया का एक शैलाश्रय सारू-मारू के नाम से भी विख्यात है जिसमें सम्राट अशोक का लेख उत्कीर्ण है। समय एवं प्राकृतिक कारणों से चित्र समाप्त हो गये है।

**17.नीमखेरिया ( विदिशा )**

नीमखेरिया के शैलचित्रों का समूह उदयगिरि गुफाओं के पीछे बेस

नदी पार करके जाना पड़ता है यहाँ प्रमुख रूप से दो समूह है जिसमें पशुओं का विशेष रूप से वृषभ समूह का सुन्दर चित्रण किया गया है

**18.गुफामासेर ( विदिशा )**

गुफा मासेर शैलचित्रों का समूह विदिशा होकर जाना पड़ता है यहाँ के चित्र अन्य जगहों की साम्यता लिये मिलते है इस क्षेत्र में अहमदपुर शैलचित्र समूह है जिसमें चित्रों के अतिरिक्त ब्राह्मी लिपि के चित्रित अभिलेख भी है।

**19.आदमगढ़ ( होशंगाबाद )**

यह शैलचित्र समूह होशंगाबाद जिला मुख्यालय के निकट इटारसी मार्ग पर स्थित है। यहाँ कई छोटे बड़े शैलाश्रय है भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा यहाँ पुरातत्वविय उत्खनन भी 1960 में किया गया था। जहाँ पूर्व पाषाण कालीन संस्कृति से बाद तक के अवशेष प्राप्त हुए है यहाँ एक विशाल शैलाश्रय में विशालकाय भैसा, वृषभ के प्राचीनतम चित्र है इसके साथ ही धनुर्धारी समूह है जिसमें वे नृत्य करते समान लग रहा है। खुले में होने के कारण कई चित्र धुंधले हो गये है। इस शैलाश्रय में तथा अन्य जगह पर अद्यारोपण देखा जा सकता है। यह स्थल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित किया गया है

**20.पचमढ़ी ( होशंगाबाद )**

पंचमढ़ी का संपूर्ण क्षेत्र सतपुड़ा पर्वत माला के अंतर्गत आता है। यहाँ कई शैलाश्रय समूह है जो विभिन्न नामो से जाने जाते है। जैसे बनियाबैरी, डोरोथी दीप, इत्यादि कुछ शैलाश्रय संरक्षित किये गये है। यहाँ सर्वप्रथम डी.एच. गार्डन द्वारा कार्य किया गया था। यहाँ अधिकतर सफेद रंगो के चित्र देखे जा सकते हैजिसमें कई गृहस्थ जीवन के चित्र है। शिकार दृश्य, वाद्य बजाते हुए, घर का दृश्य इत्यादि महत्वपूर्ण है।

**पुण्यतिथि पर विशेष**

# देश भक्ति और धर्मनिरपेक्षता के प्रतीक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ

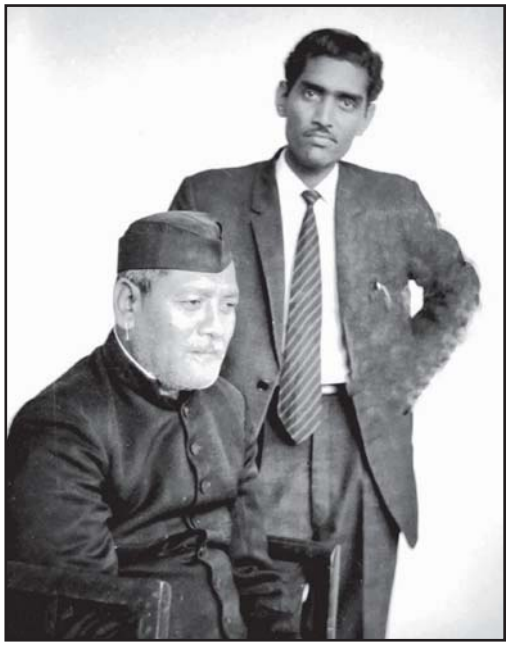

विश्व विख्यात शहनाई के जादूगर उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के निधन पर देश विदेश के मीडिया ने गहन शोक व्यक्त करते उन्हें एक महान संगीतकार के अलावा एक महान देश भक्त और हिन्दू मुस्लिम एकता का सर्वोत्तम प्रतीक करार किया था।

अखबारों ने लिखा था कि वे भारत में ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्ति के बाद लाल किले पर मनाए गए स्वतंत्रता दिवस समारोह के प्रमुख भागीदार बने थे। उन्होंने ही सबसे पहले अपनी शहनाई से मांगलिक ध्वनि बजाकर आज़ादी की सुबह का स्वागत किया था। दि टेलीग्राफ अख़बार ने लिखा था कि शिया मुसलमान होने के बावजूद वे हिन्दुओं की विद्या की देवी सरस्वती के पक्के उपासक थे। उन्होंने संगीत और इस्लाम के बीच कभी भी अन्तर विरोध मेहसूस नहीं किया। गार्जियन अख़बार ने उनके सम्मान में लिखा था कि 70 से अधिक वर्षों तक श्री खान अपनी संगीत की जादूगरी से करोड़ों लोगों को मंत्रमुग्ध करते रहे। उन्हें संगीत की दुनिया की सर्वश्रेष्ठ मेघा में शुमार किया जा सकता है। वे भारतीय संविधान की आत्मा कही जाने वाली धर्म निरपेक्षता के पक्के समर्थक थे।

इंडिपेंडेन्ट अख़बार ने लिखा कि बिस्मिला खान की जिन्दगी ही शहनाई को समर्पित हो गई थी। वे अखण्ड भारत के प्रबल समर्थ थे 8 सितम्बर 2005 को जम्मू के अभिनय थियेटर में शहनाई का जादू बिखेरने के बाद उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ ने स्थानीय पत्रकारों से कहा था 'मेरा तो बस ही नहीं चला अन्यथा मैं तो अपने सुरो से उस ज़मीन को फिर से जोड़ देता जिसके टुकड़े कट्टरपंथी मज़हबियों ने कर दिये और एक टुकड़े पर पाकिस्तान बना दिया। बनारस की गंगा जमुनी संस्कृति का उन पर गहरा प्रभाव था। गंगा से उन्हें बेहद प्यार था वह अक्सर रात में गंगा के किनारे पंचगंगाघाट पर बैठकर घंटों शहनाई का रियाज़ करते थे। दुनिया की बड़ी से बड़ी दौलत उनसे गंगा और बनारस नहीं छुड़वा सकी इस संदर्भ में एक घटना उल्लेखनीय है। विदेश यात्रा के दौरान एक संगीत रसिक ने उन्हें विदेश में बसने का आग्रह किया तो बड़े सहज भाव से उन्होंने कहा कि आप यहां काशी के विश्वनाथ और गंगा जी को लेकर आ जाओ मैं यहाँ बसने को तैयार हूँ। इस तरह का देश प्रेम और सांप्रदायिक सद्भाव कहाँ देखने को मिल सकता है। नियम से पांच वक्त की नमाज पढ़ने वाले निजी जीवन में कट्टर शिया मुसलमान होने के बाद भी वह एक नेक इंसान भी थे उनका कहना था कि कुरान उनकी आस्था और विश्वास है और शहनाई एक कला है उसे वह खुदा की देन और इबादत का एक तरीका मानते हैं धर्म के आधार पर किसी प्रकार के भेदभाव में वह विश्वास नहीं करते थे। वह सच्चे अर्थों में धर्म निरपेक्ष इंसान थे। उनकी मान्यता थी कि अपने धर्म का पालन करो पर साथ ही दूसरे मज़हबों का भी आदर और सम्मान करो। उनकी धर्म निरपेक्षता का उदाहरण जगदीश प्रसाद हैं जिन्हें उस्ताद ने बाकायदा गंडे बंद शार्गिद बनाया। इतना ही नहीं यह हिन्दू शार्गिद मुस्लिम उस्ताद का परिवार भी चलाता था। उस्ताद महीने के खर्च का पैसा जगदीश के हवाले करते थे जगदीश की बेटी बागेश्वरी ने भी उस्ताद के क़दमों में बैठकर शहनाई बजाना सीखा, जो विश्व की एकमात्र महिला शहनाई नवाज़ हैं।

– जगदीश कौशल
वरिष्ठ फोटोग्राफर, भोपाल (म.प्र.)

# सीरियाई कवि, राजनयिक निज़ार कब्बानी की कविताएँ

सीरियाई कवि, राजनयिक निज़ार कब्बानी (1923- 1998) न सिर्फ सीरिया बल्कि समूची अरब दुनिया के महत्वपूर्ण कवियों में गिने जाने वाले रचनाकार हैं। उनकी कविताओं में प्रेम की अभिव्यक्ति के साथ ही स्त्री की आजादी का एक मधुर स्वर है लोग जिसके दीवाने हैं उनकी कविता में प्रेम है , ऐन्द्रिकता है, अपने मुल्क के प्रति दीवानगी की हद तक प्रेम है तथा अपने समय और समाज की त्रासदी का विवरण भी है।

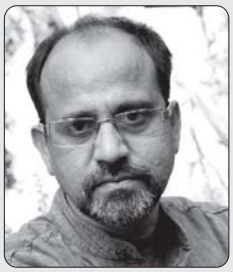

अनुवाद : मणि मोहन

**प्रो. मणि मोहन अनुवाद के क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय हैं। अनुवाद के अलावा वे समकालीन हिंदी कविता के समर्थ कवि भी है। अनुवाद के माध्यम से वे हमें विश्व साहित्य की विरासत और हलचल से अवगत कराते रहते हैं।**
**सम्प्रति: शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय गंज बासौदा में अंग्रेजी के प्राध्यापक। मो.- 09425150346**

## मैं उदासी की रेल हूँ

मैं हजारों रेलों में सफ़र करता हूँ
मैं अपनी निराशा की ज़ीन कसता हूँ
मैं अपनी सिगरेट के बादलों पर सवार होता हूँ
अपने सूटकेस में
मैं अपने प्रेमियों के पते रखता हूँ
कल कौन थे मेरे प्रेमी ?

यह रेल दौड़ रही है
तेज... और तेज
अपने रास्ते की दूरियों के मांस को चबाते हुए
रास्ते के खेतों को रौंदते हुए
रास्ते के दरख़्तों को निगलते हुए
झीलों के पैरों को चाटते हुए

टिकिट चेकर मुझसे टिकिट मांगता है
और मेरी मंज़िल के बारे में पूछता है
क्या कहीं कोई मंजिल है ?

रेखांकन : चेतन औदिच्य

इस धरती पर कोई होटल
न तो मुझे जानती है
और न मेरे प्रेमियों के ठिकानों को
मैं उदासी की रेल हूँ
कहीं कोई प्लेटफार्म नहीं
जहां मैं रुक सकूँ
अपनी तमाम यात्राओं में
मेरे प्लेटफार्म छूटते रहे
मेरे गन्तव्य
मुझसे दूर फिसलते रहे।

## प्रेम कविताएं

**( एक )**

जब भी चूमता हूँ तुम्हें
एक लम्बी जुदाई के बाद
तो महसूस होता है
जैसे हड़बड़ी में लिखा कोई प्रेमपत्र
पोस्ट कर रहा हूँ
डाक के लाल डिब्बे में।

**( दो )**

मेरी प्रेयसी मुझसे पूछती है :
'मुझमें और इस आसमान में क्या फ़र्क है ?'
फ़र्क यह है मेरी जान,
कि जब तुम हँसती हो
मैं आसमान भूल जाता हूँ।

**( तीन )**

ओह , मेरी जान
यदि तुम मेरी जितनी पागल होती,
तो दूर फेंक देती अपने गहने
बेंच देतीं अपने सारे कंगन
और आकर मेरी आँखों मे सो जाती !!

**( चार )**

लालटेन से ज्यादा महत्वपूर्ण है रोशनी
नोटबुक से ज्यादा महत्वपूर्ण है कविता
और चुम्बन
होंठों से ज्यादा कीमती हैं ...
तुम्हारे नाम लिखे मेरे ख़त
हम दोनों से ज़्यादा जरूरी और कीमती हैं ...
वे एकमात्र दस्तावेज हैं
जहां लोग खोजेंगे
तुम्हारी खूबसूरती
और मेरी दीवानगी।

■

गीत

# दिनेश प्रभात के गीत

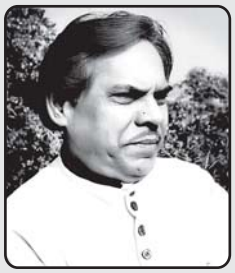

**दिनेश प्रभात**

जन्म : 6 फरवरी 1955
प्रकाशन : लहर ढूँढता हूँ, बिजलियाँ पाँव में, आँखें नैनीताल हुई, झमाझम बारिश में, यादों में हरसूद, ये हवा से बोल देना और चँदा! तेरे गाँव। लगभग 150 साहित्यिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।
पता: 'काव्यधारा', 56, सम्राट नगर, अशोका गार्डन, भोपाल-462023 ( म.प्र. )
संपर्क : 09926340108

रेखांकन : चेतन औदिच्य

## ये हवा से बोल देना

भागता हूँ तेज़ मैं भी
ये हवा से बोल देना
एक कड़वा सत्य उसके
शीश पर तुम ढोल देना
एक सागर से अधिक
तूफान मैं दिल में लिये हूँ
दर्द का सैलाब, साँसें
रोक कर मैं भी पिये हूँ
आज मेरी खूबियों के
राज़ सारे खोल देना
बादलों से खूब ज़्यादा
नीर मेरी आँख में है
बाज़ से ऊँची उड़ानें
कल्पना की पाँख में है
प्रश्न यदि कोई करे तो
बाट लेकर तोल देना
आसमां बौना बहुत है
आज मेरे हौसलों से
बिजलियाँ भी काँपती हैं
स्वप्न के इन घोंसलों से
आँधियाँ तक चाहती हैं
इस 'दिये' का मोल देना
जानता हूँ स्वप्न को मैं
चाँद-तारों से सजाना
एक राधा के लिये, हर
रोज़ मीठी धुन बजाना
आज तक सीखा नहीं हूँ
मैं स्वरों में झोल देना

## वह सम्मान कहाँ ढूँढ़ेगा

मुझे उदासी देने वाले
तू मुस्कान कहाँ ढूँढ़ेगा
दु:ख के बादल जब छाते हैं
मैं मयूर-सा खुश होता हूँ
गालों पर लुढ़के आँसू को
गीतों के जल से धोता हूँ
तू अपना ग़म दफ़नाने को
कब्रिस्तान कहाँ ढूँढ़ेगा
जितने देखे, उनमें कितने
सपने सगे हुए हैं तेरे
भीतर का सच बता रहे हैं
ये आँखों के काले घेरे
हार गया जो आज जुए में
वह सम्मान कहाँ ढूँढ़ेगा
जब भी मैं होता था रोशन
तू भी चमक-दमक उठता था
जब मैं खिलता था गुलाब-सा
तू भी गमक-गमक उठता था
घर सूना कर जाने वाला
अब मेहमान कहाँ ढूँढ़ेगा
सुख की नींदें तुझे सौंप दीं
भेंट कर दिये मीठे सपने
तुझे बचाने की कोशिश में
कहीं खो गये मेरे अपने
मुझ जैसी रखवाली वाला
अब दरबान कहाँ ढूँढ़ेगा
केवल काम नहीं चलता है
धरती पर दाने बोने से
पूरी प्यास नहीं बुझती है
थोड़ी-सी बारिश होने से
फसल जहाँ सोना बनती है
वो खलिहान कहाँ ढूँढ़ेगा

## दर्द नहीं चुप रहने वाला

गीतकार का स्वर है मेरा
क़ैद नहीं होगा तालों में
तुमने कैसे नाम लिख लिया
मेरा चुप रहने वालों में
एक हिमालय हूँ तब ही तो
धीरे-धीरे पिघल रहा हूँ
जितना माँज रही है पीड़ा
उतना उजला निकल रहा हूँ
जितना अनुभव मिला उम्र से
उतनी चाँदी है बालों में
लाख करो तुम टोका-टाकी
दर्द नहीं चुप रहने वाला
भरे जेठ में तुमने ही तो
आँखों को सावन दे डाला
बिना वजह ही नहीं सुर्खियाँ
मेरे गीतों के गालों में
देख न पाती जिसको दुनिया
वो गूलर का फूल नहीं मैं
लहरें बस छू-छू कर चल दें
वो नदिया का कूल नहीं मैं
स्वाभिमान की इस कलगी को
पाया है मैंने सालों में
मुझे पता है धोखा देंगी
श्याम घटाएँ, इसीलिए तो
मेघ उड़ाकर ले जाएँगी
तेज़ हवाएँ, इसीलिए तो
संचय करके जल रखता हूँ
अपने पाँवों के छालों में
झील नहीं हूँ, इक दरिया हूँ
ठहरा कब हूँ, सिर्फ़ चला हूँ
राहगीर हूँ, कड़ी धूप में
खूब तपा हूँ, खूब जला हूँ
वक्त नहीं शामिल कर पाया
कभी मुझे बैठे-ठालों में

■

कविता

# संदीप राशिनकर की कविताएँ

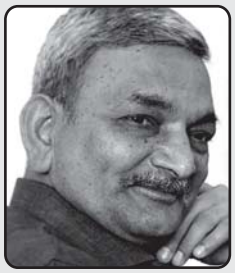

**संदीप राशिनकर**

जन्म : 7 मई 1958, इंदौर
प्रकाशन : 'केनवास पर शब्द' और जीवन संगिनी श्रीति के साथ संयुक्त काव्य कृति 'कुछ मेरी कुछ तुम्हारी' प्रकाशित होकर देश भर में चर्चित व पुरस्कृत। कविताओं के अलावा निरंतर कला -संस्कृति विषयों और समीक्षाओं का लेखन / प्रकाशन।
पता: 11-बी, मेन रोड़, राजेंद्र नगर, इंदौर-452012 ( म.प्र. )
संपर्क : 09425314422

## आकर्षण में

महत्वाकांक्षाओं
पद / प्रतिष्ठाओं
के आकर्षण में
हम,
देख नहीं पाए
कि घर में
घुटने घुटने चलता बचपन
तक रहा हमें
और कर रहा
तरह तरह के जतन,
मासूम इशारे
हमें बुलाने को !
वो चाहता है
भूला के दुनियावी प्रलोभन
हम देखें, निहारे
तुतलाए, बतियाये उससे
और जताए उसे

रेखांकन : चेतन औदिच्य

कि कितना अहम् है
हमारे लिए
उसका होना.,
उसकी उपस्थिति !
हम हैं कि
बेखबर
उन बेजुबां याचनाओं से
निकल पड़ते है मृगतृष्णाओं
मरीचिकाओं की
अंतहीन खोज में।
उम्रभर की
निरर्थक खोज के बाद
निवृत्ति के मक़ाम पर
घर में,
हम चाहते हैं कि
बच्चे हमें देखें
हमे समझे
हमसे बतियाये
और अब
बच्चे हैं कि
हमारी आकांक्षाओं से बेखबर
हमें छोड़
निकल पड़ते है
महत्वाकांक्षाओं
पद / प्रतिष्ठाओं के
उस आकर्षण के पीछे
जिसके पीछे
हम छोड़ आये थे
बच्चों को / बच्चों के बचपन को
हमारे जवानी के दौर में !!

## जल्दी नहीं है

जल्दी नहीं है
मुझे
तुमसे कुछ कहने की
हालांकि
जानता हूँ मैं
बहुत जल्दबाज़ी,
हड़बड़ी का
समय है यह !
बहुत जल्दी में
बहुत कुछ
कह दिया जाता है
और
उतनी ही जल्दबाजी में
दिया जाता है भूला भी !
इस जल्दबाजी / हड़बड़ी में
ना जाने कितना कुछ
कह दिया गया है
किन्तु
कुछ भी नहीं बचा है शेष
इस कह दिए गए में।
मुझे
नहीं है जल्दी
मैं करूँगा प्रतीक्षा
रात के पहर में
सूर्य किरणों पर सवार
आती भोर की
दिन दिन बढ़कर
पूरी गोलाई पा चमकते
पूनम के चाँद की
तपती धरती के ग्रीष्म में
करूँगा प्रतीक्षा
सावन के पहले फुहार की
या
पतझड़ में पर्णहीन होती वनराई पर
पल्लवित होती हरे श्रृंगार की !
मुझे कोई गुरेज़
कोई जल्दी
कोई हड़बड़ी नहीं
क्योंकि
मैं जानता हूँ
मैं कह चूका हूँ वह सब तुम्हें
पहले ही
बिना शब्दों के
बिना भाषा के
जो
पहुँचा है तुम तक
अनुभूति की
पूरी तीव्रता
पूरी शुचिता
और
पूरे समर्पण के साथ
न भूला दिए
जाने के लिए !!

■

ग़ज़ल

# रशीद अंजुम की ग़ज़लें

**रशीद अंजुम**

जन्म : 10 फरवरी, 1940
प्रकाशन : भोपाल के वरिष्ठ उर्दू एवं हिन्दी साहित्यकार, 50 पुस्तकें उर्दू व हिन्दी की प्रकाशित। 500 पृष्ठ पर आधारित उर्दू व हिन्दी का पहला तवील नाटक प्रकाशित। पत्रकारिता का भी अनुभव। 1600 पृष्ठ पर जहाने फिल्म के नाम से हिन्दी सिनेमा का 18 वीं शताब्दी से 2015 ई. तक का इतिहास प्रकाशित।
संपर्क : 09301081576

## ( 1 )

यह कैसे ख़्वाव अंधेरा मुझे दिखाने लगा
हर इक चराग़ मिरे घर का झिलमिलाने लगा।
तमाम रात मुझे करवटें बदलना है
फिर आज कोई सरे शाम याद आने लगा।
ज़मी पे कुछ तो उजालों का सिलसिला रखना
वो आफ़ताब[1] सभी से नज़र चुराने लगा।
तुझे ख़बर भी नहीं और आसमाने ख़्याल
तिरी ख़ुशी तेरे ग़म की हंसी उड़ाने लगा।
तेरी नज़र का तक़ाज़ा[2] तेरे लबों का सुकूत[3]
मेरे ग़म की तरफ़ हाथ क्यों बढ़ाने लगा।
किसी से कोई शिकायत नहीं रही अंजुम
ज़माना जब से हमारी समझ में आने लगा।

1. सूर्य 2. अनुमोदन 3. आराम

रेखांकन : चेतन औदिच्य

## ( 2 )

खाक पर है और जेरे आसमां[1] रहते नहीं
यह गली अपनी है लेकिन हम यहां रहते नहीं।
जलते सेहरा[2] में भटक जाती है बदलियां
धूप के हाथों पे सब दरिया रवां[3] रहते नहीं।
बारिशे भी नाम लिखती हैं दर-ओ-दीवार पर
अक्स[4] मौसम के तर-ओ-ताज़ा रहते नहीं।
ताज़गी भी अपने दस्ते आरजू[5] का अक्स है
खाक उड़ती है जहां पर हम वहां रहते नहीं।
दर्द सा लेकिन उठा करता है दिल में हर घड़ी
जिस्म पर शादाब ज़ख़्मों के निशां रहते नहीं।
अब कहां ले जाये अंजुम ये शिकस्ता[6] साअते
अब कहीं पर भी हमारे महरबां रहते नहीं।

1. आकाश के नीचे 2. जंगल
3. बहता हुआ 4. प्रतिबिम्ब
5. इच्छाओं का हाथ 6. तूटे पल छिन्न

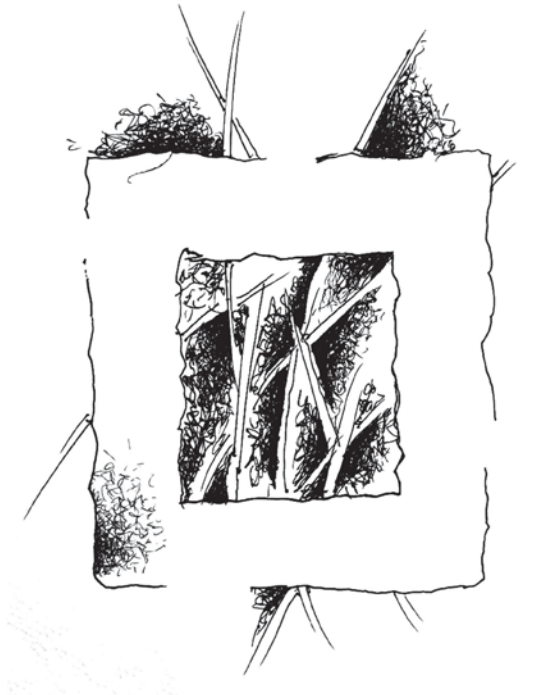

कविता

# भास्कर लक्षकार की कविताएँ

**भास्कर लक्षकार**

युवा कवि भास्कर लक्षकार की कविताएँ अपनी भाषिक संरचना और ताजगी के चलते पाठकों का ध्यान अपनी तरफ खींचती हैं। इन कविताओं में अपने लोक की धड़कन को भी महसूस किया जा सकता है। भास्कर साहित्य के गम्भीर पाठक है और शास्त्रीय संगीत में भी उनकी गहरी रुचि है। वे वर्ष 2010 बैच के आईएएस अधिकारी हैं और इन दिनों भोपाल में ही पदस्थ हैं।

संपर्क : 086027 48254

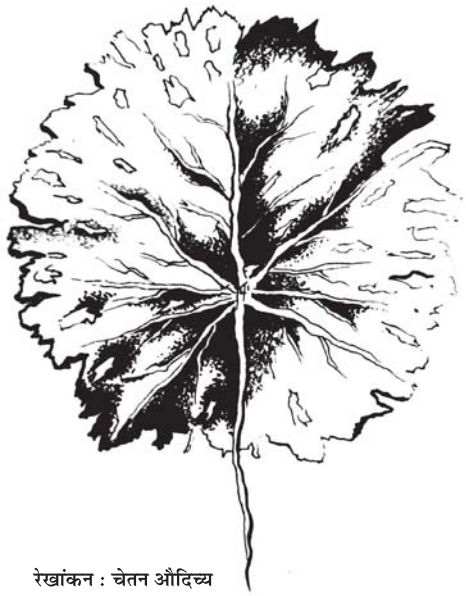

रेखांकन : चेतन औदिच्य

## कातिक असनान करती औरत

इस दफ़ा कातिक अन्हाना मैने भी देख लिया
मुंह अन्धेरे उठ के जाना तालाब पे और स्नान कर लेना इत्ती ठन्ड में/
कातिक का महीना
जिसमे हर नारी गोपी बन के खोजती है छलिया कृष्ण को
जो बिसरा गया उन्हे हज़ारो हज़ार बरस पहले
फुआ मां और बाई सब नहाते थे कातिक
धीमे-धीमे गीत और धीमी-धीमी पूजा
गीले कपड़ों मे ही लिपटे हुए
मधुर उजास के पहले ही कर लेनी होती
अर्ध्य देना देवों को जड़ चेतन को पीपल देवता को
माथे पे लगाए निर्मल चन्दन
दिया ले के खोजती हैं गोपियां पहर रात से अपने माधव को
जो छोड़ के चल दिया सब कुछ राजदंड धारण कर के
किस के लिए ये सब परब ब्रत त्योहार
सब का सब फ़ल गया है अब तलक सिरफ़ आदमी को
बस ऐसे कि ज्यों जिन्दा रहने का टैक्स देती हो औरत

## सूखते जाते हैं फूल

सूखते जाते हैं फूल
क्षण क्षण बढती गर्मी की तपिश से
मुरझाती जाती है सुगंध
झर जाती है एक एक पत्ती
और फूल मरता है अपनी मौत
धीरे धीरे अंतिम पांखुरी की अलविदा कहने तक
एक एक रसतन्तु ढीला करता जाता है
विक्षेप करते हुए अपनी स्निग्धता का ।

## हे राजन

हे राजन,
यह बौने शासकों का दौर है,
जो लकड़ी बंधे पाँव से ऊँचे दिखने की जुगत में हैं।
जो युगदृष्टा बनते दिखना चाहते हैं
और जिनकी आँख चीन्हती नहीं
अपने ठीक सामने का पडौसी गायक,
यह कर्कश आलापों का स्वर है
जिसमे द्रुत की बंदिश अभी बाकी है।
जहाँ स्वर को दाब के कीचड में, मसका जा रहा है गला।
और मौत का कारण पी एम में आता है
ह्रदय गति रुकने से मृत्यु भंते,
यह धार्मिकों का युग है।
जो जितना अनैतिक है उतना ही
धार्मिक दिखने की जुगाड़ में है
मानो यूँ कि यह कीचड धंसी देह पर
सफ़ेद कपडे की ढकन है।
साधो,
यह सामाजिकों का समय है
यहाँ राज्य प्रायोजित खाओ -खिलाओ कार्यक्रमों में
दीमक सरीखे हम सब लगे हैं।

## एक थका हुआ देश

एक थका हुआ देश
वर्षा में एक दिन पाता है आराम का।
आषाढस्य प्रथमो दिवस:
इस बार आषाढ़ के अंतिम दिवस तक नहीं बरसा पानी
सुखाड की छाया घेरती है कसबे को
कुछ यूँ जैसे पगलाए कुत्ते किसी बछिया को
रगेदते हैं सावन के बसकारे में।

■

कविता

( श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ.वि. श्री. वाकणकर को समर्पित )

# भीमबेटका

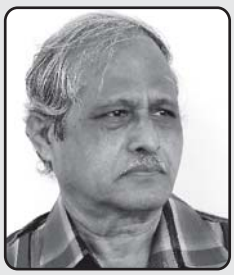

राजेन्द्र नागदेव

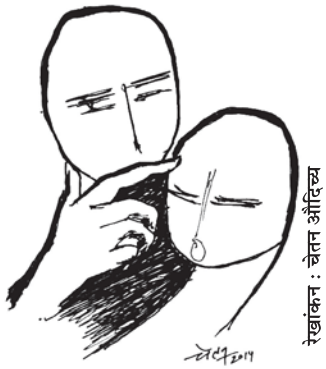

रेखांकन : चेतन औदिच्य

सूर्य जलता है बाहर
अंदर आदिम गंध, नमी और शीतलता सहेजे
शैलाश्रय शैलाश्रय भटकती है हवा
भीमबेटका
कितनी ऊबड़खाबड़ धरती !
कितनी विशाल चट्टानें !
कितने पुरातन महातरुओं से कितनी प्रौढ़ लताएँ एकाकार !
गुफाओं के अंदर कितना सारा अंधकार !
किस यत्न से आदिम चितेरों ने अंकित किया होगा
शिलाओं पर अपना समय !
कितने सँकरे आड़े-तिरछे, माँदों की तरह दबे शैलाश्रय !
कहीं-कहीं पशुओं की तरह बस रेंगना ही संभव
चट्टानों के बीच छूट गए छोटे-छोटे वातायनों से
टुकड़ों-टुकड़ों में धीरे-धीरे डरा-सहमा
झिझकता सा आता है सूर्य अंदर
और साँझ उतरने से पहले
डेरा समेट कर निकल जाता है
कि यह लकड़बग्घों, सियारों, तेंदुओं के विश्राम का वक्त होता है
उनके रैनबसेरे अब भी हैं गुफाओं में,
छत पर दाएँ-बाएँ घात लगाए शिकारी दलों को
उपेक्षा और घ्रणा से निहारते,
बीत चुके समय वाले भालों के शीर्ष पर बँधे
चकमक पत्थरों की धार से बेपरवाह
वे बैठते, लेटते, टहलते हैं निर्भीक
निरर्थक शस्त्रों के साथ चट्टानों पर हाथ कसमसाते हैं
शिकारियों की जड़ आँखें केवल ताकती हैं
कितना असहाय होता है इतिहास में जा चुका आदमी !
सूखे पत्तों के चरमराने की आवाज आती है
शब्दहीन भाषा में बड़बड़ाते, शस्त्र लहराते
पचीसों की संख्या में घरौंदों से निकल
काली छायाओं की तरह ढलानों से लुढ़क
बारहसिंघों, चीतलों, तेंदुओं के पदचिन्हों पर छापते अपने पदचिन्ह
घने जंगल की तरफ़ भागते हैं आदिमनुष्य,
जठराग्नि सुलगती है बार-बार बुझाने पर भी
पत्थर के आयुध भोथरे हो जाते हैं
आसपास
भूमंडलीकृत बाजार से उतरे अधुनातन परिधानों में सज्जित
चलित संवादयंत्रों पर बोलते-सुनते
स्वदेशी विदेशी स्त्री-पुरुष हैं
निजी संवाद में पुराकाल से आती आवाजों को
कहीं-कहीं कुछ जगह देते
अतीत की अनंतता में डूब कर
पुरखों का संसार देखने समझने को उत्सुक पर्यटक,
आगे-आगे मशाल की धुंधली रोशनी से
प्रागितिहास का अंधकार छितराता थका हुआ पुरातत्वविद गाइड
उसके धाराप्रवाह व्याख्यान की जाने
कौनसी पुनरावृत्ति होगी आज !
इन मानवों के बीच सहजता से आ रहीं, जा रहीं
पुरातन मानवों की अर्द्धनग्न टोलियाँ
पत्थरों पर पत्थरों से पत्थर और पत्तियाँ पीसती मादाएँ
सफेद, हरा और लाल रंग घोंटने में तल्लीन,
इतनी दक्ष की सदियाँ सरक जाएँ और रंग न मिटें,
निर्जीव वनपशुओं को यहाँ वहाँ
अश्माश्त्रों से चीरते नर
मैं दो कालखण्डों के बीच फँसा हूँ
दो नदियाँ समानांतर बह रहीं हैं
दोनों के किनारों पर खड़ा
दो युगों को एक साथ जी रहा हूँ भीमबेटका में मैं।

मो. 8989569036

■

कविता

# डॉ. नारायण व्यास की कविताएँ

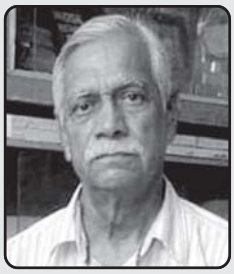

डॉ. नारायण व्यास

रेखांकन : चेतन औदिच्य

## मन की पतवार

ले चला मै अपनी नैया
ज्ञान सागर में
खेकर, मन की पतवार से
दिखा सामने
अनन्त क्षितिज
जोड़ रहा था इस जग को
पर, पहुंचे कैसे
ज्ञान नहीं
कहीं थपेड़ा, कहीं तूफान
कहीं भंवर की कठिनाई
पर कर्मठ मन को,
यकायक, दूर क्षितिज में
दिखा सुंदर सा उजियारा
बता रहा मार्ग
देकर आशीर्वाद
जैसे मां का पुत्रों पर हो प्यार
कह रहा था मूक रूप से
सफल नाविक
मन की नैया, बिना मुड़े चलाओ
मन की पतवार से
जिंदगी में आते रहते हैं
ऐसे ही आंधी और तूफान
और यही है इस जग में
कर्मठता की सही पहचान

## इतिहास न बदलो

रे, मानव अब तू इतिहास सम्हाल
भूल मत उसे बना देश खुशहाल
कितनी पवित्र है तेरी संस्कृति
प्राचीन मानव की थी पुण्य प्रकृति

हर मानव का था स्वर्णिम इतिहास
प्राचीनयुग में हरिश्चंद्र, कल थे सुभाष
बीते कितने ही सतयुग धीरे-धीरे
हर जन मानस अमलकर प्रयत्न करें

इतिहास सिखा रहा हमको जीना
पूर्वजों ने बहाया था खून पसीना
इतिहास की नींव है पवित्र आचरण
बता रहे धरा के रज कण कण

भारतवासी आदर कर जाने इतिहास
न हो संस्कृति का कभी मजाक
न लगे धब्बा, न बदले इतिहास
राणा, शिवा की धरा का न हो ह्रास

वर्तमान भविष्य में बने तुलसी छंद
इतिहास की नींव को न खोदे जयचंद
वेद, गीता, रामायण है आत्मा भारत की
नमन करे इतिहास को हम भारत भारतीय

## कटु वचन

नीम का हर भाग
कड़वा
परंतु फल
उतना ही मीठा
सुनकर कटुवचन
कड़वाहट होती
मन में
अमल करे हम बात
न होगा कभी
पश्चाताप
सागर का खारा जल
प्रेम से
ग्रहण करते बादल
पाते हम प्रतिफल
जैसे नीम का हो
पका फल

## अरे ओ नींव के पत्थर

अरे ओ नींव के पत्थर
तुम पर खड़ी कई इमारतें
सहन सहन कर बरसों तक
इस भूतल की हरियाली को
खजुराहो, कोणार्क, कुतुब और ताज
आज तुम पर करते हैं नाज़
सहन सहन कर उनके वजन को
बचाया है तुमने अपने अतीत को
जैसे मां ने अपने सपूत को
आजाद भारत की इमारत में
कई लगे हैं नींव के पत्थर
प्रताप, शिवा, हकीकत, पाण्डे,
लक्ष्मीबाई, नाना, गोखले
ये सभी हैं नींव के पत्थर
समय समय पर और कई
वैसे बने हैं नींव के पत्थर
मोतीलाल, गांधी और जवाहरलाल
शहीद भगत सिंह और आजाद
जाने कितने और बनेंगे
आजादी के नींव के पत्थर
वैसे ही ये नींव के पत्थर
जिन पर होगा इतिहास हमारा
आने वाली पीढ़ियों पर
छाप पड़ेगी वैसे ही
जैसे तुम हो नींव के पत्थर

## क्षमता

जिसमें जितनी क्षमता होगी
उतना ही तो वो पायेगा
कहते हैं घड़ा गया समुद्र के पास
उतना ही भर पायेगा

अपनी अपनी किस्मत लेकर
मानव इस जग में आता है
कर कर प्रयास कर्म रूप में
नाम अमर कर जाता है

इस भवसागर में कुछ मानव
इसका सार समझते हैं
लिए घड़ा बुद्धि का
ज्ञान सागर प्राप्त कर लेते हैं

■

गीत विमर्श

# मिल्टन से टकराता रहता रोज ईसरी फाग के बहाने : जंगबहादुर 'बन्धु' के गीतों पर विमर्श

मनोज जैन

साहित्यिक विरादरी का शायद ही कोई शख्स ऐसा हो जिसका सम्बन्ध पुराने भोपाल के इस,सांस्कृति तीर्थ से न जुड़ता हो,तीर्थ इसलिए कि जिस भवन में महीयसी महादेवी वर्मा,भवानी दादा.शिवमंगल सिंह सुमन,शरद जोशी,हरिशंकर परसाई,बालकवि बैरागी,रतन भाई पत्रकार,प्रोफेसर अक्षय कुमार जैन,डॉ चन्द्र प्रकाश वर्मा,मूलाराम जोशी,शिव कुमार श्रीवास्तव, मदन मोहन जोशी,राजेन्द्र अनुरागी,दिवाकर वर्मा,भगवत रावत, राजमल पवैया, उपेंद्र पांडेय,राजेन्द्र नूतन,रामनारायण प्रदीप,कैलाश चन्द्र पंत,देवीशरण,देवेंद्र दीपक जैसे वंदनीय साहित्यिक मनीषियों के चरण पड़े हों,जहाँ तत्कालीन भोपाल विलीनीकरण जैसे आंदोलनों की रणनीतिक बैठकें सम्पन्न हुई हों,जो भवन भारत के राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा जी की महती उपस्थिति का साक्षात साक्षी रहा हो,स्वाभाविक है उस स्थान को किसी तीर्थ से कम तो किसी भी कीमत पर नहीं आंका जा सकता है।

तत्कालीन जिला सीहोर के गजेटियर में उल्लेखित कला-मन्दिर राजधानी की एक मात्र सबसे प्राचीन रजिस्टर्ड संस्था रही है,संस्था की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र भी राय भवन ही हुआ करता था। कला मन्दिर की नियमित मासिक गोष्ठियाँ यहीं संचालित होती रही हैं।एक समय रहा है जब,रायभवन और कला मन्दिर एक दूसरे का पर्याय हुआ करते थे। कथन की दृष्टि से ना तो यह अति रंजना है और ना ही अतिशयोक्ति। लेख की स्थापना में राय भवन का जिक्र इसलिए कि यह वही स्थल है जहाँ मैंने साहित्यमर्मज्ञों और साहित्य साधकों से कविता का ककहरा सीखा।और कला मन्दिर का जिक्र विशेषतौर से इसलिए कि मुझे इस गौरवशाली संस्था में लगभग एक दशक तक सचिव के रूप में अनेक अध्यक्षों सर्व श्री रामनारायण प्रदीप, हरिविट्ठल धूमकेतु,डॉ हुकुम पाल सिंह विकल,राजेन्द्र शर्मा अक्षर और डॉ राम वल्लभ आचार्य जैसे अनेक मूर्धन्य विद्वानों के साथ काम करने और अपनी प्रतिभा को माँजने का सुअवसर मिला।

याददाश्त पर थोड़ा सा बल देने पर,संस्था के वार्षिकोत्सव और मासिक गोष्ठियों की यादों की रील मेरे जेहन में आज भी जस की तस घूम जाती है। कुछ पंक्तियां जो मैंने उस दिन कला मन्दिर की विशेष गोष्ठी में उन धवलकेसी से सुनी। जो आपको आज भी अक्षरश: सुना सकता हूँ विशद्ध भारतीय पारम्परिक सफेद धोती और,खादी के कुर्ते में सुसज्जित सुखासन में विराजमान,भरे-पूरे ऊँची कद-काठी के जो पुरुष थे,वे दिखने में तो हूबहू निराला से मिलते जुलते थे पर निराला नहीं थे।

निराला ना सही पर पर निराले व्यक्तित्व के धनी कोई और नहीं बल्कि जाने-माने छन्द साधक अक्षर पुरुष श्रीजंगबहादुर श्रीवास्तव बन्धु जी थे। जो उन दिनों सिंचाई विभाग से सेवानिवृत्त होकर भोपाल आए थे। राय भवन जुमेराती में,कला मन्दिर की गोष्ठी में (सम्भवत:पहला पाठ भी), पहली बार ही अपने पाठ के प्रभाव से सब के दिलों में खासा असर छोड़ गए,जिसकी छाप मेरे मानस पटल पर आज भी अंकित है। उनकी प्रस्तुति में गजब का कॉन्फीडेंस था जिससे पूरा सदन चकित था। यथा नाम वे जंग के बहादुर तो थे ही फिर चाहे जंग कविता की हो,या जीवन की,जीतना उन्हें बखूबी आता है।

जरूरी नहीं कि हर कवि कोट किये जाने के मामले में दुष्यंत और अदम गोंडवी ही हो,बहुत कम लोगों के हिस्से में यह यश आता कि उनका लिखा सीधे लोगों की जेहन में उतरे,मुझे बन्धु जी इस मामले में उन बहुत कम लोगों में से लगते है जिनके यहाँ खास किस्म की कोटेविलिटी है। यही कारण है कि उनकी पंक्तियाँ आज भी लोगों के जहन में वैसी की वैसी हैं। बन्धु जी ने उस दिन एक नहीं पूरे तीन गीत पढ़े थे एक गीत का अंश द्रष्टव्य है।

**कंठ लोटे का फंसा है डोर से/**
**और सौ-सौ हाथ गहरा है कुंआ/**
**बन्धु फिर भी पूछते हो क्या हुआ/**

यह पंक्तियाँ आज हममें से,अनेक लोगों को याद हैं। वैसे तो जंगबहादुर जी के यहाँ उच्चकोटि का काव्य कौशल और चातुर्य है, उनके कवि की अन्यतम विशेषता यह भी है कि, वह पाठक को पहले बाँधता है फिर पंक्तियों के ध्वन्यार्थ खोलने को विवश करता है। गीत के प्रस्तुत अंश को ही लें,तो यहाँ 'लोटा' आम आदमी का प्रतीक है और डोर सत्ता का। आम आदमी की विषमताओं को कवि ने सौ हाथ गहरे कुएं के रूपक में बांधा है। यह एक मात्र जिजीविषा ही है,जो आम जन को जीवन भर निरन्तर हतोत्साहित करने वाली और तोड़कर रख देने वाली परिस्थितियों में भी जीवन का अस्तित्व बनाए रखने के लिए रीढ़ के बल खड़ा रखती है। कविता अपने अस्तित्व के बचाव की कोशिश के साथ आवाज भी उठाती हालांकि यहाँ प्रतिरोध का स्वर उतना बुलन्द नहीं है जितना होना चाहिए। तभी वह कहते हैं :- बन्धु फिर भी पूछते हो क्या हुआ/ हम अपने अस्तित्व को पूरी तरह बचा पाने में तभी सफल होंगे,जब हम प्रश्न उठाएंगे। बन्धु जी के काव्य में ऐसे अनेक सामयिक प्रश्न उठते हैं, जिनका संज्ञान लिए जाने की जरूरत है।अक्षर की प्रकृति और प्रयोग जानने वाले विलक्षण प्रतिभा के धनी गीतकार जंगबहादर बन्धु जी के यहाँ प्रभावी कविताओं की कमी नहीं है। देखिये एक गीत का अंश... जिसमें उन्होंने कोमल प्रकति की अपनी स्वयं की पीडा का मार्मिक चित्रण किया है।'**चीखता चदन घिसो मत/पत्थरों की पीठ पर ) हे विधाता/गंध वाली देह मत देना किसी को/**' रचनाप्रक्रिया के तल

में उतर कर इतना तो समझ में आ ही जाता है कि कवि की रचनात्मकता का उत्स उसका अपना निजी जीवन और परिवेश ही होता है जहाँ से कविता आकार ग्रहण करती है।

फूंक मारती है' शीर्षक से बंधु जी का एक बहुत ही चर्चित गीत है जिसके धरातल को,जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ,सीधा प्रभाव टूटते विखरते सँयुक्त परिवारों की घुटन से उपजे, घर के मुखिया पर पड़े परस्थिति जन्य द्वंदात्मक प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हो सकता निराला की तरह बन्धु जी यहाँ खुद ही अभिव्यक्त हो रहे हों !और नहीं भी कुल मिलाकर बन्धु जी के कवि का गीत नवगीत पर काम कर रहे आलोचकों का ध्यान जाना ही चाहिए और आप भी यदि इस महत्वपूर्ण कवि को नहीं पढ़ पा रहे हैं तो आप बहुत कुछ मिस कर रहे हैं। मानस पर धारा प्रवाह बोलने वाले इस कवि के सन्दर्भ में यदि इनके काव्य में प्रयुक्त मिथकों की चर्चा ना की जाय तो बात अधूरी ही होगी सामयिक सन्दर्भ में जितने खुलकर मिथकीय प्रयोग जंगबहादुर जी के यहाँ मिलते है वह अन्यत्र दुर्लभ ही है! यद्धपि यह नितांत वैयक्तिक और निजी मामला है परन्तु प्रसंग वश मुझे यहाँ एक बात और जोड़ना जरूरी लगा बन्धु जी ने मुझे उस समय गीतकार कहा था जब मुझे कविता की रंच मात्र समझ भी न थी। प्रस्तुत है उनका गीत, इस गीत का वैशिष्ठ यह है कि इनमें सम्पूर्ण भारत और भारतीय परिवेश श्वास लेता है।

### चीखता चंदन

चीखता चंदन घिसो मत
पत्थरों की पीठ पर
हे विधाता गंध वाली
देह मत देना किसी को

शुक हुआ बंदी कि उसने
आदमी के बोल सीखे
सींग सुंदर क्या मिले
मृग झेलता है तीर तीखे
बूंद बरसे या न बरसे
हानि आंगन की नहीं
जल रहित पर जहर वाले
मेह मत देना किसी को

हस्तिनापुर की सभा ने
फिर नए पाँसे मंगाए
देखना कोई युधिष्ठर
फिर कहीं छलने न पाये
गिरि कंदराओं में कहीं
रत्न मण्डित लाख वाले
गेह मत देना किसी को

एक छल हो तो विवेकी
मन उसे परखे सम्हाले
घन तिमिर पूरित निशा में
कब कहां विषधर न खा ले
मंथरा बैठी हुई है
केकई के कक्ष में
अथ अनर्गल मानसिक संदेह
मत देना किसी को

वैराग्य के पूरे शतक में
दर्द का हिम शैल देखा
बज्र से खींची गयी है
छंद के प्रत्येक रेखा
भरथरी की तप गुफा से
चीख आती है निरंतर
पिंगला जैसी प्रिया से
नेह मत देना किसी को

रायभवन,जुमेराती और साहित्यिक संस्था कला मन्दिर का आज भी शुक्रगुजार हूँ,जहां मैन ऐसे ही अनेक कवियों विचारकों को सुनकर अपने ज्ञान में और अनुभव में हमेशा नया जोड़ा।

मिल्टन के बरक्स लोक कवि ईसुरी को बड़े फलक पर रखने वाले कवि जंगबहादुर जी शतायु हों।

-106, विट्ठल नगर गुफा मंदिर रोड भोपाल
462030

## श्रद्धांजलि

**भारतरत्न प्रणब मुखर्जी**
**पूर्व राष्ट्रपति**
जन्म : 11 दिसम्बर 1935 निधन : 31 अगस्त 2020

●●●

**देशराज पटेरिया**
**बुन्देली लोक गायक**
जन्म : 25 जुलाई 1953 निधन : 5 सितम्बर 2020

●●●

**अमाला शंकर**
**सुप्रसिद्ध कोरियोग्राफर, नृत्यांगना**
जन्म : 27 जून 1919 निधन : 24 जुलाई 2020

●●●

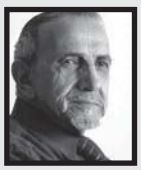

**इब्राहिम अल्काजी**
**प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक, रंगकर्मी**
जन्म : 18 अगस्त 1925 निधन : 4 अगस्त 2020

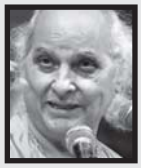

**पद्मविभूषण पं. जसराज**
**सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायक**
जन्म : 28 जनवरी 1930 निधन : 17 अगस्त 2020

●●●

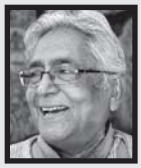

**मुकुन्द लाठ**
**सुप्रसिद्ध संगीत मर्मज्ञ, समीक्षक**
जन्म : 9 अक्टूबर 1937 निधन : 6 अगस्त 2020

●●●

**राहत इन्दौरी**
**सुप्रसिद्ध शायर**
जन्म : 1 जनवरी 1950 निधन : 11 अगस्त 2020

●●●

**'कला समय' परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि...**

आलेख

# 'रसो वै सहः' की मौलिक अभिव्यक्ति
## ( कलाकार चेतन औदिच्य के चित्र )

गौरीकान्त शर्मा

समकालीन कला में रूप-अरूप का आत्यंतिक आग्रह छाया हुआ है। फलस्वरूप कला में उसकी अंतर्वस्तु तथा चिंतन तत्व का विलोपन होता जा रहा है ऐसे में उन कलाकारों पर ध्यान देना अधिक समीचीन हो जाता है? जो अपनी जड़ों से खाद-पानी लेते हैं। जिनके सौंदर्यबोध की दृष्टता पर पाश्चात्य रंग का चश्मा नहीं है। जो अपनी ही मौलिक चित्र-भाषा में सृजन करते हैं। उदयपुर राजस्थान के विद्याभवन कला-संस्थान से दीक्षित कलाकार चेतन औदिच्य अपनी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परम्परा के आलोक में चित्र-सर्जना करने वाले ऐसे ही चर्चित चित्रकार हैं। वैनायकी, कॉस्मिक फोर्स, प्रकृति-पुरूष आदि सीरीज की पेंटिंग्स के साथ ही उनके सैंकड़ों सशक्त रेखाचित्रों ने कला समीक्षकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है उनके चित्रों का केन्द्र मनुष्य और उसके उद्दाम विचार हैं कला के आधुनिक मुहावरों को अपनाते हुए उन्होंने 'भारतीयता' के प्राचीनतम प्रतीक-बिंबों को अपने चित्रों में स्थान दिया है; अंततः जिनका केन्द्र 'मनुष्य' है यदि इसे मानवता के पक्ष में देखा जाए तो 'वस्तु-केन्द्रित' होती जा रही दुनिया के विरूद्ध कलाकार की यह ठोस प्रतिक्रिया है इसका एक कारण यह भी है कि उन्होंने भारतीय दर्शन तथा इतिहास का गहरा अध्ययन-अनुशीलन किया है। सम्भवतः इसी कारण मिथकीय चरित्र वैनायकी, पृथ्वी देवी, प्रकृति-पुरूष, नटराज आदि चित्र भिन्न प्रकार की मौलिकता लिए हैं। जिनमें जीवन सौंदर्य, गांभीर्य, मनःचेतना और मनुष्य की पक्षधरता स्पष्टः दिखाई देती है अमूर्तन और आकारिकता का संयोग है।

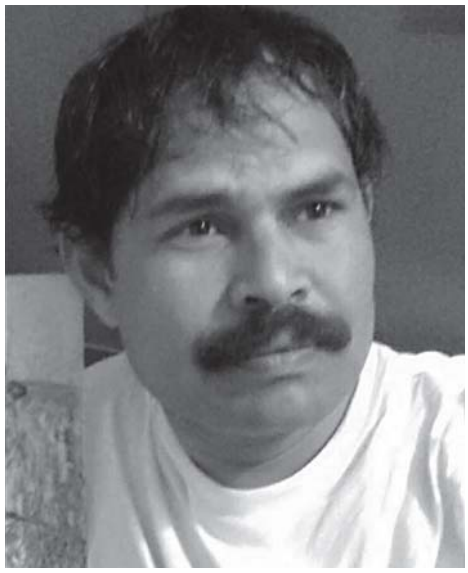

देश-दुनिया में अनेक कलाकारों ने मिथकीय चरित्रों को लेकर चित्र बनाए हैं। चेतन इस दृष्टि से अलग दिखाई देते हैं कि उनके मिथकीय पात्र आज के समय की चेतना को प्रतिबिंबित करते हैं वैनायकी, स्त्री रूप में गजमुखा देवी ही नहीं है, अपितु वर्तमान विश्व की वह महिला भी है जो आत्मनिर्भर है, जो स्त्री-मात्र हो जाने के कारण दोयम दर्जे पर नहीं खिसक जाती है; बल्कि, अपनी ही ऊर्जा की आंतरिक लय के साथ स्वतन्त्र-सक्षम अस्तित्व के साथ प्रकट होती है। चित्रकार ने उसकी देह-मुद्रा में उसके स्वतन्त्रय को प्रकट किया है वह अपने समय की चेतना का प्रतीक बन कर आती है। वैसे भी अपने समय की चेतना को समझे बिना उत्कृष्ट कला सृजित नहीं हो सकती, इस दृष्टि से उनके चित्रों में समय की सूक्ष्म-चेतना को देखा जा सकता है। 'पृथ्वी देवी' का चित्र, प्रतीकों में संकेत करने वाला एक ऐसा ही चित्र है। विकास की अंधी दौड़ में आदमी, पर्यावरण को क्षत-विक्षत करने पर तुला हुआ है। अन्य ग्रहों-उपग्रहों तक पहुँच बनाने की पिपासा में आदमी यह भूल गया है कि पृथ्वी के प्रति उसकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ हैं। ऐसे में यह चित्र बताता है कि, समय आ चुका हैं, हम पुनः पृथ्वी-पर्यावरण के प्रति कृतज्ञ हो जाएं पृथ्वी-देवी का रूप और रंग विन्यास देखकर दर्शक के मन में कृतज्ञता उपजती है। चित्र में देवी नृत्यासन मुद्रा में बैठी हुई है। उसके गले में विषधर पड़ा है जो अधोगामी होकर अपने फण पर भू-वृत्त को धारण किए है। यहाँ शास्त्र वर्णित भूमण्डल और पृथ्वी-मण्डल का द्वैत स्पष्ट दिखाई देता है विषधर इस बात का प्रतीक बन कर आया है

कि पृथ्वी और भूमण्डल को यदि डिगाया जाता है तो अंतत: विष की प्राप्ति ही होगी। इस तरह कलाकार अनेक प्रतीकों में अपनी बात करता है जो उनके चित्रों की ताकत बन कर उभरते हैं।

विश्व की तमाम संस्कृतियों ने अपने प्रतीक गढ़े हैं। सैंकड़ों वर्षों की यात्रा उपरान्त वे सुघड़ विचार श्रृंखला से जुड़ते गए अपने अर्थों की परिक्रमा में मानव जीवन के कार्यकलापों की दिशाएं व्यंजित करते रहे। कला में इन प्रतीकों का प्रयोग न केवल हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है, बल्कि यह भी बताता है कि हमें भविष्य की किस गति में लय रहना है सांख्य के 'प्रकृति' जहाँ कर्ता, सक्रिय और जड़ है; वहीं पुरुष अकर्ता, निष्क्रिय एवं चेतन हैं। इन दोनों का संयोग ही सृष्टि की उत्पत्ति करता है। किन्तु यह देखना होगा कि इस ब्रह्माण्ड का केन्द्र अंतत: औरत एवं आदमी ही है ; जिन्हें अन्य अर्थों में प्रकृति और पुरुष कहा गया है। कलाकार ने इसी तत्व को आत्मसात करके इन्हें आज के स्त्री-पुरुष के भाव-बोध का रूप देकर केनवस पर स्थान दिया है। सामान्य मनुष्य की इच्छाओं, क्रियाओं को चित्र रूप में संयोजित किया है इस सीरीज में बहुत आकर्षक छवियाँ गढ़ी गई हैं देह की लोच और गत्यात्मकता उनकी कलात्मक विशेषताएं हैं। पुरुष भी गतिशील रूप में बनाए गए हैं, यद्यपि उनकी गति स्थिर तथा अविकल गति है। प्रकृति के क्रियाकलापों के साक्षी-मात्र रूप में।

इधर जहाँ बहुतेरे कलाकारों ने लोक के प्रतीकों को एक फैशन की तरह चित्रों में इस्तेमाल करना आरम्भ किया है, वहीं चेतन के चित्रों को देखने से लगता है कि उनमें संयोजित प्रतीक लोक-धारा में डूब कर लाए गए हैं। तभी वे दर्शक पर अपना असर भी डालते हैं। लोक-मिथकों को चित्रों में लाना एक जोखिम भरा काम भी है; क्योंकि, यदि वे अपनी पूर्ण त्वरा के साथ अभिव्यक्त

नहीं हो पाते हैं तो, चित्र एक डेकोरेटिव-पीस बन कर रह जाता है। चेतन अपने आकारों और रंगों में धुर-साहसी प्रयोग करते हुए भी चित्रों को इस दोष से बचा ले जाते हैं साथ ही वे इनमें लगाए गए रंगों के बहाने मानव-मन की पड़ताल भी कर देते हैं।

समकालीन कला अपने समय में पैंठने की जुगत है। यह समय के प्रति कलाकार की जिम्मेदारी भी है। कलाकार वर्तमान समय के संवेदनों को अपनी कला में अभिव्यक्ति देता है संवेदन जितने सुघड़ होते हैं, वे उतनी ही श्रेष्ठता से चित्र छवि में दिखाई देते हैं सर्जक का कौशल जितना अच्छा होता है, कृति सौंदयात्मक प्रतिमान पर उतनी ही खरी उतरती है संवेदन के तल पर चेतन अपने चित्रों में हड़प्पा से लेकर इक्कीसवीं सदी तक के दीर्घ काल-खण्ड के संवेद्यों को अपने चित्रों में उद्घाटित करने का यत्न करते हैं। अनेक चित्रों मे हड़प्पा की अपठित लिपि का सुन्दर प्रयोग किया गया है। कबीर की उलटबांसी 'बरसे कम्बल भीजे पानी, कहे कबीरा उल्टी बानी' को केनवस पर उकेरने के साथ जीवन रहस्य को जानने में निमग्न आदमी का एक बड़ा चित्र बहुत कुछ कहता है। 'महागीता' चित्र में ऊर्द्धगामी देहाकृतियाँ मनुष्य की भीतरी उड़ान को प्रदर्शित करती हैं। नटराज की लास्य मुद्रा समय के धवल-स्याह तथा चटक रंगों द्वारा एक आकर्षक संसार को प्रस्तुत करती है।

कलाकार चेतन ने अलग-अलग माध्यमों में काम किया है। जल रंग, तेल रंग, ऑइल पेस्टल आदि रंग माध्यमों को अपनाया है इनके अधिकांश चित्र एक्रेलिक रंगों में बनाए गए हैं। व्यक्ति चित्र तथा सैरा के चित्रों में जल रंगों का प्रयोग है। वरिष्ठ कला समीक्षक डॉ0 राजेश कुमार व्यास के अनुसार, 'चेतन के चित्रों की प्रमुख विशेषता इनका रंग संयोजन है। उनके टेक्सचर एक अलग ही प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करते हैं।' वस्तुत: यह सत्य भी है कि वे विविध विरोधी रंगों में भी एक संगत स्थापित कर देते हैं। उष्ण एवं शीत रंगों की अनेक परतों का लेपन एक ठण्डक प्रदान करता है पोत इस तरह से लगाया है जैसे अस्तित्व साकार रूप में झर रहा हो पीले, नारंगी, लाल रंग की परते चित्र पट से झाँकती हैं। कहीं-कहीं देहाकृतियाँ बहुत सूक्ष्म रूप में चित्रित हैं, तो कहीं कहीं मोटे स्थूल रूप में बनाई गई छवियाँ अमूर्तन में विलोपित होती दिखाई देती है। मूर्त-अमूर्त की परिभाषा से इतर उनके चित्र मनुष्य मन की छवियाँ हैं, जो कहीं स्पष्ट तो कहीं धुंधलके की आड़ लेती हैं। रूप के तल पर नृत्य, विश्राम, विस्मय, अभीप्सा आदि क्रिया-भावों का उत्कीर्णन नज़र आता है। सारत: कहा जा सकता है कि उनकी अभिव्यक्तियाँ काल से निकल कर काल में ही लीन होती हुई केनवस पर आच्छादित रहती हैं।

- मातृछाया, शिक्षा निकेतन के पीछे, पानेरिया की मांदड़ी, उदयपुर (राज.)
मोबाइल : 09461180747

■

# पुरातत्व की प्राचीर - डॉ. नारायण व्यास

नेहा प्रधान

डॉ. नारायण व्यास एक जाना पहचाना नाम है जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन पुरातत्व को समर्पित कर दिया। अपनी सेवानिवृत्ति के उपरान्त भी जो निरन्तर खोज कर इतिहास के संरक्षण में रत हैं। इनका परिवार मूलत: जैसलमेर का निवासी था परन्तु बाद में इनका परिवार उज्जैन में बस गया। उज्जैन में अनंतलाल जी के यहां जन्मे डॉ. नारायण व्यास को बचपन से ही पुरानी वस्तुओं के प्रति रूचि जाग्रत हुई उनके पिता स्वतंत्रता संग्राम सैनानी थे अपने पिता के संस्कारों के कारण उनमें अपने गौरवमयी इतिहास के प्रति आदर की भावना का उदय हुआ उन्होंने अपनी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए कई प्रकार के संग्रह आरंभ कर दिए जिनमें दियासलाई, डाकटिकट और सिक्के सम्मिलित थे वे अपनी मां के साथ कई बार मंदिर जाते थे जहां मूर्तियां और कारीगरी देखकर उनका रूझान कला की तरफ हुआ इसी से प्रभावित होकर उन्होंने चित्र बनाना आरंभ किया उन्होंने फाइनआर्ट की भी पढ़ाई की लेकिन एक दिन उनके पिता उनको डॉ. वाकणकर के पास ले गए जब वह आठवीं में पढ़ते थे तब उनका रूझान पुरातत्व की ओर होने लगा डॉ. वाकणकर की प्रेरणा से उन्होंने पुरातत्व की ओर कदम बढ़ाए और पुरातत्व में डिप्लोमा किया वह डॉ. वाकणकर की टीम के सदस्य रहे। 1971-72 में डॉ. वाकणकर के साथ डॉ. नारायण व्यास, के.डी. वाजपेयी, एस.के.पाण्डे, शंकर तिवारी, गिरिराज कुमार, मीनाक्षी पाठक, एस.एस.गुप्ता आदि के साथ उन्होंने भीमबैठका की महत्वपूर्ण खोज में सहयोग किया तथा अन्य ने शैलकला में सहयोग किया। बाद में उन्होंने भीमबैठका पर डीलिट की उपाधि प्राप्त की भीमबैठका को यूनेस्को ने 2003 में विश्वधरोहर सूची में सम्मिलित किया।

विश्व इतिहास में भारत की उपस्थिति दर्ज कराने वाले एक महान शख्स जो कि देश के विभिन्न राज्यों राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, हरियाणा में पुरातत्व अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं उनकी सबसे बड़ी खोज थी रायसेन की प्राचीर। रायसेन में उन्हें एक बड़ी प्राचीर मिली जो कि भारत की सबसे लम्बी प्राचीर थी 80 लगभग किलोमीटर तक लम्बी यह प्राचीर भारत की सबसे बड़ी लम्बाई है। डॉ. व्यास के साथ इतिहास संकलन कमेटी भोपाल के सत्यनारायण शर्मा सहित नें इस दीवार का सर्वे राजीव चौबे के दल ने किया यह रायसेन जिले में नारायण व्यास ने सहयोग किया शैलकला के छापे में कार्य किया।

डॉ. व्यास ने कई स्थानों पर पुरातात्विक संपदा खोजी। जैसलमेर के बरमसर के पास बहने वाली बरसाती नदी और काक की सहायक नदी में आदिकालीन औजारों के निर्मित होने के भी संकेत दिए उनके अनुसार यहां 1 लाख वर्ष पुराने हथियार बनाए जाने के साक्ष्य मौजूद हैं जैसलमेर जिसकी नींव 11 वीं शताब्दी में पड़ी वहां सिंधुघाटी के प्रमाण उन्हें मिले और उन्होंने संभवनाएं जताईं कि वहां खोज की आवश्यकता है। उन्हें जैसलमेर में प्रतिहार वंश के अवशेष भी प्राप्त हुए। सन् 1980में उनके द्वारा विदिशा मध्यप्रदेश में बेस नदी के किनारे उदयगिरी क्षेत्र में उत्खनन किया गया।

अपनी राजकीय सेवा के साथ-साथ डॉ. व्यास ने कई वर्षों के अथक परिश्रम के उपरान्त अपना एक निजी संग्रहालय बनाया जिसमें उन्होंने हजारों अद्भुत प्राचीन वस्तुओं का संग्रह किया है। एक अरब वर्ष पुराने समुद्री अवशेष, प्रागैतिहासिक हथियार, प्राचीन पात्र और सिंधुकालीन पात्र, उत्तरप्रदेश से तीसरी शताब्दी के काले मृदभांड रायसेन के पालमपुर घाटी से पत्थर की कुल्हाड़ी और क्लीवर्स वहीं हर्दा जिले में नर्मदा के किनारे से प्राप्त 1600 ईसापूर्व की मिट्टी के बर्तन, जिनमें तीसरी शताब्दी ईसापूर्व के जो कि उन्हें विदिशा से प्राप्त हुए मौर्यकालीन हैं और डाकटिकटों का संग्रह जिनमें विभिन्न अवसरों पर प्राचीन स्मारकों और हस्तियों पर जारी किए गए डाकटिकट और 1898 , 1903 के लिफाफे, 800 विवाह के निमंत्रणपत्र जिनपर गणेश जी चित्रित हैं, अखबार की कटिंग्स ।

इन्हीं में से एक है उनका दुर्लभ संग्रह जो कि इस संग्रहालय को अद्भुत बनाता है यहां -2300 वर्ष पुरानी ईंटें हैं उनके अनुसार यह ईंटें - मध्यकाल में मौर्यकालीन हैं जो कि तिसरी (शताब्दी ईसापूर्व), शुंगकालीन (2 शताब्दी ईसापूर्व), यह ईंटें मध्यप्रदेश और राजस्थान में जैसलमेर से प्राप्त हुई हैंकुषाणकालीन, गुप्तकालीन 3 शताब्दी ईस्वी, मध्यकाल , मुस्लिम शासनकाल और आधुनिक काल (17वीं शताब्दी)आदि की ईंटें भी हैं जो उन्हें मध्यप्रदेश के रीवा और सतना,रायसेन और भोपाल, सिरपुर के छत्तीसगढ़ जिनका स्वयं का एक विलक्षण इतिहास रहा है। इनमें से एकईंट जिस पर मानव के पैर छाप का अंकन है जो कि उन्हें विदिशा से प्राप्त हुई है, इसे विशेष बनाती है। इतनी संख्या में देश के विभिन्न स्थानों से प्राप्त यह ईंटें शोधार्थियों आदि के लिए तुलनात्मक अध्ययन के लिए उपयोगी हैं और इनसे तत्कालीन समाज की आर्थिक आदि स्थितियों का बोध भी होता है।

डॉ. व्यास को कई सम्मानों से नवाज़ा गया Golden book of world records , Wonder book of records. उन्होंने म्यांमार और स्पेन के विभिन्न शोधकार्यों में भी अपना योगदान दिया। डॉ. नारायण का लगाव पुरातत्व के प्रति इतना गहरा है कि 2009 में सेवानिवृत्ति के उपरान्त भी वह देश की धरोहर को सुरक्षित रखने और भावी पीढ़ी को इसकी महत्ता सिखाने के प्रति दृढ़संकल्पित हैं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दिल्ली द्वारा डॉ. वाकणकर की आर्ट गैलरी बनाई गई जिसमें डॉ. नारायण ने उनकी चिट्ठियां, चित्र, स्पेन के डाकटिकट आदि कई वस्तुएं भेंट की। डॉ. व्यास सांस्कृतिक धरोहर से परिचित करवाने के लिए कई प्रदर्शनियों का आयोजन करते रहते हैं। वह कहते हैं कि हमारी भावी पीढ़ी को इतिहास से सीखना चाहिए। वह न सिर्फ धरोहर का

संरक्षण करते रहे बल्कि उनके द्वारा निफ्ड के विद्यार्थियों के लिए भी समय-समय पर वर्कशॉप आयोजित की गई जिसमें उन्होंने शैलचित्रों और अनेक पुरातात्विक वस्तुओं के डिजायनों को विद्यार्थियों को सिखाया कि कला का विकास किस प्रकार से हुआ जो वर्तमान स्तर की उच्च कला तक पहुंच गया है। इतने विलक्षण व्यक्तित्व के धनी डॉ. नारायण व्यास ऐसे युगपुरूष हैं जो पुरातत्व के इतिहास में सर्वथा जीवित और अविस्मरणीय रहेंगे। ऐसे महान् व्यक्तित्व को एक छोटी कलम का सम्मान..

- **. नारायण ने सृष्टि रची किया विश्व उपकार, पुरातत्व के नारायण ने रचा विश्व इतिहास**
- **संस्कार पिता से सीखे पाया सुसंस्कृति का ज्ञान**
- **धरा का कर्ज उतारने आया नारायण का यह अवतार**
- **घूमे देश का कोना-कोना, उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम, दिया देश को पुरातत्व का विपुल भंडार चुना गुरू जब वाकणकर को उम्र थी मात्र कुछ साल ।**
- **महाकाल के आशीर्वाद से रचा नवीन विश्व इतिहास**
- **खोजकर रायसेन की प्राचीर, विश्व में बनाया भारत को खास**
- **किया समर्पित जीवन अपना, बसाया पुरातत्व का संसार**
- **प्रागैतिहासिक , मौर्य, कुषाण और शुंग काल प्रदर्शनी में दिया पुराइतिहास का ज्ञान,**
- **कहें सदा ही नारायण-पीढियां रखें संस्कृति सुरक्षित और रहे स्मृति में विस्मृत इतिहास।**

# कला समय

**कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका**

**के सदस्य बने**

मैं ..... कला समय पत्रिका का ..... एक वर्ष : 150/- रूपये, दो वर्ष : 300/- रूपये, चार वर्ष : 500/- रूपये, आजीवन : 5000/- रूपये का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ।

पत्रिका का शुल्क रूपये ..... ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर ..... दिनांक ..... संलग्न है।

नाम : .....

पता : .....

.....

पिन : ..... मो.: .....

**हस्ताक्षर**

**सदस्यता सहयोग राशि:**

| | | |
|---|---|---|
| **वार्षिक** | **: 150 /-** | **(व्यक्तिगत)** |
| | **: 175 /-** | **(संस्थागत)** |
| **द्वैवार्षिक** | **: 300 /-** | **(व्यक्तिगत)** |
| | **: 350 /-** | **(संस्थागत)** |
| **चार वर्ष** | **: 500 /-** | **(व्यक्तिगत)** |
| | **: 600 /-** | **(संस्थागत)** |
| **आजीवन** | **: 5,000/-** | **(व्यक्तिगत)** |
| (केवल 15 वर्षों के लिए) | **: 6,000/-** | **(संस्थागत)** |

**(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा कला समय के नाम से उक्त पते पर भेंजे)**

**कार्यालय सम्पर्क :**

**संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग**

जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016
फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

**ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :**

**'कला समय' का बैंक खाता विवरण**

ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स की शाखा **( IFSC : ORBC0100932 )** में **KALA SAMAY** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

- कृपया सदस्यता शुल्क 'कला समय' के नाम भेजें।
- सदस्यता शुल्क प्राप्त होने के बाद अगले अंक से पत्रिका भेजना प्रारम्भ की जावेगी।
- सदस्यता शुल्क निम्न पते पर भेजे:- जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.) 462016

-प्रबंध संपादक

# वे हिन्दुस्तानी तहज़ीब की सुरीली पुकार थे ....

विनय उपाध्याय

आवाजें कभी मरती नहीं। अपने रंग और खुश्बुओं को थामता उनका नाद अनंत में गूंजता रहता है। पंडित जसराज क़ायनात-ए-मौसिक़ी में महकती एक ऐसी ही ठहर गयी-सी याद है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सिरमौर एक ऐसी शख्सियत, जिसने आज़ाद भारत की फिजाओं में अपनी कंठ माधुरी का सैलाब बिखेरते हुए इंसानी उसूलों को आवाज़ दी। विरासत को सच्चा उत्तराधिकार दिया। साधना और तपस्या में निखरे सुरों की आभा लिए हिन्दुस्तानी तहज़ीब का परचम सारी दुनिया में फहराया। गुरुओं की तालीम का मान रखा और अपने शागिर्दों को मेवाती घराने की खूबियों से नवाज़ते हुए सप्त सुरों के गगन मंडल में पंख पसारने का हौसला बख़्शा।

इस नश्वर संसार में पंडित जसराज के देहांत की ख़बर ने निश्चय ही उनके कद्रदानों को हतप्रभ कर दिया है। सत्रह अगस्त उनके महाप्रस्थान की तारीख़ बनी। अंतिम सांस उन्होंने अमेरिका में ली लेकिन नाद के इस नायक की रूह में आखिर तक अपने वतन का राग गूंजता रहा।

ये सच है कि पूर्वजों से मिली विरासत के प्रति मान, श्रद्धा और उसे भावी पीढियों तक हस्तांतरित करने का संकल्प ही सच्चे तपस्वी साधकों की पहचान बनते हैं।एक ऐसी ही वरेण्य विभूति थे- पंडित जसराज।

साधना और सिद्धि की ऐसी मिसाल जहाँ अपनी महान धरोहर के प्रति गहरा आश्वासन तो घर्षण, मिश्रण और प्रदूषण के इस दौर में समरसता को पुकारती आवाज़ का खरापन भी।

यह तेजस्विता ही पंडित जसराज की पूंजी थी जिसे उन्होंने अपने बड़े भाई श्री मनिराम से बहुत छुटपन में हासिल किया था मेवाती घराने के महाराजा जयवंत सिंह वाघेला और उस्ताद गुलाम कादर खान तथा आगरा घराने के स्वामी वल्लभदास के सान्निध्य ने संगीत के गूढ ज्ञान को समझने की नई राह दिखाई। गायिकी के व्याकरण और उसके अध्यात्मिक सौन्दर्य के रहस्यों को आत्मसात कर जब पंडित जसराज दुनिया के सामने प्रकट हुए तो हिन्दुस्तानी राग परम्परा के इतिहास में एक सुनहरा अध्याय जुड़ गया। उनके गृह प्रदेश हरियाणा की सरकार ने उन्हें संगीत मार्तण्ड की उपाधि से विभूषित किया।

फिलहाल उनके निधन की सुर्खी संगीत संसार के लिए एक बड़ा आघात है। दुर्भाग्य से यह शापित समय कला के लिए भी काल बनकर प्रकट हुआ है। एक अजीब अनचाहा सिलसिला तपस्वी विभूतियों और प्रतिभाओं को खोते जाने का बना हुआ है। इस क्रम में पंडितजी का महाप्रयाण संगीत के एक ऋषि की दुखद विदाई है। कर्कशता के इस दौर में उनका कंठ करूणा का संगीत गाता रहा। सौहार्द, शांति और सद्भाव के मंत्र को अपनी सैकड़ों बंदिशों में मुखरित करते हुए इस साधक ने यह साबित किया कि मन की परतों पर जमा अशांति और कटुता का प्रक्षालन संगीत से ही संभव है। उम्र की चढ़ती बेल ने निश्चय ही उनकी देह को थका दिया था और पहले की तरह मंच और महफिलों में रागदारी का रोमांच बिखरना मुमकिन न रहा लेकिन उनकी उठती-गिरती सांसें स्वर के देवता को भजती रही। और यही तपस्या उनके मोक्ष का मार्ग भी बनी।

पद्मविभूषण से लेकर संगीत मार्तण्ड और महाराष्ट्र गौरव जैसी जाने कितनी उपाधियों से वे अलंकृत हुए लेकिन मध्यप्रदेश सरकार के राष्ट्रीय कालिदास सम्मान को पाकर वे अलहदा सी खुशी जाहिर करते। उन्हें गर्व और संतोष इस बात का रहा कि वे संगीत के जिस मेवाती घराने के शागिर्द रहे उसका गोमुख भोपाल है। पंडित जसराज के पिता पं. मोतीराम की नानी ने मेवाती घराने के गुरू उस्ताद घघ्घे नज़ीर खाँ को राखी बांधी थी और उस्ताद के बेटे नत्थूलाल ने पंडितजी के पिता को अपना गंडाबंध शागिर्द बनाया था। इन्हीं स्मृतियों से भरे

पंडित जसराज की हसरत थी कि वे भोपाल में एक संगीत गुरुकुल की स्थापना करें। म.प्र. के संस्कृति महकमे से लेकर मानव संग्रहालय, सांस्कृतिक संस्था अभिनव कला परिषद और ध्रुवपद गुरुकुल संस्थान के बुलावे पर वे संगीत की माधुरी बिखेरने अनेक बार नमूदार हुए। बतौर उद्घोषक पंडितजी को मंच पर कई सभाओं में पुकारने का सौभाग्य मुझे (इस लेखक को) हासिल हुआ और इस दौरान उन जैसी विराट विभूति के बेशुमार जाने-अनजाने पहलुओं को क़रीब से जानने का अवसर भी मिला।

छः बरस तक वे कलाओं के मरकज़ भारत भवन न्यास के अध्यक्ष रहे। भारत भवन और संस्कृति विभाग ने मिलकर पंडितजी पर एकाग्र जसरंगी, का आयोजन किया था जबकि संगीत कला संगम के आमंत्रण पर करीब चार दशक पहले जसराज का यहाँ आना सांस्कृतिक मैत्री की मिसाल बन गया।

सरहद पार के कई मुल्कों की अनेक यात्राएँ, संगीत की अनेक नामी कंपनियों की ओर से जारी अलबम, अनेक सुपातर शिष्यों की पीढियों का निर्माण और विश्व मानव के लिए सद्भाव के संगीत का संदेश भारत की भूमि पर पैदा हुए पंडित जसराज जैसे संगीत रत्न की वो आभा हैं जिसका शताब्दियों तक धुंधलाना नामुमकिन है।

पंडित जसराज की मान्यता रही कि गायन में मीठा कंठ हो तो अच्छा है परन्तु जरूरी नहीं कि इसी से कोई श्रेष्ठ गायक बन जाता है। उस्ताद अब्दुल करीम ख़ाँ साहब, मेरे पिता व चाचा की आवाजें अच्छी थीं। वे श्रेष्ठ गायक भी बने परन्तु फिर भी बाज़ी उस्ताद फैयाज़ ख़ाँ साहब के हाथ रही जबकि आवाज़ इतनी अच्छी नहीं थी। जब उस्ताद रहमत ख़ाँ साहब को बचपन में उस्ताद फैयाज़ ख़ाँ साहब ने गाकर सुनाया तो पहले सुर पर उस्ताद रहमत ख़ाँ साहब बोले–'ठहरो, तुम ईद के बकरे हो क्या, उसे काटते वक्त जैसी आवाज़ वह करता है, वैसी आवाज़ तुम निकालते हो। बाद में वही महान गायक बने। उस्ताद अब्दुल करीम ख़ाँ साहब लोकप्रिय थे लेकिन उनका गाना सुनने वालों का विशिष्ट श्रोता वर्ग था, पंडित कुमार गंधर्व जैसा। उस्ताद फैयाज़ ख़ाँ साहब को बहुत से लोगों ने अलग–अलग स्तरों पर सुना, पंडित भीमसेन जोशी की तरह। बस फ़र्क इतना था कि समय के साथ उस्ताद फैयाज़ ख़ाँ साहब का गाना समाप्त हो गया। परन्तु उस्ताद अब्दुल क़रीम ख़ाँ साहब का गाना आज भी सदाबहार है।

कालिदास सम्मान की घोषणा के बाद एक समाचार पत्र को दिये साक्षात्कार में उन्होंने कहा था कि मैं अपने रसिकों के प्रति उदार हूँ और बीमार प्रशंसकों के पास जाकर नि:शुल्क गाता हूँ। ऐसा कर मुझे बड़ा ही आत्मिक संतोष मिलता है। मेरे पिता और गुरू ने यह सीख दी। स्मृति से उलझी एक घटना सुनाकर पंडित जसराज ने उक्त तथ्य की पुष्टि की– एक बार जब मैं हैदराबाद में अपना कार्यक्रम दे रहा था, तब एक महिला मुझे आकर मिली। उसने बताया कि उसके पति को मेरा गाना बेहद पसंद है लेकिन वे कैंसर से पीड़ित है। इसलिए आज आ नहीं सके। मुझे दूसरे दिन सुबह लौटना था। मैं उसी समय उस बीमार प्रशंसक के घर जाकर गाना सुना आया।

ऐसा ही एक मार्मिक किस्सा और। किसी महिला ने टाटा कैंसर अस्पताल से फोन पर बताया कि उनका बेटा वहाँ भर्ती है और मेरा गाना सुनना चाहता है। मैं मुम्बई लौटने पर उसे अस्पताल में अपने स्वर मंडल के साथ गाना सुनाने पहुँचा। मैंने दरबारी गाया वह 18–19 साल का लड़का था। उसे देख मैं बेहद बेचैन हो गया। दरबारी के लिये स्वर साध कर मैंने 30–40 मिनिट गाया। तब उसने निरंजनी नारायणी गाने का आग्रह किया। उसके चेहरे पर संतोष व खुशी देखकर मुझे इतना आनन्द मिला कि मैंने तुरन्त वह भी गाया। तब वह लड़का उठा, उसने मेरे पैर छुए और कहा– मेरा जीवन सफल हो गया। अब मुझे मौत आई भी तो ग़म न होगा।

– कला समीक्षा, मीडिया कर्मी, उद्घघोषक
ई–7, एम.एस.–131, अरेरा कालोनी भोपाल–462016
मो. 9826392428


## पर्यटन विकास समिति, झालावाड़ (राज.)

**(संस्कृति, इतिहास एवं समाज सेवा के प्रति समर्पित)**

**गतिविधियाँ**

1. **झालावाड़ स्थापना दिवस प्रति वर्ष 8अप्रेल, झालावाड़ गौरव सम्मान सहित 15 अन्य विशिष्ट प्रतिभा सम्मान।**
2. **भवानीनाट्यशाला स्थापना दिवस– 16जुलाई / रैन बसेरा स्थापना दिवस – 29 अगस्त / झालावाड़ संग्रहालय स्थापना दिवस– 1 जून / गागरोन विश्व धरोहर दिवस – 21 जून के भव्य आयोजन, संगोष्ठी एवं प्रतिभा सम्मान के आयोजन।**

**दिनेश सक्सेना** – अध्यक्ष
**जितेन्द्र जैकी** – महासचिव
**ओम पाठक** – संयोजक
**ललित शर्मा** – वरिष्ठ उपाध्यक्ष

**भगवती प्रसाद मेहरा, कन्हैयालाल कश्यप, अलीम बेग, लक्ष्मीकान्त शर्मा, डॉ. विक्रम टांक, लक्ष्मीकान्त पहाड़िया अभय सिंह सिसोदिया, सत्यप्रकाश शर्मा**

**NIDAAN INSTITUTE OF REHABILITATION AND TRAINING**

**NIDAAN INCLUSIVE SCHOOL**
**Run By: Nidaan Sewa Samiti**

NIDAAN We Care..

**ALL FACILITIES UNDER ONE ROOF FOR (ID/LD/ADHD/ASD/MULTIPLE DISABILITIES/MENTAL ILLNESS / CP)**

- Physiotherapy
- Occupational Therapy
- Speech Therapy
- Multi-Sensory Clinic
- Activity for Daily Living
- Life Skills
- Academics
- Music & Dance
- Art & Craft
- Indoor & Outdoor Games
- Theatre for all Children
- Yoga & Meditation for all
- Pre-vocational Training
- Vocational Training
- Computer Literacy Programme
- Personality Development
- Psycho-Metric Testing for all

**TEAM OF TRAINED THERAPISTS EDUCATOR & CARE-GIVER**

**B / 291, B Sector, Shahpura, Bhopal, Madhya Pradesh 462039**
**Call: 9826934500 | 9826398520 | 0755-4252832**
**URL: www.nidaann.com Email: nirtnidaan@gmail.com**

संस्मरण...

# विरासत का 'नारायण'

-डॉ. मुकेश कुमार मिश्र

किसी व्यक्ति का नाम ही उसका आचरण बन जाय, ऐसा आज के दौर में विरले ही देखा जाता है। कि भारतीय परंपरा में नामकरण होता ही इसीलिए था। व्यक्ति नाम के अनुरूप जीवन में आगे बढ़े। मेरी अब तक की आयु में जितने लोग भी मिले हैं, उनमें कुछ लोग अपने नाम के अनुरूप न केवल दिखते हैं बल्कि वैसा ही जीवन जीते हैं। डॉ. नारायण व्यास भी उन चंद लोगों में से हैं जिनको मैंने नाम के अनुरूप ही जीवन को जीते हुए देखा है। वे न केवल नाम से 'नारायण' हैं अपितु हमारी धरोहरों के लिए प्रत्यक्ष और साक्षात् भी 'नारायण' ही हैं।

बात 2011 की है, जब मैं उनसे पहली बार मिला था। यह भी एक संयोग ही था कि दिल्ली के एक मित्र ने मुझसे दिल्ली में कहा कि भोपाल चलना है, श्री नारायण व्यास से मिलने। मैं भी सहसा ही तैयार हो गया। हम लोग रात की ट्रेन से चलकर सुबह भोपाल पहुँच गए। मैंने सोचा कि मित्र ने हमारे रुकने के लिए किसी होटल में व्यवस्था की होगी या स्टेशन पर। ही शायद करेंगे। लेकिन वह तो ऑटो रिक्शा से सीधे पहुँच गए डॉ नारायण व्यास जी के घर पर मैं हैरत में था कि एक अनजान व्यक्ति के स्वागत के लिए डॉ व्यास और उनकी पत्नी हृदय से प्रतीक्षारत थे। उन्होंने अपने घर में हमें रखा और स्वादिष्ट नाश्ता कराया। फिर दिन का भोजन भी हुआ। खूब बातें हुईं। अनेक प्रकार की चर्चाओं का दौर चला। इस दिन भर की मुलाकात में मैं यह समझ गया कि डॉ नारायण व्यास ने अपना पूरा जीवन हमारी संस्कृति और उसकी विरासत को समर्पित कर दिया है। उनके पास हर प्रकार की धरोहर का संकलन है। कुल मिलाकर वह अपने आप में एक संग्रहालय हैं। उनका घर एक अनूठे संग्रहालय में तब्दील हो चुका है।

वह दिन और फिर लगभग पाँच साल बाद फिर मेरी उनसे भेंट हुई जब मैं 2016 में भोपाल आ गया। मैंने अचानक एक दिन उन्हें फोन किया और उन्होंने झट से पहचान लिया। फिर पता समझ कर मैं उनके घर पहुंच गया। इस बार भी उन्होंने हमारा उसी आत्मीयता से स्वागत किया। इस तरह एक सिलसिला चल पड़ा। चलते फिरते ज्ञानकोश बन चुके नारायण जी को आप जब भी याद करें वे सहज ही सुलभ हो जाते हैं।

उनकी सहजता में जो सदाशयता है, वह उन्हें अद्भुत व्यक्तित्व का धनी बनाती है और विरले लोगों की श्रेणी में शामिल करती है। आयु में बहुत छोटा होने के कारण उनके विषय में अधिक कहना सूरज को दीपक दिखाने जैसा होगा।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में लंबे समय तक सेवाएँ देने के दौरान जो उन्होंने कार्य किये हैं, उसकी चर्चा तो बहुत हुई है। इस क्रम में यह चर्चा भी अत्यंत प्रासंगिक है कि डॉ नारायण व्यास ने नौकरी के अतिरिक्त क्या योगदान दिया है। देश व दुनिया में जो लोग पुरातत्व और विरासत के क्षेत्र में सक्रिय हैं उन्हें भली भाँति ज्ञात है कि डॉ व्यास ने निजी जीवन में पुरातत्व और विरासत को किस गहराई से आत्मसात किया है। इसके अतिरिक्त देश के सामान्य जनमानस और विदेशी शोधकर्ताओं को भी उनके जुनून की जानकारी है। स्कूलों में घूम घूम कर विद्यार्थियों में धरोहर की समझ विकसित करने का काम हो या युवाओं के लिए पुरावशेषों की प्रदर्शनी लगाने का अभियान, डॉ नारायण को विरासत के संरक्षण के प्रति उनके समर्पण की उत्कंठा को सिद्ध करती है। नौकरी से अवकाश के बाद वह लगातार पुरावशेषों के संरक्षण के लिए सक्रिय हैं।

प्राचीन काल के शैल चित्रों की थाह लेने जब भारत की धरती पर कोई भी विदेशी शोधकर्ता कदम रखता है तो वह नारायण की व्यास पीठिका से होकर ही गुजरता है। इसका कारण यह है कि शैल चित्रों की दुनिया में जो कदम उन्होंने विष्णुश्रीधर वाकणकर की उंगली पकड़कर रखा था, उसे आज तक थामे हुए हैं। वाकणकर जी आज दुनिया में नहीं हैं लेकिन उनकी स्मृतियों को सँजोकर डॉ व्यास उनके कार्यों को लगातार जीवन्ततापूर्ण ढंग से कर रहे हैं। विश्व धरोहर भीमबैठका की सभी गुफाओं को जितना डॉ नारायण समझते हैं उतना ही वहाँ की गुफाएँ उन्हें समझती हैं। क्योंकि विगत पाँच दशकों से देश दुनिया से वहाँ पहुंचे लाखों लोगों से उन्होंने उनका आत्मीय परिचय कराया है। मुझे भी उनके साथ वहाँ जाने का और समय बिताने का अवसर मिला है, इसलिए मैं यह पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि भीमबैठका की गुफाओं और डॉ व्यास के बीच एक अटूट रिश्ता है, जिसको वे और वहाँ की दीवारें ही समझ सकती हैं।

भोपाल, रायसेन और विदिशा के पहाड़ी जंगलों में अपने निजी संसाधनों से अनेक शैल चित्रों की खोज करके उन्होंने इस रिश्ते का विस्तार किया है। सच यह है कि पाषाणकालीन हमारे पूर्वजों की स्मृतियों को सँजोने में उन्होंने अपने अस्तित्व को विलीन कर दिया है। सुबह की सैर पर भी वे रेत के ढेरों में पूर्वजों के अवशेष निकाल लाते हैं और बड़े आत्मीयता से घर के संग्रहालय में उसे पितरों की तरह बिठा देते हैं।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में उनकी दीर्घकालिक भूमिका आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा पाठ होगी। डॉ नारायण व्यास को अल्प समय में जितना भी मैंने देखा और समझा है, उसमें यह कह सकता हूँ कि वे पूर्वजों के पुनरुच्चारण के पीठ पर बैठे व्यास भी हैं और विरासत को संरक्षित करने वाले 'नारायण' भी उनके दीर्घायु की कामना के साथ।

निदेशक दत्तोपन्त ठेंगड़ी,
शोध संस्थान भोपाल, म.प्र.

■

संस्मरण...

# धरोहर प्रेमी नारायण व्यास

-प्रेमशंकर शुक्ल

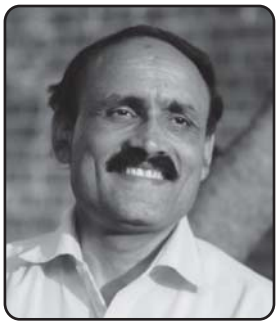

नारायण व्यास जी हमारी धरोहरों के अथाह प्रेमी पुरातत्व वेत्ता हैं। सादगी पसन्द व्यास जी वाकणकर जी के सुयोग्य शिष्य और समानधर्मा हैं। व्यास जी से मध्यप्रदेश के पुरातात्विक धरोहरों को मुझे जानने-समझने का मौका मिला है। वे चित्रकार हैं-रेखांकनों के चितेरे गुणी व्यक्ति हैं। भीमबैठका को समझने में मुझे उनसे बहुत मदद मिलती रही है।

भोपाल में रहते हुए आसपास के क्षेत्रों में उन्होंने पुरातत्व की दृष्टि से जो काम किया है वह बड़े महत्व का है। भोजपुर मंदिर, भीमबैठका, साँची, विदिशा, रायसेन की अनेक जगहों की पुरातात्विक बेहतरीन जानकारी के हमारे स्रोत नारायण व्यास जी ही हैं। नेक इंसान होने के साथ व्यास जी लगातार सक्रिय व्यक्तित्व हैं। अपने काम में समर्पित रहना और पूरे मनोयोग से अपने दायित्वों को पूरा करना व्यास जी का बुनियादी स्वभाव है। वे हमारे समय के कर्मठ शख्सियत हैं, पुरावशेषों की उनकी जानकारी और संलग्नता हमें अचरज से भरती है।

कला-संस्कृति के क्षेत्र में नारायण व्यास जी बेहद सम्मानित नाम हैं। मैं उन्हें पुरातात्विक ज्ञान का विश्वसनीय विशेषज्ञ मानता हूँ। व्यास जी जब कोई तथ्य रखते हैं तो पहले उसे काफी जाँच-परख लेते हैं यह उनका स्वभाव ही है जो हम सबके मन में व्यास जी के प्रति बहुत आदर भरता है।

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
भारत भवन न्यास भोपाल म.प्र.

# खण्डहर में खोज करती यह रहस्मयी आँखें

-शशिकांत लिमये

क्रांति किसे कहते हैं, यह पूछे जाने पर लोग कहेंगे कि जहां सत्ता या समाज में आमूल चूल परिवर्तन हो उसे क्रांति कहते हैं, परन्तु यह क्रांति का भौतिक स्वरूप है। समयानुसार काल चक्र का पहिया घूमता रहेगा और मानव अस्तित्व धरती पर बना रहेगा। सत्ताऐं बदलती रहेंगी और उनमें कुछ योग्य शासक ही मानव के मस्तिष्क पटल पर रच बस जायेंगे। परन्तु संरचनात्मक ढांचे की परम्परायें कैसी है, कब कैसी थी, किसने उन्हें चालना दी यह सब जानना किसी के बस की बात नहीं। परन्तु कोई तो है जो इस उधेड़ बुन में अपना जीवन होम कर रहा है। निस्वार्थ भाव से अपने अतीत के सौंदर्य को खण्डहरों में खोज कर बयान करते वह कभी भी थकान महसूस नहीं करते। ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखना आसान नहीं है फिर भी प्रयास करता हूँ।

मैं बात कर रहा हूँ, पुरातत्वविद् डॉ. नारायण व्यास की। जो जीवन के 72 वे पड़ाव पर होते हुए आज भी उनमें बालकों जैसी सुकुमारिता, ऋषियों जैसा अदम्य कद और चिंतन की जिजीविषा मुझे देखने को मिली जिससे प्रभावित होकर आज मैं उनके विषय में लिखने का प्रयास कर रहा हूँ।

डॉ. नारायण व्यास से मेरी प्रथम मुलाकात वर्ष 1999 में हुई। जब हम प्राच्य निकेतन के शैक्षणिक प्रवास पर सतधारा और सांची के साथ उदयपुर और महामाया मंदिर ग्यासपुर तक गये थे। थोड़े शब्दों में ऐतिहासिक स्मारकों का वर्णन करने की कला से उस समय मैं प्रभावित हुआ। परन्तु इस सच के बाद व्यस्तता और शासकीय और अशासकीय दायित्वों के चलते हमारी वह यात्रा उसी दिन समाप्त हुई। सघन अध्ययन और रूचिकर विषय होने के कारण मैं अच्छे नम्बरों से पास हुआ। रिसर्च करना मेरा जुनून है पर उत्तरदायित्व नहीं। कहते हैं जुनून एक पागल पन की तरह होता है, जो मन मस्तिष्क में उठी संकल्पनाओं को साकार करने की दीवानगी को बल देता है। जुनून के नशे का आदी होने के कारण ही शायद मेरा साक्षात्कार डॉ. नारायण व्यास से हुआ, पहाड़ियों कन्दराओं और किलो के रहस्य को जानने की इच्छा का संचार मेरे पिताजी द्वारा दिया था और डॉ. शिवदत्त शर्मा पुरात्वविद् के सान्निध्य से इसे बल भी मिला था। पुरातत्व में स्नातकोत्तर के बाद उसी में रम जाना था, क्योंकि अपने शोध के कारण सामाजिक रूप से मैं थोड़ा बहुत स्वतंत्र शोधकर्ता के रूप में भी पहचाना जाने लगा था। मेरी जिज्ञासा ने ही मुझे व्यास जी के निकट ला दिया था। सिलसिला चलता रहा और हम एक नये रिश्ते में बंध से गये, निरंतर

सान्निध्य और चर्चाओं के बीच मुझे उनकी गहराई को समझने का भी अवसर मिला।

डॉ. व्यास से मैंने पुरातत्व की बारीकियाँ और इतिहास संकलन में पुरातत्व के योगदान का महत्व समझा और मुझे अपने निरंतर खोज कार्य में उनका मार्गदर्शन भी मिलने लगा। जिसके कारण मेरा इतिहास संबंधी ज्ञान विस्तृत हुआ। कहीं न कहीं हमारी गुरू शिष्य परम्परा की राह भी जुड़ रही थी क्योंकि जहां एक सेनानी के रूप में वह सेमिनार आदि में जाते थे वही इतिहास के एक सैनिक के रूप में मुझे भी अपने साथ ले जाते और मेरा परिचय देकर मेरे लिये भी बोलने या व्याख्यान देने का समय जरूर मांग लेते। यह वास्तव में एक आदर्श गुरू की परंपरा का निर्वहन कहने में मैं संकोच नहीं करूंगा। यदि गुरू अपने शिष्य की गरिमा और योग्यता का सही आंकलन कर लेता है तो उसे स्थापित करने में भी उसका पूरा सहयोग करता है।

डॉ. नारायण व्यास जी ने अपने गुरू स्व. श्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर जी के मार्गदर्शन में इतिहास और पुरातत्व को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। इसी में वह पूरी तरह से रम गये। शासकीय सेवा में रहकर भी उन्होंने पुरातत्व की सेवा की एवं निरंतर अपने गुरू श्री वाकणकर जी के मार्गदर्शन प्रस्थापित करने का कार्य कर रहे है। उनका घर पुरातत्व पेपर कटिंग, ड्राईंग्स और पुरातत्व की विविध वस्तुओं का एक बड़ा संग्रलालय बन चुका है। जो कि एक अप्रतीम और दुर्लभ संग्रह है। जिसमें रॉक पेन्टिंग्स, पुरानी पुस्तकें, पंचाग, आदि मानव के हथियार और मोनुमेन्टस की फोटोग्राफी है। जिसे लिमका बुक ऑफ रिकार्ड ने बहुमूल्य माना है और उन्हें अपने परिवार का सदस्य बनाया है। उनकी निरन्तरता और कार्य के प्रति निष्पक्ष और निस्वार्थ सेवा भावना ने विदेश में बसे पुरातत्वविदों को भी आकर्षित किया है। स्पेन सरकार ने भी उन्हें उनके पुरातात्विक योगदान के लिये सराहा है एवं पुरस्कृत किया है।

सार्थक व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन का पर्याप्त है एक दूसरे की

मदद करना, डॉ. व्यास इस कला में निपुण है इसलिये मेरा मानना है कि डॉ. व्यास का जीवन एक आदर्श जीवन है जो सदैव व्यक्ति को अपने जुनून के लिये गतिमान करता है। यही आदर्श उन्हें सभी का चहेता भी बनाता है।

मुझे बड़ा ही गर्व का अनुभव होता है जब में कहीं ना कहीं किसी भी रूप में डॉ. व्यास से जुड़ा पाता हूँ। वह मेरे लिये आदर्श है, क्योंकि जिस प्यार की चाहत में, हमेशा भटकाव मिला शायद उसके थमने का स्थान डॉ. नारायण व्यास के पास ही था।

मैं उनके चिरंजीव होने की अभिलाषा रखता हूँ। यह शरीर नश्वर है परन्तु अपने कार्यों के कारण और सरलता के कारण डॉ. व्यास दीर्घ काल तक हमारे साथ रहें और उनका स्नेह भरा वरद हस्त हमारे माथे पर बना रहे।

– स्वतंत्र शोधकर्ता, सारांश रंग शिविर,
संप्रति – 105 डी.के. हनी होम्स, कोलार रोड, भोपाल

# पुरातत्व मर्मज्ञ– डॉ. नारायण व्यास

**– श्रीमती कला मोहन**

डॉ. नारायण व्यास का परिचय इनकी दत्तक पुत्री हिना के माध्यम से हुआ। हिना हमारे यहां बतौर शिक्षिका निदान में बच्चों को शिक्षण प्रदान करती है।

वर्ष में कोई दिवस या त्यौहार हो डॉ. नारायण व्यास उस दिवस या त्यौहार को अपनी चित्रकला या पेपर कटिंग या क्ले (मिट्टी) आर्ट द्वारा जीवन्त बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ते, हमारे निदान के बच्चे उसको बनाने में, उसकी प्रतिकृति करने में उत्साहित रहते हैं। हम उनके आभारी हैं वो हमारे बच्चों के लिए कुछ क्रिएटिव करके पोस्ट करते हैं।

डॉ. नारायण व्यास एक पुरातत्व वेत्ता हैं, ये उनके घर के संग्रहालय को देखकर जाना, हर छोटी–छोटी चीजें जैसे पुरातन सिक्के, आदिमानव के औजार, ईंटे, डाकटिकट, गणेशजी के असख्य चित्र जो कि शादी कार्ड से एकत्रित किए हैं। जीवाश्म और पुरातन पात्र भी संग्रहित हैं।

डॉ. नारायण बहुआयामी व्यक्तित्व का नाम है, वे बहुत अच्छे आर्टिस्ट है। निकट भविष्य में हम उनके पुरातत्व के ज्ञान को अपने बच्चों के लिए कार्यशाला द्वारा प्रदर्शित करेंगे जिससे बच्चे छूकर, देखकर ज्ञान प्राप्त कर सके। हम ऐसी विभूति को आए दिन अखबार, पत्र–पत्रिकाओं में देखते हैं। आशा है भविष्य में हमें उनका मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

अध्यक्ष निदान संस्था,
भोपाल म.प्र

संस्मरण...

# 'वाकणकर रॉक' डॉ. नारायण व्यास की अद्‌भुत खोज का रोचक प्रसंग

**-डॉ. मुक्ति पाराशर**

कला समय के हेतु साक्षात्कार लेने के दौरान प्रसंगवश जब प्रख्यात पुरावेत्ता डॉ. नारायणजी व्यास से कुछ रोचक वार्ता हुई तब उन्होंने विशेष रूप से बताया कि - भीम बैठका की खोज डॉ. वाकणकर ने 23 मार्च 1957 ई. में की थी। 1972 ई. में उन्होंने जब वहां उत्खनन आरम्भ किया तब मैं स्वयं उनका सहायक था और मुझे उस दौरान फील्ड में उनके साथ बहुत कुछ सीखने को मिला। उनके साकेतवास के पश्चात् मैं उनके पद्‌चिन्हों पर चलने लगा समय-समय पर मैं 'भीम बैठका' जाता रहा मुझे लगा शायद ये गुफाएं कुछ और मुझे बताना, कहना चाहती है अत: वहां अक्सर जाने के कारण मैं प्रत्येक गुफा को सुक्ष्मता से देखने लगा था मुझे लगने लगा कि गुफा में कई चट्टानों के आकार वराह, वानर, वृषभ जैसे है। वर्ष 2019 ई. में जब मैं वहां गया तब 19 से 25 नवम्बर के मध्य का ऐसा सप्ताह था जिसे 'विश्व धरोहर सप्ताह' माना गया था मुझे स्मरण है - दोपहर का समय था, मैं गुफाओं की चट्टानों को बड़े ध्यान से देख ही रहा था कि अचानक मेरी नजर एक विशेष चट्टान खण्ड पर आ टिकी। पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ, परन्तु ठिठक कर कुछ सोचने, मंथन करने के बाद विश्वास हो गया कि यहां एक कारण रहा जिसकी वजह से मुझे बार-बार यहां आना पड़ता था दरअसल यह चट्टान खण्ड हूबहू वाकणकर जी मुखाकृति जैसी थी मन आल्हादित हो गया। चट्टान में नासिका, भाल, शीश, उज्जवल ललाट, ढोड़ी का रूप बिल्कुल वाकणकरजी के मुख के सदृश्य था मैंने तुरन्त आवाज देकर सभी को बुलाया और उन्हें वह चट्टान दिखाकर पूरा वाक्या बताया तो यह एक संयोग था कि उस समय विश्व धरोहर सप्ताह चल रहा था और वाकणकरजी ने भीम बैठका की खोज की थी और मैंने वहां ऐसी चट्टान की खोज की जो वाकणकरजी की मुखाकृति के सदृश्य थी सभी ने मेरी इस खोज को एकसाथ एक स्वर में सहमति दी और उसी समय से भीम बैठका की यह चट्टान 'वाकणकर रॉक' के नाम से देश देशान्तर में प्रसिद्ध हो गयी। यह मेरे जीवन का एक अद्भुत और रोचक प्रसंग है। चर्चा में यहां यह भी डॉ. व्यास जी ने महत्वपूर्ण बात बताई है कि प्रति दिन दोपहर 1 से 4 बजे के मध्य इस चट्टान पर जब सूर्य की सीधी किरणे पड़ती है तब उसमें वाकणकरजी के सम्पूर्ण मुखमण्डल की भंगिमाएं दृष्टिगोचर होती है। (जैसा की साक्षात्कार प्रसंग के दौरान व्यासजी ने लेखिका को बताया)।

- कला इतिहासकार, म.नं. 164, आर्य समाज रोड़, कोटा (राज.)

# भारतीय पुरातत्व के क्षेत्र में कार्य करने वाला
# चमकता सितारा - डॉ. नारायण व्यास

**-ओमप्रकाश शर्मा कुम्भी**

यूं तो भारत वर्ष में पद्‌मश्री वाकणकर जी साहब के बाद, बहुत ढेरों पुरा अन्वेषी हुये, किन्तु उनमें डॉ. नारायण व्यास ही मेरे दिल के सबसे प्रिय पुरातत्ववेत्ता हैं, वह सिर्फ पुरातत्ववेत्ता ही नहीं, बल्कि उससे बढ़कर बहुत नेक इंसान भी हैं, सरल, सौम्य, मृदुभाषी, हंसमुख, ज्ञान के घनी, शांत स्वभाव, मिलनसार ना जाने क्या-क्या गुण हैं उनमें, उनके साथ मेरी प्रथम मुलाकात उस समय हुई जब बूंदी (राजस्थान) में श्री श्याम सुंदर बिस्सा जी IAS(DM) बूंदी कलेक्टर थे, हम सब बूंदी जिले के नमाणा के ताम्र युगीन पुरास्थल एवं गरड़दा रॉक पेन्टिग साईट पर गये थे हमने पुरातत्व के बहुत से क्षेत्रों के बारे में चर्चाऐं की उनको बूंदी क्षेत्र की पुरा संस्कृति में बहुत रूची है, मुझे जब-जब कुछ जानने की समझने की आवश्यकता हुई उन्होंने तब-तब मेरा मार्गदर्शन भी किया हम वर्ष 2011-2012 में इंदिरा गांधी नेशनल सेन्टर फॉर आर्टस में हुई अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में कई दिन तक साथ रहे उज्जैन में हुई श्री वाकणकर साहिब की सौवीं जयन्ती पर भी हम साथ रहे इनके अतिरिक्त भी हम कई अवसरों पर साथ रहे एवं दूरभाष पर भी हमारी, सिर्फ पुरातत्व पर ही चर्चाऐं होती रही है, डॉ. व्यास जी का जीवन ही पुरा संस्कृति की खोज करने का अनवरत मिशन है, श्री व्यास जी का नाम ही काफी है भारत में कोई विरला ही आर्किल्योजिस्ट डॉ. व्यास जी का नाम नहीं जानता होगा नारायण व्यास नाम ही काफी है उनके द्वारा की गई खोजे भारतीय इतिहास में मील का पत्थर है जिसे कोई हिला नहीं सकता, उनकी प्रेरणा से नई पीढ़ी बहुत कुछ सीख रही है यह उनकी महानता है वह बिना कुछ छिपाये समस्त ज्ञान भावी पीढ़ी को सिखा रहे हैं जबकि ऐसा बहुत कम लोग ही कर पाते हैं पुरातत्व एक ऐसा विषय है जिससे कष्ट बहुत है जैसे कि धूप, गर्मी, बरसात, उमस, जंगल, वन्यजीव, पहाड़, नदियां, घाटियां, भूख-प्यास, मीलों पैदल चलना, वह भी बिना साधन-संसाधनों के बड़ा चैलेजिंग काम होता है, उससे भी बड़ा होता है निस्वार्थ देशहित, और इसी देश हित को, ध्येय बनाकर सत्तर पार होने के बावजूद एक युवा की भांति संस्कृति के पोषक हैं डॉ. नारायण व्यास। मैं इनके उज्जवल भविष्य एवं इनके जुझारूपन की भगवान से कामना करता हूँ।

-43, न्यू कॉलोनी, बूंदी राजस्थान, मो. 9828404527

संस्मरण...

# मालवी सहजता के धनी - डॉ. नारायण व्यास

-कैलाश चन्द्र धनश्याम पाण्डेय

डॉ. नारायण व्यास पुरातत्व के प्रति समर्पण, विषय की गहनता का अध्ययन, सहजता, सरलता के सैकड़ों प्रशंसकों में मैं भी एक हूं और स्वीकार करता हूं कि जिस मिट्टी के वे बने है वह किसी अन्य पुरावेत्ता में प्रयोग नहीं हुई है।

पद्मश्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर की परम्परा के सहज उत्तराधिकारी के रूप में उनके सहस्त्र शिष्यों में वे सर्वप्रथम है। ऐसा मैं इसलिये कह पा रहा हूं क्योंकि मैं उन्हें पिछले चालीस वर्षों के उन दिनों से जानता हूं जब मैं पुरातत्व विभाग में दस रू. रोज की दर पर मजदूरी किया करता था।

दंगवाड़ा उत्खनन 1979-1980 में जब व्यासजी पधारे तो शुद्ध मालवी में हमारा परिचय हुआ था। रूनीजा उत्खनन के समय आप भोपाल में ही पदस्थ थे। रूनीजा उत्खनन के समापन में बोले महाराज, आगे कई करोगा ? भोपाल अई जाजो, बेसनगर में खुदाई चलेगा। उन दिनों मैं डबल एम.ए, बी.एड. था! पिताजी पाँचवी पीढ़ी में शिक्षक थे पर मेरी रूचि शिक्षकीय कार्य में न थी, अत: व्यासजी के पास ज्ञान ग्रहण करने की दृष्टि से भोपाल जा पहुँचा। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के उन दिनों दो ऑफिस थे। व्यासजी साँची जा रहे थे, ऑफिस के नीचे खड़े मिले। मैं साथ हो लिया। उन दिनों विदिशा के पास डेबरी क्लीरयेन्स का कार्य चल रहा था इस कार्य के निरीक्षक श्री धर्मपाल जाट नामक एक नवयुवक थे।

श्री व्यास उज्जैन हिन्दी भाषी क्षेत्र के होने के बावजूद पहले ऐसे विद्यार्थी थे जो स्कूल ऑफ आर्कियोलॉजी हेतु चयनित हुए थे। केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग में पदस्थ होने के कारण अति सम्मानित थे। श्री व्यास अपने कार्यक्षेत्र से अवकाश लेकर उज्जैन आते तो भी वे घर पर आमोद-प्रमोद की अपेक्षा अवन्तिका के अतीत की खोज में जुट जाते।

अवन्तिका या उज्जैन ही संभवत: मध्यप्रदेश की एकमात्र नगरी है जिस पर सर्वाधिक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। इसके गर्भ से हजारों सिक्के, मृणमुद्राएँ, टेराकोटा, अभिलेख ताम्रपत्र न जाने कितने ही इतिहास जानने के स्रोत प्रकाश में आ चुके है, परन्तु जो कोई भी कुछ खोजने की इच्छा से इसकी विधिकाओं -खण्हरों में चला जाता है वह खाली नहीं लौटता। मुझे याद है 1979-1980 की बरसात का मौसम था। डॉ. व्यास एवं कागज के पुर्जे पर कुछ एक अभिलेखों की नेत्रप्रत पेंसिल से तैयार कर ले आए थे गुरूजी ने तत्काल बांचकर व्यासजी को ढेरों बधाईयाँ दे डाली। ये फर्शियाँ किसी स्तूप के प्रदक्षिणा पथ में जमी थी इन पर इनके दानदाताओं की तरफ से ये अभिलेख खुदवाये गये थे। वर्षाकाल में इन शिलाओं को ईंटों के भट्टों के क्षेत्र से परिवहन कर कीर्ति मंदिर, वि.वि. उज्जैन तक लाना बहुत कठिन था, पर श्री व्यास ने अपने समर्पित स्वभाव के कारण इस कार्य को संपन्न किया। आज ये अभिलेख अवन्तिका में दूसरी शताब्दी में बौद्ध धर्म की उपस्थिति के प्रमाण है।

वेसनगर उत्खनन का प्रारंभ डॉ एम. डी. खरे के मार्गदर्शन में प्रारंभ हुआ था मैंने डॉ. खरे के साथ बुरहानपुर से कार्य 1972 से प्रारंभ किया था। वे $W^3$ के परम भक्त थे। डेबरी क्लीयरेन्स के नाम से चल रहे प्रोजेक्ट पर मुझे व्यासजी भोपाल से ट्रेन से पहले सांची ले गये थे। उन्होंने मुझे सांची के स्तूपों का जो अवलोकन कराया, वह आज भी स्मृति में है। सांची के महास्तूप के द्वारों पर जो जातक कथाओं का उत्कीर्णन किया गया है वह हाथी दांत के कारीगरों द्वारा पत्थरों पर खोदा गया है। इन उत्कीर्णनों में ढेर सारे प्रतीकों के साथ अनेक जातक कथाएँ इस तरह उत्कीर्ण की गयी है कि महास्तूप का अवलोकन करने में ही तीन घण्टे बीत गये। श्री व्यास के अवलोकन कराने की अपनी विधि थी। सांची में देश, प्रदेश व विश्व के पर्यटक आते रहते है, पर उन्होंने छड़ी विधि से अवलोकन कराने वाला अधिकारी शायद ही देखा हो डॉ. व्यास अवलोकन कराते समय अपने हाथ में एक पाइंटर रखते थे, उससे महत्वपूर्ण दृश्यों की और संकेत करते थे। इस दिन सोमवार का अवकाश था, अत: स्मारक पर पर्यटकों की भीड़-भाड़ नहीं थी। हमने एक-एक स्मारक देखा

अवलोकन के दौरान श्री गोपालन (फोटोग्राफर) को साहब की खबर मिल गयी। बस गले में नया कैमरा लटका कर चला आया। व्यासजी विभागीय कैमरामैन की आदतों को जानते थे, अत: उन्होंने उसे मुँह नहीं लगाया। गोपालन खुद बोला सर ये कैमरा 20 हजार का है। तीन महिने पहिले ही जर्मनी से आया है। मैं आप का फोटो निकालता। फिर फोटो निकालने का दौर चला। ऐसे खड़े रहो, इधर देखो, मुस्कराओ आदि-आदि। जब 35 फोटो खिंच गए और गोपालन रूका नहीं तो मुझे शक हो गया। मेरे पास भी आशाय पेन्टेक्स कैमरा था। उन दिनों विदेशी कलर फिल्में आती थी और 32-35 फोटो आसानी से खिंचते थे।

मुझे अपनी औकात का ध्यान न रहा और मैने गोपालन को अंग्रेजी में फटकारा गोपालन जादा पढ़ा-लिखा न था पर दक्षिण भारत का निवासी होने के

कारण अंग्रेजी मैं रौब झाड़ता था। मैं भी डॉ. डेनियल मिलर (लंदन) तथा एरविन न्यायमर के साथ काम कर चुका था अत: उन दिनों पुरातत्व विभाग के संचालक एम.डी. खरे से तक वार्तालाप अंग्रेजी में करता था। शाम को व्यासजी ने मुझे समझाया, पाण्डेय जी 'बोलो कम' मुझे मालुम था कि कैमरे में रोल नही है पर मैं चुप क्यों रहा ? फोटोग्राफर ,साहब लोगों के मुँह लगे होते हैं। आगे चलकर मुझे अपने अधिक बोलने के कारण गोपालन ने बहु प्रचारित कर दिया मेरा अधिकारी धर्मपाल न तो उत्खनन के बारें में कुछ जानता था न उसे अंग्रेजी आती थी पर था साहब जनता शासन चौधरी चरणसिंह के प्रताप की कृपा का सदैव गुणगान करता रहता था।

उसने मुझे उसकी छत्री पकड़कर चलने का काम दिया था। वह उदयगिरि की पहाड़ी पर बने विभागीय बंगले में रहता और मुझसे नहाने के लिए चार बाल्टियां पानी मंगवाता। उदयगिरि के उस पहाड़ी बंगले तक मुझे चढ़ने के लिए 130 सिढ़ियां-चढ़नी उतरनी पड़ती थी। प्रतिदिन 1040 बार चढंना-उतरना तथा विदिशा से उदयगिरि 16 कि.मी जाने तक आने में मैरा बदन बन गया। ईश्वर की अनुकंपा से मैं पॉवों से जन्मजात विकलांग भी हूँ।

बेसनगर उत्खनन के दौरान हम विदिशा के बीजामण्डल के चर्चिका देवी के मंदिर में रहते थे यहाँ मेरा साहब केसरवानी नामक ड्रफ्टमैन था। दिन में तो वह बड़ा ज्ञानी रहता पर शाम को पव्वा लगाने के बाद राक्षस बन जाता शराब का ग्लास फोड़कर मुझे नाचने पर मजबूर करता। अन्त में एक सप्ताह बाद ही मैने उसका ऐसा इलाज किया की वह सीधा हो गया। गोपालन था मांसाहारी अत: मुझे रात में बेतवा नदी में मछलियों का शिकार करने के लिए बेट्री पकड़ने के लिए ले जाता था गोपालन तलवार से मछली का शिकार करने में प्रवीण था। कई दिन तक बेट्री पकडते-पकडते मैने भी तलवार पकड़कर शिकार करना सीख लिया पर, गोपालन की दोनों विद्याएँ बिना रील के फोटो खींचना व तलवार से शिकार करना मेरे जीवन में फिर कभी काम न आयी।

कोई दो माह बाद व्यासजी पधारे। मालवी में पूछा- कईं महाराज, कैसो चलीरयो है ? मैं कुछ कहता उसके पहले ही उन्होंने सूचना दे दी - 'अबे तमारा साहब मोहन कुमार माहेश्वरीजी हुई गया है।' बेसनगर का डेब्री क्लियरेन्स का कार्य लगभग तीन माह चला। तीसरे माह में मोहन कुमार माहेश्वरी के साथ काम करने का मौका मिला इनके साथ मैं दंगवाड़ा तथा रूनीजा के उत्खननों में कार्य कर चुका था अत: दुख की बदली ढ़ल गयी।

आदरणीय डॉ. नारायणजी व्यास के पास न तो अपने प्रकाशनों का अंहकार है न हीं बातों का वाग्जाल है परन्तु वे पूज्यगुरूवर्य डॉ. वाकणकर की शिष्य परम्परा में मैदानी कार्य करने वाले कर्मवीर पुरावेत्ता हैं। उनके स्वस्थ दीर्घायु जीवन की कामना।

**बुलन्दी देर तक किस शख्स के हिस्से में रहती है ?**
**बहुत ऊँची इमारते हर घड़ी खतरे में रहती है।**
**व्यासजी की ईमारत, सदैव कायम रहे।।सिद्धिरस्तु।।**

-निदेशक,श्री दशपुर प्राच्य, शोध संस्थान मन्दसौर (म.प्र.)
मो. 9424546019, 07422-406936

# पुरातत्व ही जिनका जीवन है

**- श्रीमती साधना व्यास**

मेरे एवं मेरे परिवार के लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि 'कला समय' द्वारा मेरे पति डॉ. नारायण व्यास पुरातत्ववेत्ता के लिए एक संपूर्ण अंक कला समय का निकाल रहे हैं। कला समय परिवार को हृदय से धन्यवाद एवं अभिनंदन।

अभी कुछेक समय पूर्व महान पुरातत्ववेत्ता पद्मश्री डॉ. वाकणकर पर 'कला समय' द्वारा अंक निकाला गया था। वही परंपरा निभाते हुए आप उनके प्रिय शिष्य डॉ. नारायण व्यास का भी 'कला समय' का अंक निकाल रहे हैं।

शादी से पहले मैं पुरातत्व विषय से अनभिज्ञ थी। मेरे जन्म के पश्चात मेरे पिताजी बीकानेर से दिल्ली आए एवं कृषि मंत्रालय में नौकरी लग गई। इसका श्रेय मुझे देते थे क्योंकि मेरे जन्म के बाद ही उन्हें पक्की नौकरी मिली और मेरा नाम साधना रखा। मैं जब ग्रेजुएशन कर रही थी तब मेरे पिताजी को उनके मित्र भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण दिल्ली में अधिकारी थे उन्होंने ने बताया कि उज्जैन से एक लड़का पुरातत्व में डिप्लोमा करने दिल्ली आया है, आप अपनी बेटी साधना का यदि रिश्ता उससे कर देंगे उत्तम रहेगा। उन्होंने उनसे विस्तृत जानकारी मिली कि वो लड़का मेरे ताऊजी के साढू का भांजा है।

बात चली और 1972 में रिश्ता पक्का हो गया। 1973 में हम विवाह बंधन में बंध गए तब मैंने पुरातत्व का मतलब जाना। इनके साथ रहकर कभी स्मारकों का अवलोकन किया एवं महत्वपूर्ण उत्खनन में इनके साथ रही। बेसनगर विदिशा, गोरज गुजरात, रानी की वाव पाटन, साँची सतधारा इत्यादि मैंने इनको रिपोर्ट, लेख लिखने में बहुत सहायता की मेरी रूचि को देखकर मुझे बी.ए. करने के सौलह वर्ष बाद पुरातत्व में एम.ए. करवा दिया।

पुरातत्व में एम.ए. करने का बहुत लाभ मिला। क्योंकि 1988 में कई ट्रांसफर होने के बाद बड़ौदा से भोपाल आ गए। यहां मुझे एक स्कूल में नौकरी मिली और मुझे मेरा सबसे प्रिय विषय सोशल साईंस मिला, मुझे पुरातत्व का अध्ययन काम आया। बच्चों को इतिहास पढ़ाती थी जिससे बहुत अच्छे नंबर उन्हें मिलते थे।

मेरे दोनों बच्चे रवि एवं संध्या भी हम लोगों के साथ कई स्थलों पर जाते थे वहां से पुराने पत्थर एकत्र कर लेते थे जिनमें कई आदि मानव के हथियार होते थे। इस प्रकार बच्चों पर भी इस वातावरण का प्रभाव हुआ। बच्चों के विवाहोपरांत हमारे पौत्र सौमित्र एवं पौत्री उदयिता का परंपरागत असर हुआ। हमारा पौत्र अपने नानी के यहां जाता और नाना से कहता कि दादा के लिए सिक्के व पुरानी कोई सामग्री दे दो वह ले आता था। कभी आसपास मकान बनते रहते हैं वहां रेत में से अनेक प्रकार के पत्थर ले आता है कभी हम बेटी के घर जाते हैं नाती पीछे पड़ जाता है। नाना हमें गणेश जी बनाना

सिखाओ, डायनासोर या आदि मानव की कहानी सुनाओ। इस प्रकार बच्चे इनसे कुछ न कुछ जानकारी लेते थे। इस प्रकार पुरातत्व का प्रभाव हमारे जमाई सा. सुप्रभात जी पर भी हो गया उन्होंने निश्चय कर लिया कि पुरातत्व विषय लेकर बी.ए. की कक्षाएं प्रारंभ करें, उसके लिए वे प्रयत्नशील है। इस प्रकार नारायण व्यास जी के माध्यम से परिवार पर पुरातत्व के प्रति जागरूकता का प्रभाव सभी पर हो गया। एक बार पुन: कला समय परिवार का अभिनंदन विशेष रूप से श्री भँवरलाल जी श्रीवास को।

**पुरातत्व जिनका जीवन है**

मेरी दत्तक पुत्री हिना भी इनके द्वारा लगाई गयी प्रदर्शनियों में पूरे उत्साह के साथ पुरासामग्रियों को लाने ले जाने एवं उनका डिसप्ले करने में सहयोग करती हैं। मेरी बहू जो माईक्रोबायलाजी में एम.एस.सी. है वह भी इनसे इनके निरंतर शोध एवं विषय कि सारगर्भिता की प्रेरणा लेकर पी.एच.डी. करने की इच्छुक है।

डॉ. नारायण व्यास की सहधर्मिणी, भोपाल म.प्र.

# माटी की गागर में सागर भरने का प्रयास - डॉ. नारायण व्यास

**-ओ.पी. कुशवाहा**

प्रागैतिहासिक काल से ऐतिहासिक काल के मध्य बीहड़ वनों की गुफाओं में आदि मानवीय पुरखौ द्वारा भित्ति-चित्रों, शैलचित्रों के माध्यम से चित्रित की गयी सांस्कृतिक विरासतों को सहेजे विश्व धरोहर साइट भीम बैठका की हजारों राक पेंटिंग को पीतल के तारों का उभार देकर विलुप्त होने वाली तार कसी शिल्प द्वारा सैकड़ों सागौन काष्ठ पैनल्स का सृजन कर चुके हैं शिल्पकार ओ.पी. कुशवाहा एवं गजेन्द्र सिंह कुशवाहा।

काष्ठ शिल्प एवं तारकसी शिल्प द्वारा इस परिवार ने विश्व धरोहर साइट साँची, खजुराहो, कोणार्क, ताजमहल, अमरकंटक, ओरछा, ग्वालियर, मांडू, भरहुत की मूल प्रतिमा शाल भेजिका, अमरावती, अजंता, बोधगया, मथुरा, सारनाथ जैन मंदिर जैसलमेर की नृत्यकाऐं, बोरबदर (जावा मलेशिया) की अनेकों युग-युगीन, सांस्कृतिक, पुरातात्विक धरोहरों का सृजन भी किया है। आपके छोटे पुत्र राजेन्द्र सिंह कुशवाहा को महामहिम राष्ट्रपति महोदय के करकमलों से विज्ञान भवन नई दिल्ली में नेशनल अवार्ड (काष्ठशिल्प) एवं गजेन्द्र सिंह कुशवाहा को म.प्र. शासन द्वारा प्रथम विश्वकर्मा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। आपके सृजन कार्यों की प्रदर्शनियाँ भारत भवन, स्टेट म्युजियम भोपाल, इंदिरा गांधी आर्ट सेंटर नई दिल्ली के अलावा अन्य शहरों में भी प्रायोजित हो चुकी हैं।

शिल्पकार परिवार के सृजन संबंधी कार्यों का मार्गदर्शन डॉ. नारायण व्यास डी.लिट शैलचित्रकला एवं डॉ. के.के. मुहम्मद दोनों ही अधीक्षण पुरातत्वविद, आर्कलाजीकल सर्वे ऑफ इंडिया, भारत सरकार द्वारा समय-समय पर किये जाकर प्रमाणित किये गये हैं। शिल्पकार परिवार ने अनेक महिलाओं को भी तारकसी शिल्प में प्रशिक्षित किया है। भीमबैठका में इन्टर पिटेशन सेंटर निर्माण की आशा में दीप जलाये बैठा यह परिवार स्वयं अंधेरे में जीवन यापन कर रहा है।

काष्ठ और तारकसी शिल्प, शिल्पकार, भोपाल म.प्र.

# परिवार के गौरव डॉ. नारायण व्यास

**- पं. वैद्य सुखदेव व्यास**

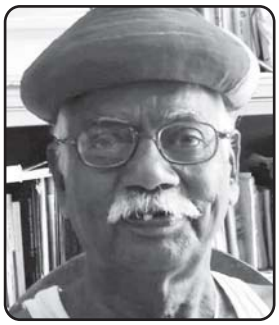

डॉ. नारायण व्यास परिवार के गौरव हैं। इनकी उपलब्धियों पर हमें नाज़ है। बचपन से ही इन्हें पुरानी वस्तुओं को एकत्रित करने की रूचि रही है। घर पर आने वाले पत्र, आने वाली डाक के टिकट, हमारे पिता स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. अनंतलाल व्यास के पुराने पत्र। आदि सुरक्षित रखें। बचपन में पारिवारिक मित्रों के चित्र बनाना, मिट्टी के खिलौने बनाना, रांगोली बनाना जैसी अपनी प्रतिभा का उपयोग करते। यही कारण था विद्यालय में छात्रों और अध्यापकों के प्रिय रहे। बचपन में ही पुराविद् डॉ. वाकणकर जी के संपर्क में आते। उनके सानिध्य में इनकी कला और काल्पनिक प्रतिभा में निखार आता गया और गुरू वाकणकर जी के प्रिय शिष्य बन गये वे इनके हर कार्य में सहयोगी रहते। उनके सानिध्य में नारायण ने अपने इस क्षेत्र में ऊंचाई को छूआ डाक्टरेट, डी.लिट की उपाधियां प्राप्त की, अनेक शोधपत्र, लेख लिखें जो पुरातत्व की धरोहर है। खुदाई में निकले अवशेष पुरा संग्रहालय में सुरक्षित है। नारायण भारतीय संस्कृति और पुरातत्व के अधीक्षण पुरातत्वविद् पद से सेवानिवृत्त होने के बाद भी छात्रों में पुरातत्व के प्रति जागरूकता लाने के लिए निरंतर सेवारत हैं। ऐसे भाई डॉ. नारायण व्यास पर हमें गर्व है। विनीत डॉ. वत्सराज व्यास, सुखदेव व्यास, सत्यनारायण व्यास एडवोकेट, डॉ. मणीन्द व्यास, सुनील व्यास एवं समस्त व्यास परिवार एवं मित्रगण अनंत सुंदरम भवन, जहाजगली उज्जैन म.प्र.।

डॉ. व्यास के बड़े भाई साहब

संस्मरण...

# बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. नारायण व्यास

-सुभाष अत्रे

मध्यप्रदेश के महाकाल की नगरी उज्जैन में जन्में डॉ. नारायण व्यास पुरातत्ववेत्ता को भारत में कौन नहीं जानता। बहु प्रतिभा के धनी डॉ. व्यास उज्जैन की माटी में पले बढ़े तथा आपका शिक्षण भी उज्जैन में हुआ। डॉ. व्यास ने स्नातकोत्तर शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात पी.एच.डी एवं डी.लिट की प्रतिष्ठित (प्रेस्टिजियम्स) उपाधियां प्राप्त की तथा अपने शोध पत्रों एवं शोध प्रकल्पों से भारत ही नहीं विश्व के पुरातत्वीय जगत में अपना परचम फैलाया। तत्समय के लब्ध प्रतिष्ठित पुरातत्विक पद्मश्री डॉ. वाकणकर के साथ विश्व धरोहर भीम बैठका शैलाश्रय एवं शैलचित्रों के स्थल पर उत्खनन कर उस स्थल को विश्वमान चित्र पर स्थापित करवाने का अद्वितीय कार्य किया। डॉ. व्यास ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग में वरिष्ठ पुरातत्वविद के पद पर यशस्वी और कीर्तिवान सेवाकाल पूर्ण कर वर्ष 2009 में सेवानिवृत्त विभाग से विदा ली किन्तु तन-मन-धन से वे शोध अनुसंधान तथा फील्ड सर्वे में संलग्न रहे। शासकीय सेवा में आप मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, दमन दीव, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़ में पदस्थ रहे तथा इन राज्यों की पुरा सम्पदा संरक्षण, अनुसंधान में उल्लेखनीय योगदान दिया। डॉ. व्यास के द्वारा आजकल प्रचलित सौ रूपये के नोट पर मुद्रित गुजरात की पुरातत्वीय सम्पदा 'रानी की वाव' के संरक्षण एवं अनुसंधान को स्मरण कर हम सभी गौरवान्वित होते हैं।

डॉ. व्यास से मेरा परिचय छत्तीसगढ़ में लगभग 20 वर्षों पूर्व हुआ। उनका सरल, मधुर स्वभाव प्रखर, विशद् ज्ञान पुरातत्व में एक जैसी रूचि होने के कारण हमारी घनिष्ठता हुई। डॉ. नारायण व्यास को किताबी (थ्यौरी) के मैदानी (फील्ड) का ज्ञान भी बहुत उच्च कोटि का है। पुरातत्व से संबंधित सभी क्षेत्रों जैसे उत्खनन साधारण रखरखाव, Restoration मंदिर निर्माण Temple Architecture आदि विषयों में उनको दक्षता प्राप्त है।

डॉ. व्यास ने प्रागेतिहासिक मानव द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले औजार, मृदभाण्ड आदि वस्तुओं की खोज तथा संग्रह करने की विशेष प्रतिभा है। उनके द्वारा पुराकाल में प्रयुक्त ईंटों (भवन सामग्री) का दुर्लभ संग्रह किया गया है। डॉ. व्यास रंगभेषणात्मक एवं समसामयिक विषयों पर अत्यन्त गंभीर तथा शोध परक शोध पत्र लिखे हैं। उनके द्वारा लोक रूचि के विषयों पर अत्यन्त सरल एवं सुलभ भाषा में आलेख समाचार पत्रों में पढ़ने को अक्सर मिलते हैं। डॉ. नारायण व्यास में अपने शोध के संबंध में विदेशों की यात्राएं भी की है तथा सम्मेलन, सेमीनार, गोष्ठीयों एवं चर्चाओं में आपकी सक्रिय भागीदारी रहती है। डॉ. व्यास की आप्रतिम प्रतिभा, लगनशीलता, अद्यव्यसायिता समर्पण तथा (Contribution) के कारण कई प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा उनको सम्मानित किया गया है। डॉ. व्यास एक समर्पित संग्रहकर्ता भी है। पुरातत्वीय सामग्री जैसे पत्थर के अस्त्र, जीवाश्म, ईंटें आदि के अतिरिक्त आपके द्वारा प्राचीन सिक्के, पोस्टल सामग्री, प्राचीन पाण्डुलिपियां आदि का विशाल संग्रह भी तैयार किया गया है। उनके घर में स्वयं का म्यूजियम भी है। डॉ. व्यास सरल स्वभाव के होने के कारण युवा तथा प्रौढ़ दोनों वर्गों के ज्ञान पिपासु तथा संग्रहकर्ताओं में समान रूप से लोकप्रिय है। वे अपने विशद ज्ञान के माध्यम से अत्यन्त जटिल विषयों को भी सरल सुलभ भाषा में समझा कर सभी को प्रोत्साहन देते हैं। डॉ. नारायण व्यास जैसे विद्वान महापुरुष को सम्मानित कर हम सब लोग कृत्य कृत्य हो रहे हैं। हम डॉ. व्यास सहाब के स्वस्थ, प्रसन्न जीवन की कामना और प्रार्थना करते हैं ताकि उनका मार्गदर्शन स्नेह एवं आशीर्वाद हमको सतत प्राप्त होता रहे।

- पूर्व महानिदेशक पुलिस, छ.ग.

# अनुकरणीय डॉ. नारायण व्यास

-सुनील कुमार भट्ट

मैं, सुनील कुमार भट्ट, बीएचईएल में अभियंता पद पर कार्यरत हूँ साथ ही, देश-विदेश की माचिस संग्रह करना मेरा पुराना शौक है। माचिसों का भी अपना इतिहास है और मेरे पास दुर्लभ पत्र और पांडुलिपियाँ भी सहेजी हुई है। डॉ. नारायण व्यास जी को मैं अपना आदर्श मानता हूँ। बात 12-13 वर्ष पुरानी है, रीजनल साइंस सेंटर, भोपाल में आयोजित प्रदर्शनी में मैंने भी माचिस संग्रह प्रदर्शित किया था। उसी दौरान अंकल जी से मेरा परिचय हुआ। उसके बाद अनेक अवसरों पर आपके साथ प्रदर्शनी लगाने का मौका मिला। आपके माध्यम से कई गणमान्य नागरिकों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपका पूरा जीवन पुरातत्व वस्तुओं के संग्रह और जानकारी संकलन के लिए समर्पित है। यह जानकर गर्व होता है कि, 100 के नोट पर छपी 'रानी की वॉव' में आपने 10 वर्षों तक शोध कार्य किया और सांची, भीमबैठका जैसी विश्व धरोहर पर भी आप अतुलनीय ज्ञान रखते हैं।

व्यास अंकल कला के भी पारखी हैं। समय-समय पर आपके द्वारा बनाए गए स्केच, पेपर कटिंग वर्क या संग्रह से विशिष्ट वस्तुओं को अवसर विशेष पर सोशल मीडिया पर पोस्ट किये जाते हैं जिससे हमें उस दिवस के महत्व का भी ज्ञान होता है और कुछ नया करते रहने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

डॉ. नारायण व्यास जी की उपलब्धियाँ और जीवन शैली हमारे लिए अनुकरणीय है। उन्हें अनेकानेक शुभकामनाएं।

- 'माचिसमेन' ए-57 तुलसी परिसर, अवधपुरी, बीएचईएल, भोपाल, मो. 9425660310

संस्मरण...

# पुरातत्व प्रेमी जिज्ञासु : डॉ नारायण व्यास

– रमेश कुमार पंचौली

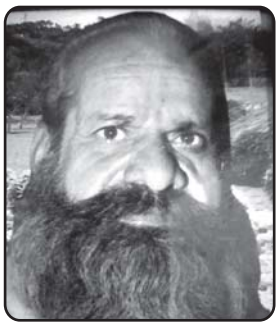

शीर्षक से मत चौंकिये मैं नैनसुख वाली कहावत नहीं दुहरा रहा हूँ मैं आज जो वार्ता सुनाने का प्रयास कर रहा हूँ और आपकी जिज्ञासा शान्त करने पर उद्यत है चैन दोनों पक्षों को मिलना आवश्यक है चैन से बैठिये और चैन से सुनिये नहीं पढ़िये।

प्रत्येक जिज्ञासु अपने मकान, दुकान, खान, कुआं, बाव, प्रियतमा, पत्नी, संतति विद्यालय, देवालय वाटिका क्षेत्र, कुरूक्षेत्र, जय भारत, महाभारत, रामायण, रामचरित मानस, राम चन्द्रिका, साकेत, यशोधरा ऐसे कई प्रसंगों में अपनत्व प्रकट करने हेतु नामांकन निश्चयन करता ही रहा है यह सनातन प्रक्रिया है सतत निरंतर गायी, अनुगायी प्रक्रिया रही है रहेगी और प्रत्येक जीव को जीवन देती ही रहेगी मैं बात कर रहा हूँ लगभग 70–75 साल पुरानी शताब्दी नहीं गुजरी है नहीं तो यह पुरातत्वीय सामग्री बन जाती नहीं बनी है तो क्या पुरातत्व प्रेमी जिज्ञासु पी.एच.डी., डी.लिट पुरातत्वीय विभाग से जीविका उपार्जन कर्ता अब वेतन नहीं पेंशन मिल ही रही है मिलती रहेगी अब आपकी जिज्ञासा लगभग शांत हो रही होगी यह कहानी है हमारे गुरू भाई महामहोपाध्याय श्रीयुत डॉ. नारायण व्यास जी की श्वासों श्वास स्पन्दन जागृति के क्षण की जब उनके पिताश्री आंदोलित हुए थे पंडित ज्योतिषाचार्य से मिलने के लिये महाकाल की नगरी अवन्तिका की सर्वश्रेष्ठ ज्योतिषाचार्य जी पं. सूर्यनारायण जी व्यास से संपर्क किया और उन्होंने सचिदानन्द परम परमेश्वर के नाम पर नवजात का नामकरण दिया नारायण–नारायण पिताजी प्रफुल्लित हो नवजात की कुण्डली, भाग्य कर्म, वाणी शब्दों में सुनकर मन ही मन प्रसन्न होते हुए रास्ते के मिष्ठान भण्डार से मिठाई लेकर महाकाल की मानस पूजा करते हुए उनके साथ गृहदेवता, कुलदेवता को मिष्ठान अर्पित करते हुए मोहल्ले भर का मुंह मिठाई से भर दिया! नारायण इस तरह अवतरित हुए बालपन खेलते कूदते उज्जयिनी में व्यतीत हुआ अच्छे विद्यालय से शुभ क्षणों में शिक्षा दीक्षा प्रारंभ हुई और निरन्तर अग्रसर होती हुई विश्वविद्यालय के द्वार पर पहुंची तो ऐसा लगा कि माँ सरस्वती राह देख रही थी प्रारंभिक क्रिया कलापों में सुयोग उपस्थित हो गया डॉ. वाकणकर जी की दृष्टि में चढ़ गया भाई नारायण उन्होंने संकेत दिया प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व का अध्ययन करो भीमबैठका के शैल चित्रों का गुरू सानिध्य के कामों में गुरूजी का सहयोग किया आदरणीय वाकणकर जी की हार्दिक इच्छा थी कि नारायण शैल चित्रों पर पी.एच.डी. करे पर नहीं कर पाये तथा स्नातकोत्तर एम.ए. विक्रम विद्यालय से करते हुए उन्होंने भारतीय पुरातत्व विभाग में तकनीकि सहायक के पद पर केन्द्रीय सरकारी कार्य करना प्रारंभ करते हुए उन्होंने विदिशा जिले में बेसनगर में पुरातात्विक उत्खनन सहायक की हैसियत से उत्खनन किया संयोग से मैं भी सांची विदिशा का पुरात्विक भ्रमण पर गया पूर्व परिचित के कारण मैं भी उस उत्खनन कार्य को देख सका उनसे मिल सका ये अपने सेवा काल में विदिशा, भोपाल, आगरा आदि स्थानों में सेवा कार्य किया राष्ट्रीय पुरातत्व का अध्ययन उन्होंने भारत के कई स्थानों पर, पदों पर किया शिक्षा प्राप्ति तथा गुरू दीक्षा महाकाल की नगरी विक्रम विश्वविद्यालय आदरणीय गुरूजी के श्रीचरणों में आकर सतत गुरू सानिध्य में प्रत्यक्ष अध्ययन ने गुरू ज्ञान, गंगा में खूब डुबकियां लगाकर पुरातत्वीय ज्ञान प्राप्त निखार आना स्वाभाविक था आप गुजरात में सरस्वती नदी सभ्यताओं की खोज में आदरणीय गुरू स्व डॉ. वाकणकर जी अपनी टोली के साथ पाटन (गुजरात) आये और उन्होंने रानी की वाव और व्यासजी उस पर किया पुरातात्विक कार्य देखकर गुरू प्रसन्न हो गये और कहा कि तुम इसी रानी की वाव पर पी.एच.डी. करो प्रारंभिक कार्य उन्होंने कर दिया उनके मार्गदर्शन में कार्य करना था किन्तु 3 अप्रैल 1988 में गुरूजी का स्वर्गारोहण हो गया बाद में प्रोफेसर सी.बी. त्रिवेदी के मार्गदर्शन में इन्हें सन् 1992 में पी.एच.डी. अवार्ड हो गयी। रानी की वाव पर कार्य करना सहज नहीं था खतरनाक जहां कोई कार्य करने को तैयार नहीं था इन्होंने साहस कर विभाग का काम भी किया और अपनी थीसिस के लिये भी कार्य किया ये भी वाव में तीन बार गिरने से ईश्वर की कृपा से बच पाये वहां वाव में लगभग 1100 प्रतीमाएं थी उनका अध्ययन किया और बड़ी कठिनाई के साथ कार्य पूरा किया थीसिस पूरी हुई प्रस्तुत की गई पी.एच.डी. अवार्ड भी हो गई परन्तु इनके मन में ईश्वर ने गुरू का मार्गदर्शन नहीं मिल पाया इसकी कसक उन्हें सालती रही कि मैंने गुरू की मंशा रॉक आर्ट पर थीसिस लिखने की मैं पूरी नहीं कर पाया तो गुरू भावना का आदर करते हुए उन्होंने 1997 में रायसेन क्षेत्र के शैल चित्रकला पर डी.लिट् करने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाया उनको सतत प्रयास से अथक मेहनत से डी.लिट थीसिस जो 2005 में इनका सपना पूरा हुआ और गुरू की इच्छा पूरी हुई इन्हें आत्म संतुष्टि मिली जब इन्हें डी.लिट अवार्ड हो गई गुरूजी की इच्छा डी.लिट थीसिस के रूप में पूरी की।

इनका यहाँ दौरा होता ही रहता था एक बार स्वेच्छा से अपना टूर प्रोग्राम के अनुपालन में कभी किसी के आग्रह पर कभी किसी के मनमाफिक कार्य के सम्पादन हेतु भी यात्रा होती ही थी स्मरण करने पर लग रहा है कि ये शताब्दी के अन्त नई शताब्दि के प्रारंभ में लगभग 2000–2001 साल में लम्बा दौरा हुआ था कई एक स्थानों पर प्रोग्राम था संयोग से या यों भी हुआ था कई इस भूमि को इनके वाहन के पहिये घुमते थे ये मुझे स्मरण कर यात्रा में मुझे सहभागी बना ही लेते थे मतलब यह कि मैं भी इनके साथ था और पहले हमने इस क्षेत्र की भारतीय पुरातात्विक मानचित्र में प्रसिद्धतम स्थान 'दर की चट्टान' अश्मोपरी अश्माधात पेट्रोग्लिरम्स जो भारत में ही नहीं संसार भर की सबसे प्राचीनतम पेट्रोग्लिम्स साईड है जिसका शोध मैंने ही किया था यह सर्वाति प्राचीन साईड है उनका आग्रह हुआ तो मैं सहज ही उन्हें दिखाने को तैयार हो गया मैंने इन्हें वह स्थान ही नहीं कई और महत्वपूर्ण स्थान दिखाये इन्द्रगढ़ का प्राचीनतम पंचदेवल के भग्नावशेष भी दिखाये मंदिर का शिखर अन्य पुरासाक्ष्य

सामग्रीयां दिखाई वहां के शैलचित्र भी दिखाये शैल चित्रों से अश्मोपरी अश्माघास बहुत प्राचीन है।

आदरणीय गुरूदेव द्वारा शोधित शैलचित्र कला साईड सीता खरड़ी भी इनको दिखाई यहां शैलचित्र अत्यधिक प्राचीन नहीं ब्राह्मी लिपि का शिलालेख शैलचित्रों में यहां पाया जाता है। शैलचित्र जिस पत्थर से रंग तैयार किया जाता है वह घिसा हुआ पत्थर गुरूजी को सर्वे करते हुए पहले ही मिल गया था इसलिये विश्वास पक्का हो गया था कि शैलचित्र मिलेंगे ही और सीता खरड़ी की शौध साकार हुई और उन्होंने शैलचित्र शिलालेख और कई चित्र देखें सीता खरडी, भीमबैठका डाकन का छज्जा, डाकन घरडी ऐसे शैलचित्र इडो के नाम है विचार करने पर भारतीय इतिहास में रामसीता, पाण्डवों ने वन भ्रमण किया था तो उन्हीं ऐतिहासिक पात्रों के नाम पर और भय पैदा कर सकने वाले नामों से डाकन, चुड़ैल, भूत आदि नामों से भय पैदा होता है अर्थात श्रद्धा व भय का संचरण शैलचित्रों की आज रक्षा करते रहे हैं। वर्तमान में प्रचार प्रसार होने से नाम अमर कर सकने की चाह अपने नामाक्षर हस्ताक्षर कर सत्यानाश कर रहे हैं। सबसे लम्बी शैलचित्र भण्डार श्री चादर्भुज नाक नाला के शैलचित्र भी दिखाये जहां इतिहास काल ताम्राश्य काल मध्याश्म काल उत्तर पूर्वाश्मकाल के चित्रों का भण्डार देखकर जी प्रसन्न हो गया और इनके मुँह से निकल गया कि क्या काम किया है आदि मानव ने इसके बाद चीवर नाला राक आर्ट क्षेत्र यह सबसे पहले डॉ. एम.जी दीक्षित साहब ने तावली के अध्यापक श्री कँवरलाल जी ररासी की सहायता व मार्गदर्शन प्राप्त कर किया था बाद में हम लोगों ने भी कई एक चित्र श्रृंखलाएं खोजी चीवर नाले में शेर का प्रत्याक्रमण जहां वनराज सिंह ने शिकारी का हाथ मुँह में ले लिया दूसरा शिकारी सहायता करने को उद्यत है पर पहला शिकारी शेर के कब्जे में है अत: शेर संचालन नहीं कर पा रहा है। यही मातृत्व की रक्षा करती हुई गर्भिणी गाय का शिकारी पर आक्रमण की मुद्रा दिखाई गई है यहां चीवर में अशोक कालीन शिलालेख जो डॉ. भगवती प्रसाद राजगुरू के अनुसार इस क्षेत्र पर माध्यमिका चित्तौड़ के अधीनस्थ रहा है सिद्ध करता है इनको दिखाये भानपुरा का पुरातत्व संग्रहालय भी इन्होंने देखा और कई सुन्दर प्रतीमाओं की सराहना की।

तक्षकेश्वर महादेव मंदिर व कुण्ड देखा बहुत ही सुन्दर प्राकृतिक मनोहार स्थल है कहते हैं कि यहां जंगलों में आयुर्वेदिक सभी वनस्पतिकाएं मिलती हैं जो वर्ष में एक बार रात्रि में स्वयं अपने मुख से अपने गुणों का बखान करती हैं।

गांधी सागर मैन्जीन के शैलचित्रों का अध्ययन किया यहां कई अनोखे चित्र हैं मेंढक के शरीर की कापिक संरचना दिखायी गयी है चित्र देखेंगे तो चौंकना नहीं यह तो किसी कुशल आदि मानव चित्रकार की संरचना है।

औरंगाबाद का शिव मंदिर जो एक ही चट्टान पर उसे तराशकर बने मंदिर की चर्चा है जो 6000 वर्ष पुराना है उसे ब्रह्मास्त्र से इसे बनाया गया है यह चर्चा में है ऐसे सभी मंदिर लेटराइट चट्टानों को ऊपर से तराशते हुए नीचे तक बनाया जाता है ऐसा एक मंदिर हमारे क्षेत्र में भी है वाकणकर जी ने यहां शोध करते हुए इसके नाम की एक सिला मिली थी और इस विहार का नाम चन्दन गिरि विहार लिखा हुआ है धर्मराजेश्वर मंदिर के समीप चंदवासा बना हुआ है यह भी उन्हें दिखाया गया था ऐसे सभी मंदिर ऊपर से बनाते हुए नीचे का तल बनाया जाता है जहां कोई अन्य वस्तु ईंटें मिट्टी गारा सीमेंट काम में नहीं आती है यह भव्य मंदिर लेटराइट चट्टान को तराश कर बनाया जाता है इसमें सैकड़ों मजदूर लगते हैं प्रारंभ में ही बनाई जाने वाली संरचना प्लान मेप तैयार कर कार्य का शुभारंभ किया जाता है इसे ताराशा जाता है वास्तव में हम इसे बना हुआ देख रहे हैं डॉ. नारायण व्यास ने इसे देखा मंदिर का अटेन्डर इन्हीं के विभाग का छोटा कर्मचारी है बड़ा अधिकारी आया तो उसे पूरी हाजिरी बजाना ही पड़ती है बजायी हमने उसका भी लुफ्त उठाया और मंदिर को भी घूम फिरकर सभी स्थानों को अच्छी तरह देखा चलो बाहर की तरफ तो आसानी रहती है मोटा रूप में खुदाई की जा सकती है इसे तराशा भी जा सकता है कला दृश्य भी हो सकती है पर कल्पना कीजिए कि मंदिर का गर्भ गृह बनाना आसान काम नहीं होता उसे भी किया गया मूर्ति का निर्माण भी कठिनकारी ही है निर्माण के समय निर्माणकर्ता को क्या क्या कठिनाई आई होगी उसी ने भोगा होगा वही भोक्ता है पर अपने लक्ष्य को पूरी तरह से प्राप्त कर लेने से जब सभी जिज्ञासाएं आकार ले लेती हैं और वह भी उसी रूप में जैसी कल्पना निर्माण के पहले की गयी होगी यदि उससे भी और सुन्दर रूप में साकार हुई होगी सोचते रहिये कर्ता या भोक्ता का आनंद की अनुभूति कीजिए वह आनंदित हुआ ही होगा आप कल्पना में उससे भी आधिक परमानंद को प्राप्त करेंगे मुझे विश्वास है और वह साकार होगा आपके मानस में।

# आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणास्त्रोत

**– सुधीर कुमार पण्ड्या**

मैं सुधीर कुमार पाण्ड्या पिपलानी मार्केट भोपाल में एक जनरल स्टोर संचालक हूँ। विशेष अंकों तथा जन्मतिथियों के बैंक करेंसी नोट संग्रह करना मेरी रूचि है। बैंक खाते में विषम संख्या जैसे 111, 222, 333 आदि राशि जमा करने के लिए मुझे लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड भी मिल चुके हैं।

एक संग्रहकर्ता के तौर पर डॉ. नारायण व्यास जी भोपाल का जाना-माना नाम है। उनसे एक सेमीनार के दौरान मेरा परिचय हुआ। अनेक अखबारों में भी आपके बारे में लेख छपते रहते हैं।

डॉ. व्यास पुरातत्वविद् होने के साथ-साथ बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं जो अपने घर-आँगन को भी स्वनिर्मित शिल्प कृतियों से सजाते रहते हैं। शिक्षण एवं शोध संस्थानों में आपके नियमित व्याख्यान छात्रों में बहुत लोकप्रिय हैं। नित नये प्रयोग करते रहना उनकी दिनचर्या बन गई है। सरल और सहृदय डॉ. नारायण व्यास जी की उपलब्धियाँ और जीवन शैली आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणास्त्रोत है। मेरी ओर से उन्हें अनेकानेक शुभकामनाएँ।

– अनेकांत नगर, जहांगीराबाद, भोपाल (म.प्र)

संस्मरण...

# मैं डॉ. नारायण व्यास को दूसरा वाकणकर मानता हूँ

– राजेन्द्र नागदेव

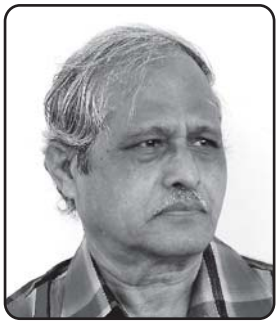

प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता मेरे अभिन्न मित्र डा. नारायण व्यास से थोड़ा सा परिचय बहुत वर्ष पूर्व हुआ था जब वे भारती कला भवन, उज्जैन में चित्रकला के विद्यार्थी के रूप में प्रविष्ठ हुए थे मैं जब वास्तुकला के अध्ययन हेतु 1961में मुम्बई चला गया तो वह थोड़ा सा परिचय भी क्षीण होकर नाम मात्र का ही रह गया था। हमारा परिचय फिर सत्तर के दशक में पुनर्जीवित हुआ जब वे दिल्ली आए संभवत: 1972 या 73 में, अब ठीक से स्मरण नहीं। वे पुरातत्व संबंधी प्रशिक्षण के सिलसिले में आए थे और हमारे साथ हमारे अमर कालोनी स्थित आवास पर लगभग एक माह रहे थे। मैं और अनुज नरेन्द्र तब छत पर बनी बरसाती में रहा करते थे। वह अविवाहितों का अव्यवस्थित सा आवास था। भोजन आदि की कोई व्यवस्था घर में नहीं थी। संध्या को जब हम नौकरी से और व्यासजी प्रशिक्षण से लौटते थे तो हम एक पंजाबी होटल में जाकर भोजन करते थे। चाय–नाश्ता भी एक होटल में ही हुआ करता था। उस काल में उनसे संबंध घनिष्ठ हुए और उत्तरोत्तर अधिक घनिष्ठ होते गए।

मैं व्यासजी को दूसरा वाकणकर मानता हूँ। लगता है जैसे वे श्रद्धेय वाकणकर गुरूजी के शिष्य नहीं प्रतिरूप ही हों। वही सरलता, वही कर्मठता, वही लगभग चौबीस घंटे कार्यों में व्यस्त रहने की शैली और अपनी शोधवृत्ति के द्वारा पुरातत्व क्षेत्र में ऊँचाइयों की ओर अग्रसर होना, सब कुछ वैसा ही

यहाँ उनके विषय में चित्रकार अथवा पुरातत्ववेत्ता के रूप में नहीं, व्यक्ति नारायण व्यास के रूप में कुछ प्रसंग एवं अनुभव।

जो नारायण व्यास आज राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सेमिनारों में बेझिझक वक्तव्य देते हैं किसी काल में अत्यंत सीधे, संकोची स्वभाव के व्यक्ति थे। उनकी प्रथम दिल्ली यात्रा का प्रसंग है। मेरी एक दूर के रिश्ते की बहन दिल्ली के लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज में एम. बी. बी. एस. हेतु नागपुर से दिल्ली आई थी। मैं स्वयं यद्यपि उम्र में बहुत बड़ा नहीं था पर उसका स्थानिय अभिभावक था। उस रूप में अपने कर्तव्य का निर्वहन करने अक्सर कालेज जाया करता था एक बार व्यासजी को भी वहाँ साथ चलने के लिए कहा। वे जैसे डर से गए, बोले– 'राजेनजी, अपन लड़कियों के कालेज जा रहे हैं? अपने को वहाँ कोई कुछ कहेगा तो नहीं?' मेरे आश्वस्त करने पर वे मेरे साथ चले तो गए किंतु वहाँ पूरे समय असहज से ही रहे। उनका यह संकोच उनके अत्यंत सीधेपन का परिणाम था। कालांतर में वह संकोची प्रवृत्ति उनके व्यक्तित्व से बाहर हो गई। अपने गुरु वाकणकरजी की ही तरह वे स्वयं को हर क्षण व्यस्त रखते हैं उनकी इस व्यस्तता का वास सहधर्मिणी साधनाजी की वाणी में अक्सर रहता है। उस व्यस्तता को उनसे अधिक प्रामाणिक तौर पर और कौन जान सकता है। यह व्यस्तता मात्र पुरातात्विक कार्यों में नहीं होती वरन उसके अन्यान्य क्षेत्र हैं। घर में पड़ी अनावश्यक समझी जाने वाली वस्तुओं यथा; पुराने निमंत्रणपत्रों वाले कार्ड, रंगीन कागजों की कतरनें, वृक्षों की पतली टहनियाँ, पन्नियाँ और ऐसी ही कबाड़ी को बेचने योग्य सामग्री को काटछांट कर मानवों, पशु–पक्षियों, नसर्गिक दृष्यों में रूपांतरित करने में वे दक्ष हैं। लगता है इस कार्य में उन्हें अलग ही आनंद आता है। त्याज्य सामग्री से प्रस्तुत इन कलाकृतियों को यत्र तत्र सर्वत्र देखा जा सकता है। उनके लिए घर में कोई विशिष्ट स्थान आरक्षित नहीं है। उनका घर कबाड़ से जुगाड़ का उत्तम उदाहरण है। ऐसी कलाकृतियों, जलरंगी चित्रों, पुरातत्व संबंधी सामग्री आदि से ठूंस–ठूंस कर भरा हुआ उनका निवास लघु संग्रहालय ही है। जब भी वहाँ जाता हूँ अनायास ही 'भारती कला भवन' में प्रवेश कर कर जाने का आभास होता है। यहाँ लगभग वही वातावरण है जो वाकणकरजी ने वहाँ निर्मित किया था।

दिल्ली छोड़ कर भोपाल आने के बाद जब एक दिन संध्या को मैं और पत्नी उनके आवास पर गए तो वहाँ देख कर आश्चर्य और हर्ष हुआ कि बाहर आँगन में 25–30 गौरय्याओं का झुंड दाना चुगने आ गया है ऐसे दृष्य अब बहुत सामान्य नहीं हैं नैसर्गिक संपदा का बुद्धिहीन दोहन होने के कारण चिड़ियाएँ कम दिखाई पड़ती हैं। यद्यपि, आँगन में स्थान बहुत सीमित है उन्होंने वहाँ ऐसा नैसर्गिक वातावरण निर्मित कर दिया है कि अनेक प्रकार के पंछी आने लगे हैं। कहीं गत्ते से बनाए डिब्बे घोंसलों के लिए लटके हैं, कहीं चिड़ियों को झूलने के लिए रस्सियाँ बंधी हैं, कहीं वृक्षों पर कृत्रिम चिड़ियाएँ बैठाई गई हैं, कहीं उनकी प्यास बुझाने सकोरों में जल रखा है। व्यास दम्पती का निसर्ग के प्रति गहन आकर्षण परिलक्षित होता है। मैं भी अपने घर में ऐसा ही वातावरण पक्षियों के लिए निर्मित करना चाहता था किंतु, बहुत आश्वस्त नहीं था। उनके यहाँ चिड़ियों की ऐसी आवाजाही देख कर मुझे लगा कि यह संभव है। वहाँ मिली प्रेरणा का सुपरिणाम है कि आज हमारे घर में सुबह, दोपहर, संध्या किसी भी समय चिड़ियों की खूब चहचहाट सुनाई देती है। जो व्यक्ति पुरातात्विक अनुसंधानों के कार्य हेतु अक्सर पहाड़ों, जंगलों में रहा हो उसमे प्रकृति–प्रेम होना स्वाभाविक ही है।

एक और प्रसंग। जब व्यासजी हमारे साथ दिल्ली में थे जिसका उल्लेख ऊपर आ चुका है, तब उनकी सगाई हो चुकी थी। भावी वधू दिल्ली की थी ससुराल हमारे निवास स्थान से लगभग चार किलोमीटर दूरी पर ही श्रीनिवासपुरी में थी। उन्हें ससुराल वालों से भोजन हेतु आमंत्रण मिला। व्यासजी बोले वहाँ जाना है पर अकेले कैसे जाऊँ? साथ में कोई बड़ा व्यक्ति होना चाहिए। मैं स्वयं तब अविवाहित था। किंतु, उस दिन मैंने उनके 'बुजुर्ग' की भूमिका निभाई। व्यासजी और श्रीमती व्यास आज भी मुझे अपने विवाह का साक्षी मानते हैं और अक्सर इस प्रसंग का उल्लेख बातचीत में करते हैं।

नारायणजी दूसरों की सहायतार्थ सदैव तत्पर रहते हैं। भोपाल में आयोजित हमारे कुछ कार्यक्रम मेरे काव्यसंग्रहों के लोकार्पण, दिवंगत अग्रज सच्चिदाजी संबंधी पुस्तक का विमोचन, दामाद और पुत्री का संगीत कार्यक्रम– आदि की सफलता का श्रेय बहुत कुछ नारायणजी द्वारा उत्साहपूर्वक आयोजनों में की गई उनकी भागीदारी को जाता है।

उनकी सहायता का एक प्रसंग हम कभी विस्मृत नहीं कर पाएँगे।

लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व मैं बहुत बिमार हो गया था। कुछ दिन अस्पताल में भी रहना पड़ा था। यहाँ घर में मात्र मैं और पत्नी दोनों ही रहते हैं। पत्नी के लिए सबकुछ अकेले सम्हालना बहुत कठिन था। व्यासजी को जैसे ही पता चला उन्होंने साधनाजी को तुरंत हमारे पास भेजा यह कह कर कि यहाँ घर के काम तो मैं सम्हाल लूँगा तुम तुरंत जाकर वहिणी की सहायता करो। साधना रात दिन हमारे साथ रहीं और हर प्रकार से हमारी खूब सहायता की। एक दिन जब मेरी तबीयत कुछ अधिक ही बिगड़ गई थी वे पूरी रात हमारे साथ ही रहीं।

व्यासजी की सफलता में उनकी धर्मपत्नी का बहुत योगदान है। उनके यहाँ यह उक्ति चरितार्थ होती है कि हर सफल पुरुष के पीछे एक स्त्री होती है।

उनके व्यक्तित्व का यह छोटा सा शब्द-चित्र। यह कामना है कि भविष्य में वे सफलता के और ऊँचे सोपानों पर चढ़ें।

-कवि,चित्रकार डी के 2 - 166/18, दानिशकुंज, कोलार रोड, भोपाल- 462042 मो 8989569036

# हमारी सांची यात्रा

**- निखिल भावे**

प्राचीन वास्तु और उसको समझना बढ़ा ही कठिन कार्य है। हम इतिहास जानने के लिये किसी किले पर किसी प्राचीन मंदिर में या किसी गुफाओं एवं कन्दराओं के मध्य में जाते हैं। परन्तु सामान्यत: अधकचरा ज्ञान और अधूरा इतिहास जानकर लौट जाते हैं। गाईड जितना बताता है उसका आधा तो हम भूल जाते हैं या आधे का ज्ञान कुछ समय तक हमारे दिमाग पर घर करके रह जाता है। परन्तु कई यात्रायें वर्षों तक हमारे मन मस्तिष्क पर छाई रहती हैं ऐसी ही अविस्मरणीय यात्रा हमने डॉ. नारायण व्यास जी के साथ सांची, सतधारा के लिये की।

हमारे घर में अक्सर ही पुरातत्व और इतिहास से संबंधित चर्चाओं में डॉ. नारायण व्यास का नाम सम्मान से लिया जाता है। क्योंकि हमारे पिता स्वयं इतिहास प्रेमी के साथ पुरातत्व के ज्ञाता हैं एवं डॉ. नारायण व्यास के बहुत निकट हैं। भोपाल में हम लोग दिवाली मनाने स्विट्रलैण्ड से आये थे और हमारा (आउटिंग) भ्रमण यात्रा का कार्यक्रम अचानक बन गया। पापा ने कहा अगर व्यास जी के साथ चलेंगे तो यात्रा का अलग आनंद ही आयेगा।

उन्होंने व्यास जी से सांची जाने का प्रस्ताव भेजा और अपने व्यस्ततम कार्यक्रम में हमारे साथ जाने को तैयार हो गये। मेरे पिता और माँ भी लखनऊ से आये हुए थे। वह भी हमारे साथ थे। रास्ते में जो भी स्थान उन्हें जानकारी देने लायक दिखते उनका हमें पूरा ज्ञान मिला विदिशा रोड पर कर्करेखा को हमने देखा पृथ्वी के 23½ अंश पर कर्क रेखा का आंकलन मनोहर था। उज्जैन में कर्म रेखा पर एक खगोलीय प्राचीन आब्जरवेटरी है। जहां से ग्रहों की गति की गणना को निर्धारित किया जाता है। ब्राह्मी लीपी का ज्ञान प्राप्त किया और वहाँ के लिखे शब्दों को पढ़ने का प्रयास किया। डॉ. व्यास ने हमें बताया कि सांची में बने द्वारों पर बुद्ध की समस्त जातक कथायें एवं उनके पूर्व जन्मों का वृत्त दिया गया है। वह सफेद हाथी, वानर, बरगद के रूप में बुद्ध के जन्मों का इतिहास जाना। पिछले 200 वर्षों में सांची बौद्ध स्मारकों के विकास क्रम का हमें खण्डहरों से वर्तमान का पूरा इतिहास संजो कर रखा गया है। वहां के प्रमुख अधिकारी द्वारा हमारा यथायोग्य सम्मान भी किया एवं आवश्यक सुविधाओं के लिये स्टाफ को भी निर्देश दिये यह केवल व्यास जी के प्रतिभा सम्पन्न और सरलता का सम्मान था। वहां से सतधारा गये वहां की मनोरम हरियाली में बौद्धों के सबसे बड़े स्तूप को हमने देखा और व्यास जी ने उत्खनन के दौरान भण्डारण आदि के अवशेषों का अध्ययन कराया।

सांची और सतधारा की यात्रा के दौरान हमें डॉ. नारायण व्यास जी के सरल चरित्र उत्तम व्यवहार और आदम कद ज्ञान ज्योति ने प्रभावित किया। हमने यूरोप में भी बहुत सी यात्रायें की और वहाँ के मोनुमेन्टस का भी अवलोकन किया परन्तु वहां पर इतनी छोटी-छोटी जानकारियां कभी भी गाईड द्वारा नहीं दी गयी।

जो जानकारी व्यास जी द्वारा हमें सरल शब्दों में मिली। हमें लगता है कि हमारे हर यात्रा के दौरान डॉ. नारायण व्यास जैसे सरल और ज्ञात पुरातत्वविद् का साथ मिले ताकि यात्रा के साथ ज्ञानवर्द्धन भी हो सके।

डॉ. नारायण व्यास हमारे पारिवारिक मित्र ही नहीं अति आदरणीय और सम्मानित प्रतिनिधि हैं और उन्हें गुरू का दर्जा भी दिया गया है। गुरू में गुरुत्वाकर्षण होना स्वाभाविक है। जिसका अप्रतीम आनंद हमें भोपाल से सांची यात्रा के दौरान मिला। साथ ही उनके सारगर्भित ज्ञान के भण्डार की एक बूंद हमें प्राप्त हुई। ईश्वर उन्हें लम्बी आयु के साथ अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करे और उनका आशीर्वाद हमें प्राप्त हों।

-सौ. प्राची भावे, मुम्बई

## 'कला समय' संस्था के सम्मानों की घोषणा

कला समय संस्कृति, शिक्षा और समाज सेवा समिति, भोपाल द्वारा वर्ष 2020-21 के कला शिखर सम्मानों की घोषणा की है। इस वर्ष संगीत शिखर सम्मान डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग (हाथरस, उ.प्र.) को एवं लोक शिखर सम्मान डॉ. महेन्द्र भानावत (उदयपुर, राज.) को प्रदान किया जाएगा। उक्त सम्मान संस्था के प्रतिष्ठित समारोह संस्कृति पर्व-4 के दौरान प्रदान किए जाएंगे।

रपट : भँवरलाल श्रीवास (सचिव, कला समय संस्था)

**डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग**
संगीत शिखर सम्मान

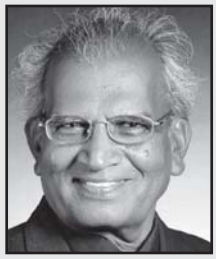

**डॉ. महेन्द्र भानावत**
लोक शिखर सम्मान

आयोजन

( जगत तारन गर्ल्स पी.जी. कॉलेज में आयोजित
अर्न्तराष्ट्रीय वेबिनार )

# कैलिफोर्निया, न्यू यार्क और श्रीलंका तक गूंजा भारतीय संगीत

डॉ. नम्रता देब

जगत तारन गर्लस पी जी कॉलेज, प्रयागराज में भारतीय संगीत की परंपरा एवं उसके बदलते आयाम' विषय पर एक द्वि दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन दिनांक 24 व 25 जुलाई 2020 को किया गया।

आयोजन के प्रथम दिवस के उद्घाटन सत्र में महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर कमला देवी ने कहा की कोरोना काल में भले ही हमें बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, परंतु साथ ही साथ हमें बहुत सारे सुअवसर भी प्राप्त हो रहे हैं जिनमें इस प्रकार के ज्ञानवर्धक ऑनलाइन आयोजन भी शामिल है.संगीत के विषय में बताते हुए उन्होंने सामवेद से संगीत की उत्पत्ति के विषय में कहा तथा संगीत की शक्ति की व्याख्या की. तत्पश्चात् महाविद्यालय की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ0 नम्रता देब ने राग मालकौंस पर आधारित सरस्वती वंदना 'वीणा पाणी शारदे वर दे' प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में प्रोफेसर स्वतंत्र बाला शर्मा, राजा मानसिंह तोमर विश्वविद्यालय की भूतपूर्व कुलपति ने गुरु शिष्य परंपरा पर आए बदलाव पर प्रकाश डाला, उन्होंने बताया कि क्या उचित हुआ है और क्या अनुचित हुआ है. उन्होंने नालंदा, तक्षशिला आदि विश्वविद्यालयों से संस्थागत शिक्षण पद्धति की शुरुआत के विषय में बताया. इसी के अंतर्गत 12 वर्ष में स्नातक, 24 वर्ष में वसु, 36 वर्ष में रुद्र आदि उपाधि देने की परिपाटी के विषय में प्रकाश डाला।

तत्पश्चात् वेबिनार के मुख्य अतिथि श्री इंद्रजीत ग्रोवर निदेशक, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र ने फ्यूजन ना बने कन्फ्यूजन, पर अपने विचार व्यक्त किए उन्होंने कहा कि अपने गुरुओं के मार्गदर्शन के साथ विद्यार्थियों को अपना रास्ता भी अवश्य निकालना चाहिए। कार्यक्रम की अगली कड़ी में प्रोफेसर अशीम मुखर्जी, चेयर पर्सन ऑफ गवर्निंग बॉडी ने कहा की टैगोर अपने आप में एक संपूर्ण सांगीतिक व्यक्तित्व थे। शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, बाउल भटियाली, कर्नाटक से लेकर पंजाब का टप्पा भी उन्होंने प्रयोग किया। केवल भारत ही नहीं पाश्चात्य संगीत का भी प्रयोग अपने संगीत में किया और उन्होंने कहा कि रविन्द्र संगीत, विभिन्न सांगीतिक संस्थाओं में अवश्य सिखाया जाना चाहिए. इसके अतिरिक्त उन्होंने कोरोना काल में कलाकारों की व्यथा को भी सामने रखा और कहा कि कलाकार कार्यक्रम नहीं मिल पाने की वजह से चार-पांच महीनों से काफी कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। इसके साथ ही उद्घाटन सत्र की समाप्ति सुश्री संगीता सहगल जी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

द्वितीय सत्र में प्रोफेसर पंडित प्रेम कुमार मलिक, अध्यक्ष संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ने गुरु-शिष्य परंपरा और आधुनिक शिक्षण पद्धति पर प्रकाश डालते हुए तीव्रा ताल में बंधी राग आसावरी की रचना, मेघमल्हार में ख्याल की रचना तथा भैरवी की रचना बंसिया ना छेड़ो कन्हैया और राग भैरवी में ही आधारित दादरा कहां जाए बसे हो मोहन रसिया प्रस्तुत किया. तत्पश्चात पंडित समीर चटर्जी जो कि न्यूयॉर्क से ऑनलाइन जुड़े, उन्होंने बताया की आधुनिक तकनीक से युवा पीढ़ी अधिक सामंजस्य बिठा पाती है जबकि हमारे विद्वान जिनको संगीत की बारीकियां और वास्तविक जानकारी है वह तकनीक के साथ अधिक तालमेल नहीं बिठा पाते हैं. तत्पश्चात डॉ. चामिला निशांति एडवर्ड जो कि श्रीलंका से जुड़ी थी, उन्होंने बताया की वर्तमान काल में गुरु शिष्य परंपरा के साथ-साथ आधुनिक तकनीक से किस प्रकार शिक्षकों को जुड़ना चाहिए और संगीत शिक्षण की मिश्रण प्रणाली को अपनाना चाहिए। उन्होंने प्रदर्शन के माध्यम से यह सारी प्रक्रिया स्पष्ट की। कार्यक्रम की अध्यक्षता द्वितीय सत्र की अध्यक्ष प्रोफेसर स्वतंत्र बाला शर्मा जी ने किया. इसके पश्चात द्वितीय सत्र के समापन में वेबीनार की संयोजिका डॉ. नंदिनी मुखर्जी ने सभी विद्वानों और उपस्थित दर्शकों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंकिता चतुर्वेदी ने किया।

आयोजन के द्वितीय दिवस अर्थात तृतीय सत्र में महाविद्यालय की प्राचार्या महोदय ने आमंत्रित सभी विद्वतजनों का अभिनंदन किया. तत्पश्चात कार्यक्रम की शुरुआत में महाविद्यालय की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अंकिता चतुर्वेदी ने राग मालकौंस पर आधारित सरस्वती वंदना 'वर दे वीणा वादिनि वर दे प्रस्तुत किया। आपके पश्चात कैलिफोर्निया से जुड़ी डॉक्टर जोइता बोस मंडल जी ने विभिन्न बंदिशों के माध्यम से बताया कि किस प्रकार प्राचीन बंदिशें उच्च कोटि की होते हुये भी उनके स्थाई व अंतरा के बोलों में कोई ताल-मेल नहीं होता था, साथ ही अपने गायन की सुमधुर प्रस्तुति दी. जिनमे 'झननननन बाजे बिछुआ (राग छायानट)' श्याम सुंदर मोरी बईया गहो न', 'अब मोरी बात मान ले पिया' (राग शुद्द सारंग) एवं राग गुर्जरी तोड़ी में सुमधुर तराना प्रस्तुत किया, आपके पश्चात प्रख्यात शास्त्रज्ञ पं. विजय शंकर मिश्र जी ने भारतीय संगीत के बदलते आयाम एवं उसमें आये बदलावों की एवं संगीत कला के विविध पक्षों की विस्तारपूर्वक चर्चा की। तत्पश्चात दिल्ली से जुड़े विश्व विख्यात पखावज वादक पं. रविशंकर उपाध्याय जी ने पखावज के उद्भव से संबन्धित पौराणिक कथाओं की चर्चा की, साथ ही पखावज पर बजाई जाने वाली गणेश स्तुति एवं शिव स्तुति पखावज के माध्यम से प्रस्तुत की.इसी के साथ तृतीय सत्र की समाप्ति पर कार्यक्रम की सह-संयोजिका सुश्री संगीता सहगल जी ने सभी कलाकारों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम के चतुर्थ सत्र की शुरुआत में कैलिफोर्निया से जुड़े प्रसिद्ध तबला वादक श्री ज्योति प्रकाश जी ने गुरू–शिष्य परंपरा पर प्रकाश डालते हुए अपना वक्तव्य रखा. आपके पश्चात बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. रामशंकर जी ने संगीत कला की बारीकियों, विभिन्न बंदिशों की सुंदरता और उसमें आये बदलावों की चर्चा की, एवं राग मेघ पर आधारित 'गरजे घटा कारे' (झपताल), राग यमन में निबद्ध 'ऐसो सुघर चतुरवा बालमवा' (तीनताल) एवं 'जा रे जा तू बदरा दूर' राग मल्हार में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. पं0. प्रेम कुमार मल्लिक जी ने किया. इसके पश्चात कार्यक्रम के समापन में वेबिनार की संयोजिका डॉ0 नंदिनी मुखर्जी ने सभी विद्वानों और उपस्थित दर्शकों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नम्रता देब ने किया।

इस अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार की आयोजक समिति में डॉ. नंदिनी मुखर्जी एसोसिएट प्रोफेसर तबला–संयोजक, सुश्री संगीता सहगल एसोसिएट प्रोफेसर तबला– सह संयोजक, डॉ. नम्रता देब असिस्टेंट प्रोफेसर गायन– समन्वयक तथा डॉक्टर अंकिता चतुर्वेदी असिस्टेंट प्रोफेसर गायन –आयोजन सचिव के रूप में शामिल थे।

लेखिका – डॉ. नम्रता देब

संस्मरण...

# गुरू के गुरू डॉ. नारायण व्यास

**– रमेश दवे**

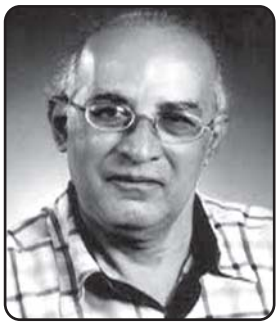

आज से पैंसठ वर्ष पूर्व अर्थात् वर्ष 1955 में एक विधार्थी की तरह नारायण व्यास भी विधार्थी थे। मैं उज्जैन के डाबरीपीठा मोहल्ले के सरकारी स्कूल में प्राथमिक शिक्षक था। नारायण व्यास कक्षा तीन या चार के विधार्थी थे। सभंवतया यदि मेरी स्मृति ठीक है तो उनका घर स्कूल के पास ही था। उस समय उनके गोल चेहरे को देख कर मैं यह तो नहीं कह सकता कि मेरा यह विधार्थी अपने शिक्षक को पार करता हुआ स्वंय ऐसा शिक्षक हो जाएगा कि जिसके स्पर्श से खण्डहर बोल उठें, धरती के नीचे की कला, संस्कृति, सभ्यता का वैभव–पुरातत्व भी जागृत हो उठे, वह एक पुरातत्ववेत्ता को आत्मा का तत्व या दर्शन भी हो उठे।

मैं तो साहित्य का विधार्थी रहा। साहित्यकार या शिक्षाविद् की संज्ञाओं से मुझे अभिहित वो अवश्य दिया गया, लेकिन मैं मानता हूँ कि साहित्यकारों– कलाकारों की श्रेणी में मेरा सभंवतया कोई स्थान होने लायक मैंने काई काम नहीं किया। मैंने उज्जैन के विक्रम विश्व विधालय से अंग्रेजी सहित्य में एम. ए. के बाद, इतिहास में की प्रथम श्रेणी प्रवीण्य के साथ एम. ए. किया। तभी थोड़ी रुचि पुरातत्त्व में पैदा हुई। इतिहास मेरी रूचि का विषय है। मैंने शोध करने की तीन बार कोशिश की और 1857 एवं स्वतंत्रता–संघर्ष के दौरान जो लोग मारे गए और दफनाए गए उनकी कब्र पर लिखे वाक्यों के आधार पर कुछ शोध किए लेकिन साहित्य ने इतिहास को दबा दिया शोध छूट गया। मैंने तो इतिहास छोड़ा, मगर नारायण व्यास ने इतिहास को पकड़ा और जकड़ा। श्रद्धेय स्व. वाकणकर जी के कला भवन संस्थान में मैंने भी पेटिंग की। मेरे पास एक मूर्ति थी जिसे वाकणकर साहब ने जब देखा तो कहा यह मूर्ति तुलसी क्यारे के लिए मेरे संग्रहालय के लिए है और उसे वे ले गए।

डॉ. नारायण व्यास के संदर्भ से हटकर यह प्रसंग मैंने इसलिए दिया कि नारायण ने मेरे अन्दर के इतिहास को अपने अन्दर साकार किया। शिष्य गुरु से इतना ऊपर उठा कि आज वह पुरातत्वेवेत्ता, इतिहासकार एवं साहित्यकार के नाम से अपनी कीर्ति गाथा स्वयं बन चुका है।

क्या पता था कि एक तीसरी–चौथी कथा का विद्यार्थी अपने श्रम, अपनी लगन, अध्ययन और उज्जैन में वाकणकर साहब एवं डॉ. श्याम सुंदर निगम आदि के सम्पर्क से इण्डोलॉजी का मात्र छात्र बनकर न रहेगा बल्कि आशा की पुरा–संस्कृति का आविष्कर्ता हो जाएगा। जब विक्रम विश्वविद्यालय में इण्डोलॉजी का विभाग बना तो प्रथम अध्यक्ष प्राध्यापक डॉ. ज्ञानी थे और विभाग माधव क्लब में लगता था। मेर घनिष्ठ मित्र डॉ. मनोहर दलामा प्रथम बेच के छात्र बने और मुझसे की इण्डोलॉजी में प्रवेश के लिए बहुत कहा। मगर मेरी रुचि अंग्रेजी साहित्य में होने से मैं प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति का छात्र न बन सका। मेरी नारायण व्यास से जब प्रथम भेंट हिन्दी भवन के एक कार्यक्रम में हुई तो मैं उन्हें भूल चुका था, न नाम याद था न चेहरा उन्होंने स्वयं ही बताया कि वे मेरे विद्यार्थी रहे है। जब उन्होंने यह कहकर चरण स्पर्श किए तो मैंने कहा आज आप मेरे लिए गुरु हैं। मैं तो इतिहास में कुछ कर सका, न ही साहित्य और शिक्षा में। तुमने जो कर दिखाया, उस पर मुझे गर्व है। कितने अध्यापक ऐसे है जो किसी आइंस्टीन, हाकिंग या सी.वी.रमण की रचना करें। शायद ये अध्यापकों की रचना नहीं है, ऐसे लोग तो आत्म–शिक्षक, यानी स्वयं के स्वयं ही गुरु होते हैं। नारायण व्यास ने अपने जीवन को पुरातत्व को समर्पित कर जिस सम्पदा का उत्खनन किया वह किसी दिन उनके पुरातत्व की 'नारायण लिपि' बन कर अन्य पुरातत्वेत्ताओं, शोधकर्त्ताओं और इतिहासकारों की प्रेरणा बने, यह कामना करते हुए मैं इतना ही कहूँगा कि डॉ नारायण व्यास पैंसठ साल पूर्व मेरे छात्र थे आज वे मेरे लिए गुरु हैं– इतिहास भी हैं, पुरातत्व भी हैं और मेरी स्मृति को अपने उत्कर्ष से पुनर्जीवित करने वाले एक ऐसे व्यक्तित्व जिन पर मुझे सदैव गर्व रहेगा।

वरिष्ठ साहित्यकार, भोपाल म.प्र.

**विशेष अनुरोध**

कृपया पुस्तक समीक्षा के साथ पुस्तक भेजना अनिवार्य है। अन्यथा प्राप्त समीक्षा पर विचार संभव नहीं होगा।

– संपादक

पुस्तक समीक्षा

# 'रानी की वाव' ( लेखक- डा. नारायण व्यास )

-राजेन्द्र नागदेव

भारत के सहस्त्रों वर्षों के सांस्कृतिक इतिहास की अनेक धरोहरें समय के साथ धरती में आंशिक अथवा पूर्ण रूप से विलुप्त हो गई हैं। चित्रकला, इतिहास, वास्तुकला, मूर्तिकला आदि क्षेत्रों में कितने ही बहुमूल्य कोष कहीं आवृत्त पड़े होंगे इनको प्रकाश में लाना हमारी महती आवश्यकता और कर्तव्य है। ये धरोहरें अक्सर हमारे आसपास ही कहीं होते हुए भी हम उनसे अनभिग्य रहते हैं। भीमबैटका कुछ दशकों पूर्व तक एक नितांत अपरिचित नाम था। स्व. डा. वि. श्री. वाकणकर के अनथक प्रयासों द्वारा आज विश्व के विशालतम शैलचित्र संकुल के रूप में स्थापित हो गया है। उन्हीं के शिष्य डा. नारायण व्यास के परिश्रम का परिणाम है कि गुजरात के अनहिलवाड़ पाटन नामक स्थान पर वास्तुकला, निर्माण इंजीनियरी एवं मूर्तिकला का अद्भुत उदाहरण एक वाव(बावड़ी या वापी) जिसे 'रानी की वाव' कहा जाता है, प्रकाश में आया है। इस वापी का निर्माण आसपास के क्षेत्र में जलापूर्ति हेतु किया गया था ऐसी बावड़ियाँ वैसे तो भारत भर में पाई जाती हैं किंतु इसकी आश्चर्यचकित कर देने वाली विशालता और कलात्मकता से उनकी तुलना नहीं की जा सकती। अस्सी के दशक में पुरातत्व विभाग द्वारा उत्खनन करवा कर मिट्टी की परतों और प्रस्तर खण्डों को हटा कर बावड़ी को निकाला गया था। अब आवश्यकता थी उसके स्थापत्य और वहाँ जड़ी हुईं असंख्य प्रतिमाओं के अध्ययन की। यह दुष्कर कार्य नारायण व्यासजी ने वर्षों तक किया जो उनकी सद्य प्रकाशित पुस्तक 'रानी की वाव' के रूप में प्रकाशित हुआ है।

'रानी की वाव' पुस्तक में उपलब्ध विवरण के अनुसार वापी स्थल का विस्तृत उत्खनन पुरातत्व विभाग की ओर से 1985 ई. के बाद किया गया जिसमें इस वापी की विशालता उद्घाटित हुई। इस वापी के सबसे गहराई वाले स्थान पर सात मंजिलें हैं तथा अनुमानत: एकाध मंजिल नीचे और भी है। वापी के प्रवेश बिंदु से नीचे कूप तक जाने वाला मार्ग समतल नहीं है, अनेक स्तरों में विभाजित है। एक से दूसरे स्तर तक उतरने हेतु सीढ़ियाँ हैं। वापी के दोनों लंबे किनारों को जोड़ते चार सेतु हैं। ये हर मंजिल पर हैं। वापी का निर्माण लगभग सहस्त्र वर्ष पूर्व चालुक्य राजवंश के राजा भीमदेव की पत्नी उदयमति द्वारा संभवत: 1050 ई. के आसपास करवाया गया था। हर मंजिल पर प्रतिमाओं के अखंडित पेनल हैं जो दीवारों की सम्पूर्ण लंबाई तक चले गए हैं। प्रतिमाएँ परस्पर बिल्कुल सटी हुई हैं। प्रतिमाओं की इतनी बड़ी संख्या और घनत्व संभवत: भारत में किसी अन्य स्मारक में नहीं है। प्रतिमाएँ सुघढ हैं और इतनी शताब्दियों बाद भी लगभग अक्षत निकली हैं। वापी के एक सिरे पर वर्तुलाकार कूप है। सरल रेखीय निर्माण के मध्य इसका गोल आकार संपूर्ण संरचना को अलग सौष्ठव प्रदान करता है।

भारत में उस काल में अन्य स्थानों पर किये गए निर्माणों, उनका तुलनात्मक अध्ययन, चालुक्य एवं अन्य राजवशों का इतिहास, वापी निर्माण की पृष्ठभूमि आदि का विशद विवरण इन अध्यायों के अंतर्गत किया गया है- अनहिड़वाल पाटन का ऐतिहासिक भूगोल, चालुक्यों का राजनीतिक इतिहास, भीमदेव चालुक्य तथा उसकी रानी उदयमति का इतिहास, उनके द्वारा निर्मित वास्तुशिल्पों का अध्ययन, रानी की वाव के निर्माण का प्रयोजन, वास्तुयोजना तथा सप्ततल योजना का विवेचन, रानी की वापी में देव विग्रह, उनका वर्गीकरण, शिल्पियों के नामों का अध्ययन, पाटन की समकालीन प्रतिमाओं का तुलनात्मक अध्ययन आदि।

ऐसा प्रतीत होता है लेखक ने अपना अध्ययन विशेष रूप से देव विग्रहों एवं अन्य प्रतिमाओं पर केन्द्रित किया है जो वहाँ सहस्त्रों की संख्या में हैं। इनका गहन अध्ययन कर अत्यंत विस्तार से दस्तावेजीकरण करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। कार्य चुनौतीपूर्ण था क्योंकि प्रतिमाओं के समक्ष बैठने अथवा खड़े रहने तक का स्थान नहीं था। लेखक ने बल्लियों से निर्मित मचानों पर चढ कर खतरनाक स्थितियों में एक-एक प्रतिमा का विस्तार से अध्ययन किया

पुस्तक पर्याप्त मात्रा में छायाचित्रों, रेखांकनों और वापी के तल-विन्यास, ऊर्ध्व-विन्यास आदि नक्षों से सज्जित है जिनसे पाठक के मन में उस स्थान की स्पष्ट छबि निर्मित हो जाती है। पुरातत्व क्षेत्र के अध्येताओं के लिए एक उत्तम पठनीय एवं संग्रहणीय पुस्तक।

पुस्तक : 'रानी की वाव'
लेखक : डॉ. नारायण व्यास
प्रकाशक : 'बुकवेल' 3/79 निरंकारी कालोनी, दिल्ली 110009
प्रकाशक वर्ष : 2020
मूल्य : 795/-

-डी के 2 -166/18, दानिशकुंज कोलार रोड, भोपाल- 462042
मो.: 8989569036

■

# वर्षा ऋतु और संगीत - एक स्पंदन

जीवंतिनी संगीत संस्था द्वारा दिनांक 30 अगस्त, 2020 को पावस ऋतु नामक एक वेबिनार का आयोजन किया गया, विषय था - वर्षा ऋतु और संगीत - एक स्पंदन। यह वेबिनार चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के भूतपूर्व रजिस्ट्रार डॉ. विनोद भूषण बंसल की पावन स्मृति को समर्पित था। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे सम संगीत संस्था और पं. दरगाही मिश्र संगीत अकादमी, गुरुग्राम के प्रेजिडेंट, लेखक, संगीतज्ञ और समीक्षक पंडित विजयशंकर मिश्र। जीवंतिनी द्वारा पंडित विजयशंकर जी को उनके संगीत के क्षेत्र में अमूल्य योगदान के लिए कला-प्राण सम्मान से सम्मानित किया गया। वेबिनार में ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की प्रोफेसर लावण्य कीर्ति सिंह ने संगीत गायन का वर्षा ऋतु से सम्बन्ध पर प्रकाश डाला उन्होंने मल्हार के विभिन्न प्रकारों में सुंदर बंदिशों की प्रस्तुति दी साथ ही झूला व कजरी की सुमधुर प्रस्तुति से आनन्द का संचार किया। एम.डी. यूनिवर्सिटी, रोहतक के भूतपूर्व डीन प्रोफेसर रवि शर्मा ने ध्वनियंकित वाद्य संगीत में मल्हार रागों का क्या स्थान है, इस विषय पर शोध-परक लाभप्रद जानकारी दी। स्वामी विवेकानन्द सुभारती यूनिवर्सिटी, मेरठ की प्रोफेसर भावना ग्रोवर ने वर्षा ऋतु और नृत्य इस पक्ष पर अपने विचार रखे। कजरी व झूला गीत पर मोहक कथक प्रस्तुति देकर उन्होंने अपने वक्तव्य को सार्थक बनाया। पंडित विजयशंकर मिश्र ने वेबिनार के विषय पर जीवन के अनुभवों से युक्त सारगर्भित विचार रखे। वेबिनार का संचालन जीवंतिनी की संस्थापिका डॉ. दीप्ति बंसल ने किया और धन्यवाद ज्ञापन जीवंतिनी की संरक्षिका डॉ. वीणा बंसल ने किया। संगीत के गायन, वादन और नृत्य पक्ष का समावेश लिए यह वेबिनार सफल रहा।

**रपट : प्रो. दीप्ति बंसल**

# प्राचीन नगरपालिका भवन में कला संग्रहालय, वाचनालय का शुभारंभ

**झालावाड़ ।** 16 अगस्त नगरपालिका झालरापाटन द्वारा स्वतन्त्रता दिवस की शाम प्राचीन नगरपालिका भवन में इतिहास संग्रहालय एवं वाचनालय का नवीन शुभारम्भ एक समारोह के तहत किया गया इसका नाम 'पण्डित गिरधर शर्मा 'नवरत्न' वाचनालय' रखा गया। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि झालरापाटन ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष फरीद चौधरी ने कहा कि- यह भवन अपनी ऐतिहासिकता तथा नायाब सामग्री से हमारी नवीन पीढ़ी के ज्ञान में वृद्धि करेगा। समारोह के अध्यक्ष झालरापाटन नगरपालिकाध्यक्ष अनिल पोरवाल ने कहा कि उन्होंने अपने कार्यकाल में जनसेवा कार्यो के साथ ऐतिहासिक धरोहरों के जीर्णोद्धार करवाकर शहर को नए आयाम दिये है अत: ऐसी धरोहर की संजोना हर एक नागरिक का कर्तव्य है। विशिष्ठ अतिथि वरिष्ठ पत्रकार नलिन लुहाड़िया ने कहा कि - प्राचीन पालिका भवन के संग्रहालय एवं वाचनालय से जिले वासियों को अपने इतिहास और संस्कृति की काफी जानकारी मिलेगी उन्होंने कहा कि अब स्थानीयजनों का भी यह कर्तव्य है कि वे अपने घरों में उपेक्षित रखी पुरानी पुस्तकों एवं इतिहास महत्व की सामग्री को यहां लाकर भेंट करें। विशिष्ठ अतिथि व्यापार संघ अध्यक्ष- मुरली मनोहर प्रजापति ने संग्रहालय एवं वाचनालय को जिले की सांस्कृतिक गरिमा का प्रमुख आधार बताया। इस अवसर पर उन्होंने बड़ोदरा के षष्ठपीठाधिश्वर द्वारकेशलाल जी महाराज के आशीर्वाद अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। मुख्य वक्ता इतिहासकार ललित शर्मा ने कहा कि - यह एक ऐसा प्राचीन भवन है जिसका भारत की प्रथम नगरपालिका के रूप में कर्नल जेम्स टाड़ ने 1821 ई. में इसका अवलोकन कर इसे देश देशान्तर में प्रसिद्ध किया था उन्होंने विस्तार पूर्वक इस भवन की ऐतिहासिक जानकारी दी। नगरपालिका के अधिशासी अभियन्ता महावीर सिंह सिसौदिया ने कहा कि- अब इस संग्रहालय एवं वाचनालय का संचालन स्थानीय जागरूक नागरिकों एवं नगरपालिका के समन्वय से होना आवश्यक है। इस अवसर पर अतिथियों ने संग्रहालय एवं वाचनालय की संयोजना बनाने हेतु ललित शर्मा का साफा बांधकर एवं पुष्पहार पहनाकर सम्मान किया। इस अवसर पर उन्होंने भवन में इतिहास, संस्कृति की अनेक पुस्तकें, पाण्डुलिपियां एवं 11 देशों की मुद्राएं भेंट की।

रपट : ललित शर्मा इतिहासकार, झालावाड़

# सुमन चौरे, रश्मि रामानी, बंशीलाल परमार और अशोक मनवानी को सप्तपर्णी सम्मान

- प्रेरणा पत्रिका के संपादक श्री अरूण तिवारी द्वारा अपनी जीवन संगिनी स्व. उर्मिला तिवारी की स्मृति में सम्मेलन के सहयोग से स्थापित सप्तपर्णी सम्मान इस वर्ष
- लोकभाषा/लोकसाहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ सुमन चौरे को,
- अन्य भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद के लिए डॉ रश्मि रामानी को
- साहित्य को समर्पित रूपांकन के लिए श्री बंशीलाल परमार को और
- साहित्यिक पत्रकारिता के लिए श्री अशोक मनवानी को प्रदान किए जाएंगे.
- इन सभी रचनाकारों को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं.

टीप: स्थितियां सामान्य होने पर वार्षिक अलंकरण समारोह के आयोजन पर विचार किया जाएगा।

रपट : मणि मोहन

समवेत

## प्रियंका देवपुरा को पी.एच.डी. उपाधि

विश्वविद्यालय, उदयपुर के गृहविज्ञान विभाग के अन्तर्गत, श्री नाथद्वारा निवासी प्रियंका देवपुरा को पी एच डी उपाधि प्रदान की गई। देवपुरा को यह उपाधि उनके शोध 'राजस्थान के चयनित क्षेत्रों में दृष्टिहीन बालको का व्यक्तित्व विकास एवम् स्वयं की चुनौतियां व उनके अभिभावकों की चुनौतियों का एक अध्ययन' विषय पर किए शोध के लिए पी एच डी उपाधि प्रदान की गई। यह शोध कार्य बी.एन विश्वविद्यलय,

उदयपुर के गृहविज्ञान विभाग की सह आचार्य एवम् विभाग प्रमुख डॉ. शिल्पा राठौड़ के निर्देशन में पूर्ण किया गया। ज्ञातव्य है कि सुश्री प्रियंका देवपुरा,देश के ख्यातनाम साहित्यकार श्री नाथद्वारा निवासी श्री भगवती प्रसाद देवपुरा की सुपोत्री एवम् श्री श्याम देवपुरा साहित्य मंडल की सुपुत्री है। इन्हे पूर्व में में स्नातकोत्तर परीक्षा में भी स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ था

रपट : मोहनलाल सुखाड़िया, नाथद्वारा (राज.)

## कथाकार युगेश शर्मा का कोरोना कथा संग्रह प्रकाशित होगा

भोपाल। वरिष्ठ कथाकार, समीक्षक एवं पत्रकार युगेश शर्मा ने कोरोना महामारी और लॉकडाउन की पृष्ठभूमि पर 72 कोरोना कथाएँ लिखी हैं। इन कोरोना कथाओं में उन प्रभावों को उकेरा गया है, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मार्च 2020 के बाद कोरोना और लॉकडाउन के कारण उभरकर सामने आये हैं। प्रवासी मजदूरों से संबंधित मार्मिक कथाएँ भी इनमें हैं। इनके अलावा महासंकट के समय निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए जो काली करतूतें कोरोना काल में सामने आई हैं, उनको भी कोरोना कथाओं में कलाकार ने शामिल किया है। कोरोना काल में मन के रिश्तों ने संकट ग्रस्त व्यक्तियों और परिवारों की मदद कर मानवता के जो आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, वे भी कथाओं के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। ये कोरोना कथाएँ 'जाग उठे मन के रिश्ते' नाम से एक संग्रह के रूप में प्रकाशित करने पर विचार हो रहा है। उल्लेखनीय है कि श्री शर्मा की अब तक 11 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें 9 मौलिक और दो संपादित कृतियाँ हैं। आपके कहानी संग्रह 'आखिरी कड़कनाथ' और 'अलसुबह घर लौटती लड़की' साहित्य-जगत में चर्चा में रहे हैं। वर्तमान में आप मासिक 'शिखरवार्ता' सहित तीन पत्रिकाओं में स्तंभ लेखन कर रहे हैं।

रपट : संपादक

## पुनर्नवा पुरस्कार 2020

युवा सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने हेतु भारतीय प्रशासनीक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री पी.पी. अग्रवाल के.बी.आर.एम.पी. ट्रस्ट भोपाल द्वारा म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सहयोग से स्थापित माधुरी देवी अग्रवाल स्मृति 'पुनर्नवा पुरस्कार 2020' पर निर्णायक मण्डल ने अपना निर्णय दे दिया है ये पुरस्कार :

- कविता विधा में शैफाली शर्मा छिंदवाड़ा और मानस भारद्वाज भोपाल
- कहानी उपन्यास विधा में उदिता मिश्रा भोपाल।
- गीत-ग़ज़ल विधा में भाऊराव महंत, बालाघाट।
- कथेतर गद्य विधाओं में शाम्भवी शुक्ला, सागर और भूपेन्द्र हरदेनिया, सबलगढ़ को प्रदान किये जायेंगे।

## काका हाथरसी जयंती 18 सितंबर पर विशेष

हास्य ऋषि काका हाथरसी ने न केवल हिंदी कवि सम्मेलन के मंच पर हास्य को स्थापित किया बल्कि उसको बहुत ऊँचा स्थान भी दिलाया। लोकप्रियता के शिखर पुरुष काका ने अपनी तुकांत एवं अतुकांत कविताओं के साथ अपने हास्य में जीवन की व्यापक विसंगतियों को समेटा। काकी के माध्यम से उन्होंने नारी को गरिमा प्रदान की 'नाम बड़े और दर्शन छोटे' या 'लिंग भेद' जैसी कविताएं उनकी गहरी निरीक्षण क्षमता और खोजपूर्ण दृष्टि की परिचायक है। जन्म 18 सितम्बर 1906 को हाथरस में काका हाथरसी मूल नाम प्रभुलाल गर्ग था काका ने सन् 1935 में संगीत मासिक प्रकाशित की योजना बनाई जो आज भी प्रकाशित हो रही है। 18 सितम्बर 1995 को हमसे बिदा हो गये उनका बहुत बड़ा रचना संसार है उनका लेखन हमेशा हमेशा प्रशंसकों के मन में उनकी स्मृतियाँ ताजा रहेगी।


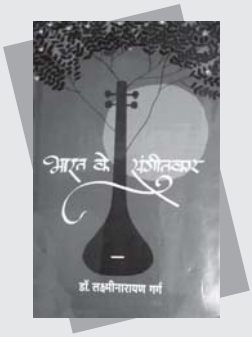


**भारत के संगीतकार**

**( 857 संगीतकारों के जीवन चरित्र )**

लेखक : **डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग**

प्रकाशक : संगीत कार्यालय हाथरस-204101 (उ.प्र.)

प्रथम संस्करण : 2013, मूल्य : 2500/-

छायाकार–जगदीश कौशल

# समय की धरोहर

## भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ाँ

**जन्म : 21 मार्च, 1916** **निधन : 21 अगस्त, 2006**

वाराणसी के विश्वविख्यात शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ाँ साहब ने शहनाई जैसे लोक वाद्य यंत्र को न केवल भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रतिष्ठित किया बल्कि उसे विश्व स्तर पर शिखर तक पहुंचाने व सम्मानजनक स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होने विश्व के लगभग 100 से अधिक देशों में शहनाई वादन किया। विश्व संगीत की जानी–मानी हस्तियों में स्थान प्राप्त कर उन्होंने अपने साथ शहनाई का नाम भी रोशन किया। विश्व संगीत मंच पर देश का गौरव बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जगदीश कौशल ने वर्ष 1968 में विंध्य संगीत समाज रीवा द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संगीत समारोह के अवसर पर उनका साक्षात्कार किया और अनेक कलात्मक फोटो क्लिक किए थे।

# संगीत के दो नये सितारे - उज्जवल और उत्कर्ष

बनारस घराने के महान संगीतकारों तबला सम्राट पं. रामशरण मिश्र, संगीत नायक पं. दरगाही मिश्र, खलीफा पं. विक्कू महाराज और तबला शिरोमणि पं. गामा महाराज जी की परम्परा में, श्री उदय शंकर मिश्र के दोनों पुत्र उज्जवल मिश्र और उत्कर्ष शंकर मिश्र इस परम्परा को आगे बढ़ाने में जुटे हैं। श्री उदय शंकर मिश्र राष्ट्रीय ख्याति के तबलावादक हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत विभाग से जुड़े उदयशंकर मिश्र देश के प्रतिष्ठित संगीतकारों के साथ भिन्न-भिन्न मंचों पर तबला वादन कर रहे हैं। किंतु उनके दोनों पुत्र उज्जवल और उत्कर्ष क्रमश: गायन और कथक नृत्य के क्षेत्र में अपना स्थान बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उज्जवल दिल्ली विश्वविद्यालय में स्नातक (अंतिम वर्ष) के छात्र हैं। और, अब तक देश के भिन्न-भिन्न भागों में अपने गायन की प्रस्तुतियां दे चुके हैं। सम (सोसायटी फॉर एक्शन थ्रू म्यूजिक), संगीत नायक पं. दरगाही मिश्र संगीत अकादमी, संस्कार भारती के विभिन्न केंद्रों, लोक कला मंच और स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय (मेरठ) आदि द्वारा आयोजित कार्यक्रमों को अपने लिये विशेष महत्वपूर्ण मानते हैं। उज्जवल कहते हैं एक अद्‌भुत संमद्ध और प्रतिष्ठित परंपरा से जुड़े होने का अपना मानसिक दबाव भी होता है। सदैव यह भय लगा रहता है कि मेरी किसी चूक मेरी किसी गलती से मेरी परंपरा के स्वनामधन्य संगीतकारों की प्रतिष्ठा पर कहीं कोई आँच न आ जाये। उज्जवल कहते हैं कि मेरे घर और घराने में गायन की भी बहुत समृद्ध परंपरा रही है। मेरे दादाजी के दादाजी संगीत नायक पं. दरगाही मिश्र महान संगीतकार थे। विद्याधरी देवी और जद्‌दन बाई जैसी महान गायिकायें उनकी शिष्यायें थीं। उनकी प्रशिष्य परंपरा में ठुमरी साम्राज्ञी सिद्धेश्वरी देवी और विदुषी गिरिजा देवी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। उज्जवल शास्त्रीय, उपशास्त्रीय और सुगम संगीत तीनों के गायन में ही रूचि ले रहे हैं। और अपने उज्जवल भविष्य का परिचय दे रहे हैं।

उज्जवल शंकर मिश्र ने अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय मंडल (मिरज) से संगीत विशारद गायन में, प्रयाग संगीत समिति (प्रयागराज) से प्रभाकर तबला में, और दिल्ली विश्वविद्यालय से तीन वर्षों का डिप्लोमा कोर्स हारमोनियम में किया है। उत्कर्ष शंकर मिश्र कथक नृत्य के नवोदित सितारे है। कथक नृत्य की आरंभिक शिक्षा इन्होंने अपने पिता श्री उदशंकर मिश्र से प्राप्त करने के बाद विशेष शिक्षा लखनऊ घराने की सुविख्यात नर्त्तकी गुरू रक्षा सिंह डेविड से प्राप्त कर रहे हैं। 11 वीं कक्षा के छात्र उत्कर्ष अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय मंडल (मिरज) के परीक्षार्थी हैं। उच्च शिक्षा के लिये सी.सी.आर.टी. द्वारा छात्रवृत्ति प्राप्त कर चुके उत्कर्ष अब तक आर्ट ऑफ लिविंग के झंकृति उत्सव, इंडिया हैवीटाट सेंटर के ऋतु श्रृंगार (निर्देशन रक्षा सिंह), प्रेस जोन, कला विकास परिषद (गडग), विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय (मेरठ), दिल्ली दूरदर्शन, दूरदर्शन उर्दू मातृकला मंदिर एवं साक्षी द्वारा आयोजित जश्न-ए-हिन्द आदि कार्यक्रमों में अपनी सुंदर प्रस्तुतियां देकर कई पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। उत्कर्ष को समय-समय पर अपने चाचा, विख्यात कथक नृतक गुरू अभयशंकर मिश्र का भी मार्गदर्शन मिलता रहता है। उत्कर्ष कहते हैं कि - 'यूं तो कथक नृत्य के कई घराने हैं। और हर घराने की अपनी-अपनी विशेषतायें हैं। लेकिन मैं अपने नृत्य को एक ऐसे गुलदस्ते के रूप में सजाकर प्रस्तुत करने की कोशिश करता हूँ, जिसमें हर घराने की विशेषताओं की खुशबू मिले। जिसमें लखनऊ घराने का खूबसूरत भावाभिनय भी हो, जयपुर घराने की तेजी, तैयारी भी हो। बनारस घराने की सात्विकता और घुंघरू के बोलों की प्रधानता भी हो और रायगढ़ घराने की प्रकृति चित्रणवाली रचनायें भी। क्योंकि, आज किसी भी कार्यक्रम, किसी भी समारोह में अलग-अलग पसंद और मानसिकता वाले लोग आते हैं। और, हमारी कोशिश सबको खुश और संतुष्ट करने की होती है। इसलिये हमें अपनी प्रस्तुतियों में बोलों की विविधता रखने की आवश्यकता महसूस होती है। किसी को सुंदर सम्मोहक अभिनय पसंद आता है तो किसी को तेजी, तैयारी और भ्रमरी की बहुलता। इसलिए, हम जैसे नये लोगों को अपने नृत्य में तरह-तरह की विशेषताओं को संजोना पड़ता है।

-भँवरलाल श्रीवास

**अनुरोध : उत्तराधिकार के तहत गुरू-शिष्य परम्परा में साधनारत विभिन्न शैलियों के सृजनधर्मी युवा कलाकारों को समर्पित स्तंभ से जुड़ें...**

**-संपादक**

# छाया-छबियाँ

## डॉ. नारायण व्यास का कृतित्व और व्यक्तित्व

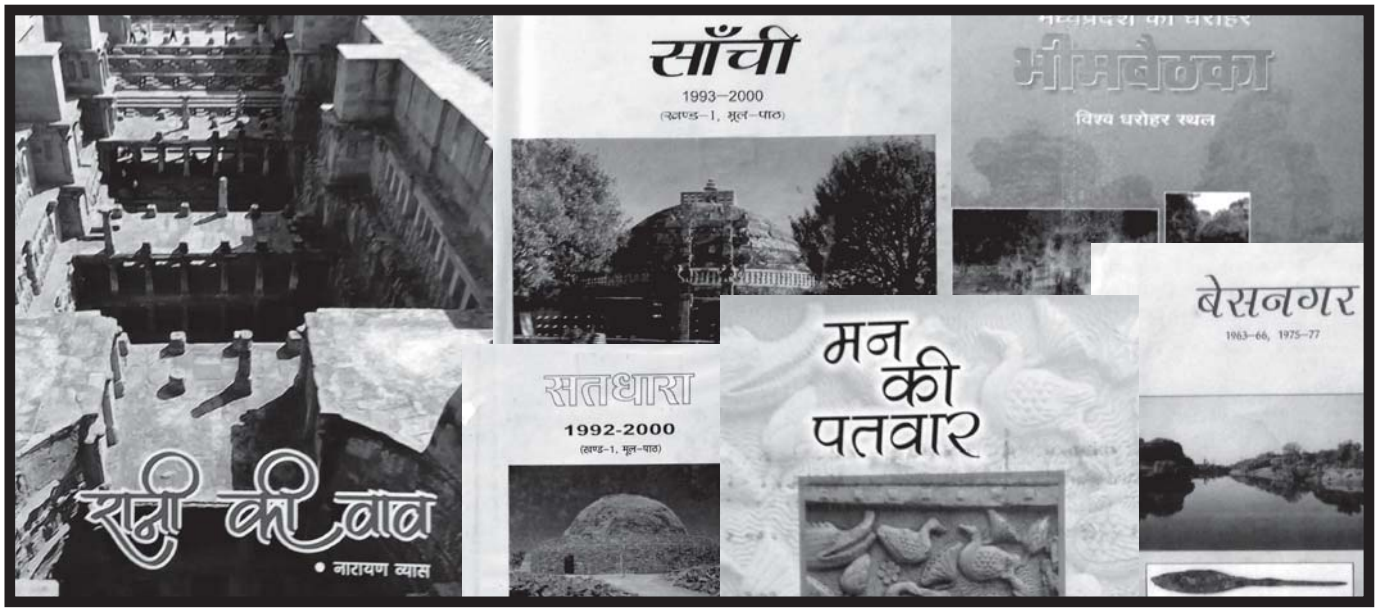

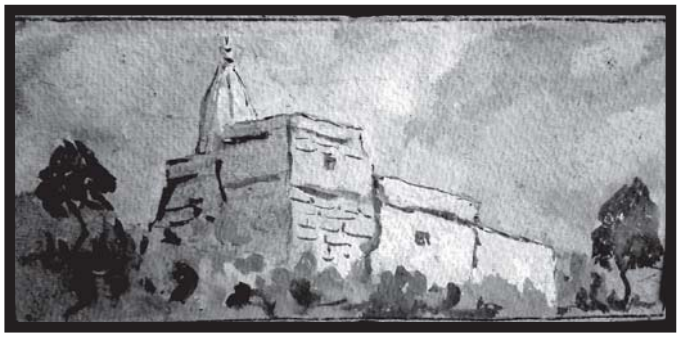

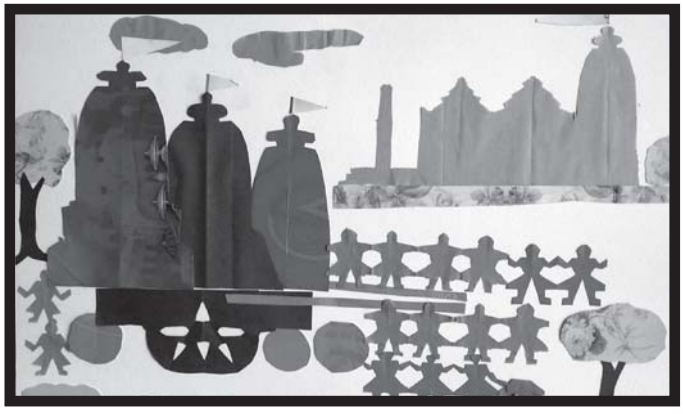

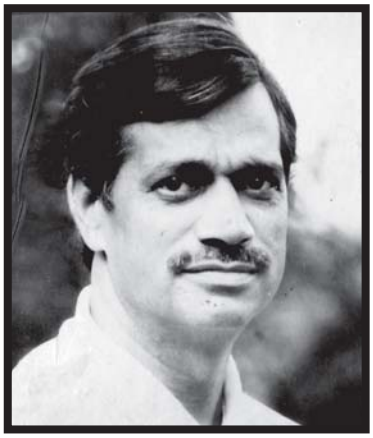

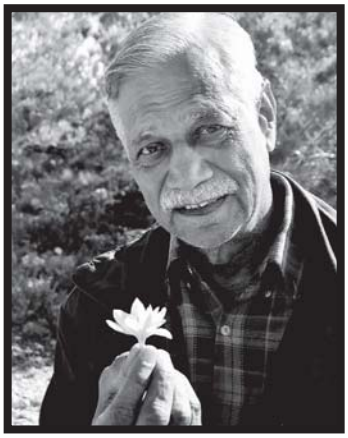

आपके पत्र

# पत्रिका के बहाने

प्रिय श्री श्रीवास जी,

नमस्कार !

'कला समय' का अप्रैल-जुलाई 2020 का संयुक्तांक मिला। कोरोना और लॉक डाउन के कारण उत्पन्न बाधाओं, कठिनाइयों और असुविधाओं से जूझते हुए आपने 'कला समय' का समृद्ध संयुक्तांक प्रकाशित कर सचमुच बड़ा काम कर दिखाया है। इस श्रेष्ठ कार्य के लिए 'कला समय' परिवार और उसके लेखक समुदाय को हार्दिक बधाई। आप एक संकल्पशील और मेहनती व्यक्ति हैं। आपकी विनम्रता और मिलन सारिता 'कला समय' रूपी बगिया को हरियाली रखने में बड़ी मदद कर रही है। प्रसन्नता की बात है कि पत्रिका शनै: शनै: कला के विविध अंगों को शिद्दत के साथ स्पर्श कर रही है। फलत: कला-जगत की ऐसी प्रणम्य विभूतियों से आप पाठकों को परिचित करा रहे हैं, जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में अपरिचय का विन्ध्याचल खड़ा था। इस उपक्रम के लिए आपको और पत्रिका के लेखक-परिवार को बधाई। इस क्रम को जारी रखिये।

पर्यावरण के संदेश को अंक के आवरण पृष्ठ पर बहुत सुविचारित रूप में प्रस्तुत किया गया है। चित्रांकन में जो ध्वनियाँ हैं, वे कला के विविध रूपों को प्रस्तुत कर रही है। चित्रकार को भी बधाई।

महान कला साधक डॉ. अरविन्द विष्णु जोशी पर एकाग्र इस अंक ने प्रणम्य कला विभूति के व्यक्तित्व और उनके उत्कृष्ट कृतित्व के प्राय: सभी पक्षों से परिचित कराया है। आप जोशी जी के बारे में इतनी विपुल सामग्री इस कोरोना काल में जुटा सके, यह बड़ी बात है। जोशी जी के परिवार, उनके प्रशंसकों और शिष्य वर्ग के प्रति आदर प्रगट करते हुए कहना चाहूँगा कि उन सबके सहयोग से प्रकाशित इस अंक ने पत्रिका को ऊंचाई दी है। पुरातत्ववेत्ता डॉ. नारायण व्यास पर एकाग्र अगस्त-सितम्बर अंक के लिए शुभकामनाएं।

**युगेश शर्मा**, 11 सौम्या एन्क्लेव एक्सटेंशन, सियाराम कॉलोनी, चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल- 462016

---

कला समय का सद्य प्रकाशित अंक पढ़ा। स्वनामधन्य संपादक जी का परिश्रम वरेण्य है। रागमाला के उद्भव और विकास पर केन्द्रित लेख उपाध्याय जी के विराट चिन्तन का स्पष्ट प्रमाण है। डॉ. अरविन्द विष्णु जी जोशी की कला सधना के विविध आयामों की सूक्ष्मता पर केन्द्रित यह अंक हर उस लेखक, पाठक के लिये आवश्यक है जिसे कला और साहित्य से सच्चा लगाव है। दुर्लभ चित्रों के प्रकाशन से अंक को चार चांद लग गये।

बस्तर के आदिवासी जन के आदिम संगीत वाद्यों की संगीतिका का परिचय बहुत महत्वपूर्ण धरोहर है। तो महाराष्ट्र की कीर्तन परम्परा का वैशिष्ट्य अनुपम है। सिने पक्ष का आलेख फिल्म जगत के इतिहास की महान पूंजी है जिसे आधार बनाकर थीसीस की जा सकती है। लोकगीतों के विविध संगीतमय पक्ष और रविन्द्रनाथ टैगोर का विश्व चिन्तन पत्रिका के सुन्दर पक्ष है। यह सब श्रीवास जी के प्रति प्रणम्य की भावना के बिन्दु हैं कि सम्पादक का समर्पण किस स्तर का हो सकता है। संक्रमित कोरोना काल में कला के स्वरूप पर चिंतनीय लेख है। अत: मैं हमारे वरिष्ठ गुरूभाई श्रद्धेय व्यास दादा पर केन्द्रित आगामी अंक एक सुखद समाचार है।

**ललित शर्मा**, इतिहासकार, जैकी पैलेस 13, मंगलपुरा, झालावाड़ (राज.)

---

'कला समय' का अप्रैल-जुलाई (संयुक्तांक) प्राप्त हुआ। लोक शैली के चित्र से सज्जित आवरण ही प्रथमदृष्टया अंक पढ़ने का मोह जगा गया। संपादकीय में ध्रुपद की महनीय परम्परा और उसके कलाकारों पर पढ़ कर आनंद सृष्टि हुई खासकर समकाल के संगीतज्ञों का उल्लेख संपादकीय दृष्टि की उत्कृष्टता प्रस्तुत हुई है जो पाठक के लिए बड़े तोष का विषय है। वरिष्ठ कला लेखक श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय जी की गहन और विश्लिष्ट दृष्टि से इस अंक का रागमाला कैद्रित लेख अनेक नवीन तथ्यों की अवलिका प्रस्तुत करने वाला है। इस लेख से दीर्घ परम्पराओं का ज्ञान तो हुआ ही इसमें वे सभी पुस्तकें भी समेकित हुई हैं जिनका , संगीत के क्षेत्र में महान योगदान रहा है। इस सारगर्भित लेख के लिए श्री नर्मदा प्रसाद जी को हार्दिक बधाई। अंक की सामग्री सदा की भाँति संग्रहणीय है। संगीतज्ञ श्रीमती अर्चना जोशी जी के साक्षात्कार द्वारा उनके संगीत जीवन का आत्मीय परिचय हुआ । डॉ अरविंद विष्णु जोशी की यादों पर अपने गोद में वीणा के एकाग्र यह अंक विपुल और स्तरीय सामग्री लेकर आया है । ठाकुर रवीन्द्रनाथ के अवदान पर प्रो. गुणवंत माधवलाल का लेख बस्तर के आदिम वाद्ययंत्रों का परिचय के साथ श्री मणि मोहन की लघुकथाओं की सुंदर प्रस्तुति अंक की शोभा है। कृष्ण बक्षी जी के गीतों,डॉ. शुभ्रता मिश्रा जी की कविताओं और दौलतराम प्रजापति जी की ग़ज़लों ने साहित्यिक अस्वाद से सम्पन्न किया। दौलत जी की ग़ज़लो का मिजाज़ पाठक को आड़ोलित करने की हद तक ले जाने वाला है बेहद उम्दा। विनय उपाध्याय जी ने वर्तमान की विषम परिस्थितियों में छवियों का छंद रखा। इससे कला की दुनिया को गहरी आश्वस्तियाँ मिली । संजय महाजन जी का शिल्प तथा उसकी प्रस्तुति प्रशंसनीय। एकाग्र अंक द्वारा श्री अरविंद जी के जीवन के अनेक पहलुओं का ज्ञान हुआ,इस हेतु सभी लेखकों का आभार खासतौर से विशेषांक की सभी विशेषताओं को समेटे यह अंक मेरे जैसे पाठकों के लिए रस-वर्षा जैसा अनुभव दे रहा है। बहुत धन्यवाद सहित 'कला समय' के लिए मेरी अनेक स्वस्तिकामनाएँ।

**- चेतन औदिच्य**, वरिष्ठ चित्रकार, कवि, लेखक उदयपुर (राज.)

जब देश में थी दीवाली, वो खेल रहे थे होली, जब हम बैठे थे घरों में, वो झेल रहे थे गोली।

रानी लक्ष्मीबाई | चन्द्रशेखर आज़ाद | वीर सुरेन्द्र साए | भीमा नायक | शंकर शाह | रघुनाथ शाह | बरकतउल्ला भोपाली | रानी अवंतीबाई | टंट्या भील | तात्या टोपे | राणा बख्तावर सिंह | सीताराम कँवर | रघुनाथ सिंह मण्डलोई

# स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

## आपका साथ, मध्यप्रदेश का विकास

**संबल योजना –**
गरीबों को फिर मिला संबल। एक अप्रैल से 31 जुलाई 2020 तक योजना के विभिन्न घटकों में 25 हजार से अधिक हितग्राहियों को 268 करोड़ रुपये से अधिक की सहायता स्वीकृत।

**पथ व्यवसायी योजना –**
आत्मनिर्भर भारत के तहत प्रदेश के शहरी एवं ग्रामीण पथ-विक्रेताओं को कार्यशील पूंजी का ब्याज मुक्त ऋण।

**श्रम सिद्धि अभियान –**
प्रदेश के इतिहास का सबसे बड़ा रोज़गार अभियान। 61 लाख 34 हजार 426 श्रमिकों का नियोजन। 3536 करोड़ रुपये से अधिक की राशि का भुगतान।

**श्रमिक आयोग का गठन –**
श्रमिकों को बेहतर जीवन दिलाने के एकाग्र प्रयासों की दिशा में अहम कदम।

**रोज़गार सेतु पोर्टल –**
रोज़गार के अवसरों का नया आसमान। 13 लाख 10 हजार से अधिक श्रमिक और 31 हजार से अधिक नियोक्ता पंजीकृत। 38,900 से अधिक लोगों को रोज़गार मिला।

**श्रम कानूनों में संशोधन –**
क्रांतिकारी संशोधनों से श्रमिकों के हितों का संरक्षण एवं औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन।

**पंच परमेश्वर योजना पुन: प्रारंभ –**
52 हजार से अधिक गांवों के विकास के लिये 14वें वित्त आयोग के 1555 करोड़ रुपये तथा 15वें वित्त आयोग के 996 करोड़ रुपये जारी।

**गेहूँ उपार्जन में सबसे आगे –**
एक करोड़ 29 लाख 42 हजार मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन। देश में प्रथम स्थान।

**प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना –**
16 लाख किसानों को 3100 करोड़ रुपये की फसल बीमा राशि का एक क्लिक में भुगतान।

**मंडी अधिनियम में सुधार –**
किसानों को घर बैठे देश की किसी भी मंडी में फसल बेचने की सुविधा। किसान एवं व्यापारी दोनों के लाभ की पहल।

**चंबल प्रोग्रेस-वे –**
चंबल क्षेत्र को मिली विकास की अभूतपूर्व सौगात।

**बिजली बिलों में राहत –**
97 लाख बिजली उपभोक्ताओं को 623 करोड़ रुपये से अधिक की राहत।

**किल कोरोना अभियान –**
कोरोना संक्रमण की चेन तोड़ने के लिए 15 दिन का डोर-टू-डोर सर्वे अभियान।

**उद्योगों को रियायतें –**
कोरोना संक्रमण के दृष्टिगत उद्योग संवर्धन नीति एवं निवेश प्रोत्साहन योजना में लाभ ले रही औद्योगिक इकाइयों को संचालन तथा भुगतान संबंधी रियायतें।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

आत्मनिर्भर व्यक्ति सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए सभी व्यवस्थायें स्वयं कर लेता है। आत्मनिर्भरता ही उन्नति का आधार है। हम प्रदेश के प्रत्येक नागरिक को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं।
- शिवराज सिंह चौहान

आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश से आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ते कदम

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2020

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D-18014/2020

जान जोखिम में डालकर तीन बार मौत के मुँह से बचे... अंततः 'रानी की वाव' ( बावड़ी ) गुजरात पर आखिर अपना संकल्प पूर्ण करने में सफलता प्राप्त की।

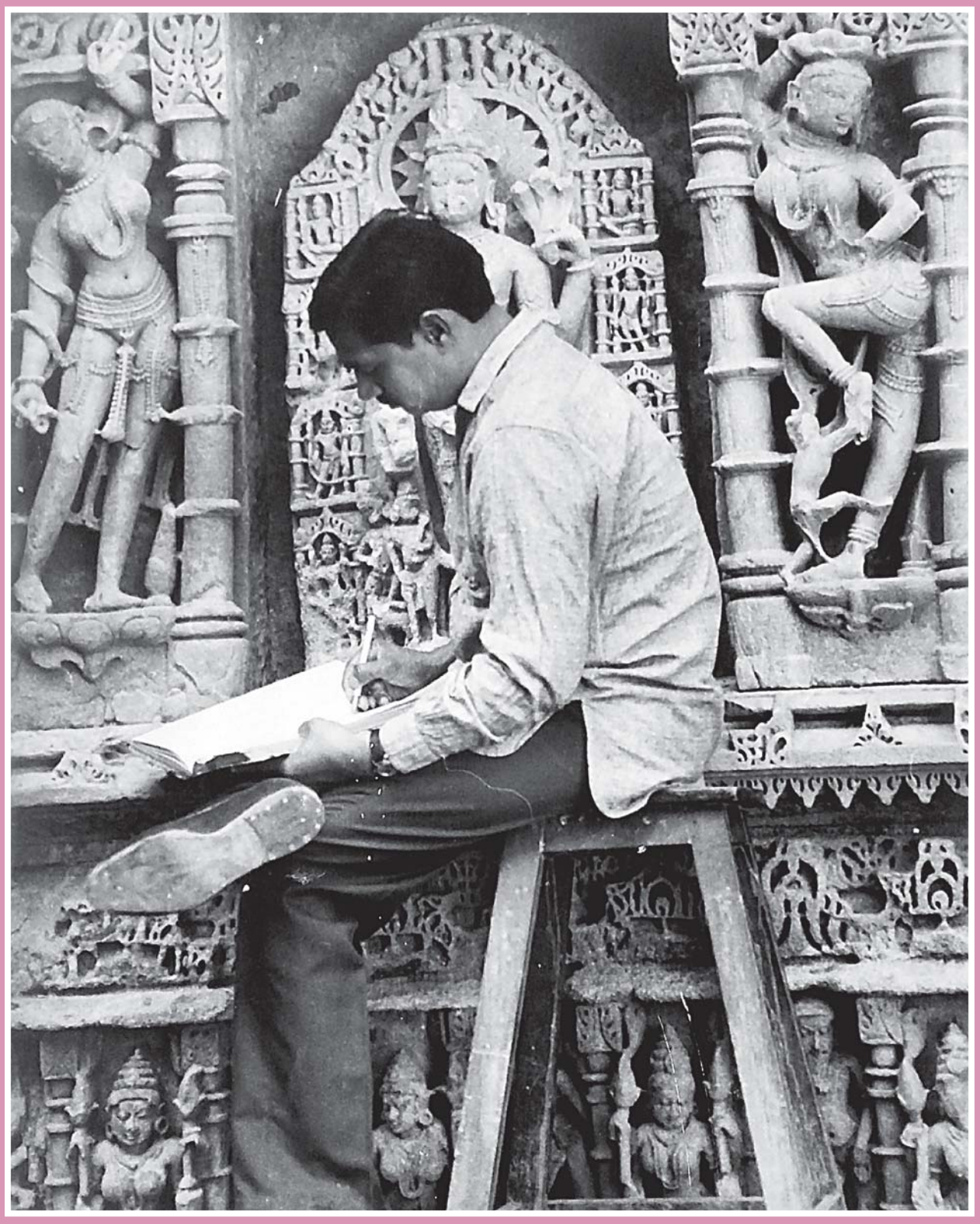

डॉ. नारायण व्यास ( डी.लिट् )

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016 से प्रकाशित। संपादक-भँवरलाल श्रीवास